कुरआन-सार
विनोबा

कुर्आन-सार

विनोबा

सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी

QURAN-SAR
(HINDI)

•

Vinoba

•

Price : Rs. 15.00

क़ुरआन-सार

लेखक
विनोबा

•

संस्करण : सातवाँ
प्रतियाँ : **३,०००**
कुल प्रतियाँ : **३०,०००**
अक्टूबर, १९९३

•

प्रकाशक
सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन,
राजघाट, वाराणसी-२२१००१

•

मुद्रक
खण्डेलवाल आफसेट्स
मानमन्दिर, वाराणसी

मूल्य : पन्द्रह रुपये

प्रकाशकीय

"इसलाम की आध्यात्मिक शिक्षा क्या है, वह चुन-चुनकर हमने रख दी है सब धर्मवालों के सामने और कुल दुनिया के सामने। ...."

यह है आचार्य विनोबा भावे का कथन 'रुहुल्-कुर्आन' प्रस्तुत करते हुए। उसीका यह हिन्दी अनुवाद है–'कुर्आन-सार'। अनुवादक हैं श्री अच्युतराव देशपाण्डे।

कुर्आन-शरीफ की कुल ६२३७ आयतों (वचनों) में से १०६५ आयतें 'कुर्आन-सार' में उद्धृत की गयी हैं। ग्रन्थ ९ खण्डों, ३० अध्यायों, ९० प्रकरणों और ४०० परिच्छेदों में विभाजित है। कौन आयत किस सूरह् (प्रकरण) की है, उसका संदर्भ यथास्थान दे दिया गया है। परिच्छेद सं० १६८, २०४ और २८६ के अतिरिक्त सभी आयतें क्रम के अनुसार ही ली गयी हैं।

इस ग्रन्थ में 'कुर्आन-शरीफ' से निम्नलिखित सूरह् (प्रकरण) संपूर्ण लिये गये हैं :

१, ९२, ९३, ९४, ९६, ९९, १०१, १०२, १०३, १०४, १०७, ११२, ११३, ११४।

निम्नलिखित आयतें (वचन) पूर्ण एक रुकुअ (पैरा) की हैं।

ऊपर के अंक आयतों के और नीचे के सूरह् के हैं :

$\frac{२६१\text{-}२६६}{२}$, $\frac{२८४\text{-}२८६}{२}$, $\frac{२३\text{-}३९}{१७}$, $\frac{३५\text{-}४०}{२४}$, $\frac{७६\text{-}८२}{२८}$, $\frac{१२\text{-}१९}{३१}$, $\frac{९\text{-}११}{६३}$

'रूहुल्-कुर्आन' के भिन्न-भिन्न संस्करणों की अब तक की स्थिति इस प्रकार है :

'रूहुल्-कुर्आन' मूल अरबी–अरबी लिपि,

'रूहुल्-कुर्आन' उर्दू–उर्दू-लिपि,

रुहुल्-कुर्आन' उर्दू–नागरी लिपि,

'कुर्आन-सार'–हिन्दी; मराठी; गुजराती; बंगला (बंगला लिपि में मूल अरबी सहित);

'दि एसेंस ऑफ् दि कुर्आन'–अंग्रेजी।

नागरी लिपि में मूल अरबी के साथ हिन्दी 'कुर्‌आन-सार' भी छप चुका है। अन्य भाषाओं में भी इसके अनुवाद प्रकाशित करने का हमारा प्रयत्न है।

'कुर्‌आन-सार' प्रस्तुत करने में प्रामाणिक उर्दू और अंग्रेजी अनुवादों तथा भाष्यों का लाभ तो उठाया ही गया है, उन समालोचनाओं और सूचनाओं का भी लाभ उठाया गया है, जो भारत और पाकिस्तान की पत्र-पत्रिकाओं ने 'रूहुल्-कुर्‌आन' और 'दि एसेंस ऑफ् दि कुर्‌आन' के सम्बन्ध में की हैं।

आनन्द की बात है कि विनोबा ने हाल में ही इस 'कुर्‌आन-सार' का सार भी प्रस्तुत कर दिया है। प्रस्तुत संस्करण में तारांकित चिह्नों द्वारा उसे स्पष्ट कर दिया गया है।

अरबी, उर्दू, मराठी और हिन्दी के तज्ञ श्री अच्युतभाई देशपाण्डे ने 'रूहुल्-कुर्‌आन' के निर्माण में तथा उसके भाषान्तरण में जो अद्‌भुत श्रम किया है, उसे 'तपस्या' की ही संज्ञा दी जा सकती है। विनोबाजी के चरणों में बैठकर इसे 'धर्मकार्य' मानकर उन्होंने इस रचना के निर्माण में सराहनीय योगदान किया है। शब्दों के सही अर्थ की खोज सम्बन्धी उनकी लगन अद्‌भुत है। **'कुर्‌आन-सार' की कहानी** से पता चलेगा कि यह महत्त्वपूर्ण रचना हमें किस प्रकार उपलब्ध हो सकी है।

विनोबाजी ने अच्युतभाई की धर्म-परायणता और हरिशरणता देखकर उन्हें 'मियाँ' का उपनाम दिया है। त्याग-तपस्या और सेवा से सुवासित उनका जीवन सर्वोदय-जगत् में स्पृहणीय माना जाता है। उन्हींकी निष्ठा के फलस्वरूप 'कुर्‌आन-सार' रूपी यह प्रसाद हम सबको उपलब्ध हो सका है। हम उनके प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

इस ग्रन्थ के प्रणयन में हमें अनेक मित्रों का विविध रूपों में सहयोग मिला है। उन सबके प्रति भी हम अपना आभार व्यक्त करते हैं।

हमारा विश्वास है कि यह पुस्तक दिलों को जोड़ने के अपने पवित्र लक्ष्य को पूरा करने में अवश्य ही सफल होगी। ●

प्रस्तावना

साइन्स ने दुनिया छोटी बनायी और वह सब मानवों को नजदीक लाना चाहता है। ऐसी हालत में मानव-समाज फिर्कों में बँटा रहे, हर जमाअत अपने को ऊँचा समझे और दूसरों को नीचा समझे, यह कैसे चलेगा ? हमें एक-दूसरों को ठीक से समझना होगा। एक-दूसरों का गुण ग्रहण करना होगा। यह किताब उस दिशा मे एक छोटा-सा प्रयत्न है।

इसी उद्देश्य से 'धम्मपद' की पुनर्रचना मैंने की थी और गीता के बारे में मेरे विचार गीता-प्रवचनों के जरिये लोगों के सामने पेश किये थे।

बरसों से भूदान के निमित्त मेरी पदयात्रा चल रही है, जिसका एकमात्र उद्देश्य दिलों को जोड़ने का रहा है। बल्कि मेरी जिन्दगी के कुल काम दिलों को जोड़ने के एकमात्र उद्देश्य से प्रेरित हैं। इस पुस्तक के प्रकाशन में वही प्रेरणा है। मैं आशा करता हूँ, परमात्मा की कृपा से वह सफल होगी।*

मैत्री आश्रम
(असम प्रदेश)
७-३-'६२

विनोबा का जय जगत्

* 'दि एसेन्स ऑफ दि कुर्आन' के लिए दी हुई हिन्दी प्रस्तावना।

मराठी संस्करण की प्रस्तावना

[विनोबाजी ने 'रूहुल-कुर्‌आन' के हिन्दी अनुवाद की तरह मराठी अनुवाद के लिए भी एक विशेष प्रस्तावना लिखी। हिन्दी पाठकों के लिए भी वह लाभदायी होगी, अतः उसे हम यहाँ दे रहे हैं।]

इधर पाकिस्तान-यात्रा की हमारी तैयारी चल रही थीं, उधर काशी में 'कुर्‌आन-सार' का अंग्रेजी संस्करण मुद्रणमुक्त होकर प्रकाशन के मार्ग पर था। समाचार-पत्र में उसका समाचार दिया गया। उतने समाचार पर कराची के पत्रों ने कोलाहल मचाया। अन्यत्र भी इसकी अनुकूल-प्रतिकूल प्रतिध्वनि उठी। ग्रन्थ प्रकाशित होने के पूर्व ही उसका दुनियाभर में प्रकाशन हुआ। हमारी आशादेवी (आर्यनायकम) ने कहा : "अमेरिका की रूढ़ भाषा में कहा जाय, तो कुर्‌आन-सार का 'दस लाख डालर प्रचार' हुआ।" यही विश्रुत ग्रन्थ अब मराठी में प्रकाशित हो रहा है।

इसमे मेरा क्या है? इसके सारे वचन पैगंबर-दृष्ट हैं। अनुवाद श्री अच्युतराव देशपाण्डे कर्तृक है। प्रकाशन ग्राम-सेवा-मण्डल का है। इसमें जोड़ी गयी प्रारम्भ की अनुक्रमणिका मात्र मेरी कही जायगी।

वचनों का चयन, उनकी खण्ड-अध्याय-प्रकरण-परिच्छेदयुक्त रचना और उन सबके मराठी शीर्षक, इतना काम मैंने किया है। वह इस अनुक्रमणिका में एकदम देखने को मिलेगा। इसके अतिरिक्त खण्ड-प्रकरण-निर्देशक संस्कृत श्लोक, जो ग्रन्थारम्भ के पहले दिये हैं, मेरे हैं। उन श्लोकों के सहारे संपूर्ण ग्रन्थ स्मृतिपट पर अंकित हो सकेगा। अखिल भारतीय उपयोग के लिए संस्कृत रचना की गयी, वरना वह भी सहज ही मराठी में होती।

इस पुस्तक में (हमने जो शीर्षक दिये हैं, उनमें से) कुछ शीर्षक संस्कृत में दीख पड़ते हैं। वे समन्वय की दिशा सुझानेवाले हैं। एक जमाने में प्रस्थानत्रयी का समन्वय कर अपना काम निभा, पर अब सर्वधर्म-समन्वय करने की आवश्यकता उत्पन्न हुई है । यह कार्य करते समय गौण-मुख्य-विवेकपूर्वक धर्मग्रन्थों से चयन करना होगा। धर्मग्रन्थ से चयन करना ही गलत है—ऐसी 'सनातनी' (कट्टर) वृत्ति अलबत्ता छोड़ देनी होगी। 'कुर्‌आन-सार' के विषय में ऐसी 'सनातनी वृत्ति' मुसलमानों ने नहीं दिखायी, यह बहुत सन्तोष की बात है। समन्वय के लिए धर्म-

विचारों का महत्तम समापवर्तक निकालना होगा। वैसा निकालने से शुद्ध अध्यात्म हाथ आयेगा और विज्ञान-युग में वही काम आयेगा।

अब इन संस्कृत शीर्षकों में से कुछ हम देख लें :

'तज्जलान्' (६४) जगदुत्पत्तिस्थितिलयकारी ब्रह्म-सामर्थ्य दर्शाने के लिए उपनिषदों ने यह एक सांकेतिक शब्द प्रयुक्त किया है (छांदोग्य० ३.१४.१)। 'तज्ज+ तलूल+तदन' ऐसी उसकी निरुक्ति भाष्यकार करते हैं।

'दृष्टेः द्रष्टा' (३४) दृष्टि का जो द्रष्टा, श्रुति का श्रोता, मति का मन्ता, विज्ञाति का विज्ञाता, इस प्रकार परमात्म-वर्णन श्रुति ने किया है (बृहदारण्यक ३.४.२.)। कुर्आन् का वाक्य उसका स्मरण करा देता है।

'लोहित-शुक्ल-कृष्ण-वर्णाः' (६१) श्वेताश्वतरोपनिषद् में ईश्वर की प्रकृति तिरंगी वर्णित है (श्वे० ४.५)। ईश्वर अनेक रंग निर्माण करता है, ऐसा लाक्षणिक भाषा में सृष्टि-वैचित्र्य का वर्णन कर उपनिषद् में बताये हुए ही तीन रंग कुर्आन में निर्दिष्ट हैं। उक्त उपनिषद्-वाक्य में सांख्यों द्वारा सत्त्व-रजस्-तमोमयी प्रकृति का निर्देश कल्पित है।

'यमेव एष वृणुते तेन लभ्यः' (६९) परमेश्वर जिस भक्त का वरण करता है, उसे उसकी लब्धि होती है। ऐसे अर्थ का उपनिषद् में यह एक ही एक वाक्य है (कठ० १.२.२३)। उपनिषद् की ब्रह्मविद्या की सामान्य सरणी से वह वाक्य अलग पड़नेवाला है, अतः आचार्य (शंकराचार्य) ने उसके अर्थ में थोड़ा फरक किया है। ईश्वरकृत भक्त-वरण कुर्आन की एक प्रिय कल्पना है।

'कौषीतकी उपनिषद्' ऐसा एक सांकेतिक शीर्षक आया है (७१)। कौषीतकी उपनिषद् में निम्नलिखित वचन है :

एष हि एव एनं साधु कर्म कारयति तं
यं एभ्यो लोकेभ्यः उन्निनीषते,
एष उ एव एनम् असाधु कर्म कारयति तं
यम् अधो निनीषते । (३.८)

अर्थ : 'परमेश्वर उससे अच्छा काम कराता है, जिसकी वह उन्नति चाहता है और उससे बुरा काम कराता है, जिसकी वह अवनति चाहता है।' यह भी उपनिषद्

का अद्वितीय वाक्य है। जीव के स्वतंत्र कर्तृत्व को इसमें लेशमात्र भी अवकाश नहीं रखा है। सारा बोझ ईश्वर के सिर पर डाल दिया है। इस पर भाष्यकार कहते हैं—**'कुर्वन्तं हितम् ईश्वरः कारयति।'** जीव करता है, उससे ईश्वर कराता है। कर्तृत्व से ईश्वर को बचाने के लिए भाष्यकार को ऐसी युक्ति प्रयुक्त करनी पड़ी। ऐसे ही अर्थ का **'भ्रामयन् सर्वभूतानि'** आदि गीता-वाक्य प्रसिद्ध ही है। उस पर **'गीताई चिंतनिका'**-कार टिप्पणी देता है :

ईश्वर कहता है : "तू करना चाहता है, वैसे मैं कराता हूँ"—यह कहकर ईश्वर ने छुटकारा पा लिया।

इसे कहना चाहिए : "तू करायेगा, वैसा ही मैं करूँगा।" तो, यह छूट जायगा।

(गी० चि०, अ० १८, श्लो० ६०, टि० ४)

भाष्यकार को जिस विचार ने कठिनाई में डाला और जिसमें से 'गीताई चिंतनिका'-कार ने किसी तरह भाग निकलने का रास्ता ढूँढ़ निकाला, वह आत्यंतिक शरणागति का विचार भारत के 'मार्जारपंथी' भक्ति-मार्ग की और उसी प्रकार कुर्‌आन की कोण-शिला है।

X X X

संस्कृत शीर्षकों की चर्चा हम यहाँ समाप्त करें और जिस मूलभूत कल्पना (विचार) ने मुहम्मद पैगंबर साहब की प्रतिभा को प्रभावित किया है और जिसका वर्णन उनकी वाणी में समुद्र जैसा ज्वार लाता है, जितना दूसरे किसी वर्णन में नहीं आता, वह ध्यान में लेकर यह प्रस्तावना समाप्त करें।

कौन-सी है वह मूलभूत कल्पना? वह है : ईश्वर का अद्वितीय एकत्व। इसलाम यानी एकेश्वर-शरणता, ऐसी इसलाम की संक्षेप में व्याख्या की जाती है। पर ध्यान में रखने की बात यह है कि सारा वैदिक भक्ति-मार्ग एकेश्वरनिष्ठा पर ही खड़ा है। **'एकमेवाद्वितीयं'** जैसे वाक्य निर्गुण ब्रह्मपरक हैं, कहकर छोड़ दिये जायँ और सगुण-परमेश्वर-विषयक वाक्य ही विचार में लिये जायँ, तो भी एकेश्वरनिष्ठा-प्रतिपादक सैकड़ों वाक्य वेद से गीता-भागवत तक दिखाये जा सकते हैं। पर भक्ति के लिए ईश्वर का एकत्व सुभीते का होने पर भी एकत्व-संख्या से ईश्वर को निबद्ध करना यानी ईश्वर को मर्यादा में बाँधने जैसा ही हो जाता है, ऐसा वैदिक तत्त्वज्ञान कहता है। तदनुसार ईश्वर एक है, अनेक हैं, असंख्येय है, शून्य है और अनंत है,

ऐसा विष्णुसहस्रनाम कहता है। ईश्वर अनेक हैं, ऐसा नहीं, ईश्वर अनेक है, इतना अलबत्ता भूलना नहीं चाहिए।

पर यह भी भाषा का खेल हुआ। 'मन-वाचातीत तेरा यह स्वरूप'—वहाँ किस शब्द का क्या आग्रह रखें ? अतः जैसा कि तुकाराम महाराज कहते हैं कि इस विठ्ठल को (ईश्वर को) जो-जो कहें, वह सभी शोभा देता है—यही यथार्थ है।

अन्त में छोटे-से श्वेताश्वतरोपनिषद् से एकेश्वरप्रतिपादक कुछ वचन यहाँ उद्धृत किये जाते हैं। साधक उनका चिंतन करें।

१. कालात्मयुक्तानि अधितिष्ठत्येकः (१.३)
२. ईशते देव एकः (१.१०)
३. एष ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः (२.१६)
४. यो देवो अग्नौ यो अप्सु (२.१७)
५. य एको जालवान् (३.१)
६. एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः (३.२)
७. द्यावाभूमी जनयन् देव एकः (३.३)
८. विश्वस्यैकं परिवेष्टितारम् ईशं तं ज्ञात्वा अमृता भवन्ति (३.७)
९. दिवि तिष्ठत्येकः (३.९)
१०. य एकोऽवर्णो बहुधा शक्तियोगात् (४.१)
११. यो योनिं योनिम् अधितिष्ठत्येकः (४.११)
१२. स कारणं करणाधिपाधिपो
न चास्य कश्चित् जनिता न चाधिपः (६.९)
१३. स्वभावतो देव एकः स्वमावृणोत् (६.१०)
१४. एको देवः सर्वभूतेषु गूढः (६.११)
१५. एको वशी निष्क्रियाणां बहूनाम् (६.१२)
१६. एको बहूनां यो विदधाति कामान् (६.१३)
१७. एको हंसो भुवनस्यास्य मध्ये (६.१५)

भूदान-यात्रा (मध्यप्रदेश) विनोबा
१४-१२-'६३

विषय-सूची

प्रस्तावना — विनोबा — ५

'कुरान-सार' की कहानी — 'मियाँ' — १३-३४

खण्डों और प्रकरणों की रचना के श्लोक — विनोबा — ३५-३६

कुर्आन-सार — १-१३८

खण्ड १ ग्रन्थारम्भ — १-४

(१) **मंगलाचरण** — १

१. मंगलाचरण — १

(२) **ग्रन्थ-गौरव** — २

२. ग्रंथ-प्रकाश २, ३. ग्रंथ-स्वरूप ३, ४.पठन-विधि ४

खण्ड २. ईश्वर — ५-३२

(३) **एक** — ५

५. एक एवाद्वितीयः ५, ६. देवता-निषेध ८

(४) **ज्ञानमय** — ९

७. परमात्मा प्रकाश-स्वरूप ९, ८. सर्वज्ञ १०

(५) **दयामय** — १३

९. दयालु १३, १०. ईश्वरीय देनें १४

(६) **कर्ता** — १७

११. सृष्टिकर्ता १७, १२. ईश्वर की सुन्दर रचना २०
१३. ईश्वरीय संकेत २२

(७) **सर्वशक्ति** — २३

१४. सर्वशक्तिमान् २३, १५. इच्छा-समर्थ-ईश्वरीय इच्छा सार्वभौम २५, १६. अवर्णनीय-महान् २६

(८) **नाम-स्मरण** २७

१७. ईश्वर का नाम २७

(९) **साक्षात्कार** २८

१८. साक्षात्कार २८

(१०) **प्रार्थना** ३१

१९. प्रार्थना ३१

खण्ड ३. भक्ति रहस्य ३३-४९

(११) **भक्ति** ३३

२०. प्रार्थनोपदेश ३३, २१. सृष्टिकृत प्रार्थना ३५, २२. निष्ठा ३७, २३. त्याग-समर्पण ३९, २४. कसौटी एवं आश्वासन ४१, २५. धीरज ४३

(१२) **सत्संगति** ४३

२६. सत्संग ४३

(१३) **अनासक्ति** ४५

२७. संसार अनित्य ४५, २८. वैराग्य ४७

खण्ड ४. भक्त-अभक्त ५०–६३

(१४) **भक्त-लक्षण** ५०

२९. दशलक्षणी ५०, ३०. प्रार्थनावान् ५०, ३१. निष्ठावान् ५२, ३२. धैर्यवान् ५३, ३३. अहिंसक ५४, ३४. भक्तों को आशीर्वाद ५५

(१५) **अभक्त** ५६

३५. नास्तिकाः ५६, ३६. भ्रान्तचित्त ५९

३७. मोघकर्माणः ६०, ३८. नरकभाजः ६१

खण्ड ५. धर्म ६४–७०

(१६) **धर्म-विचार** ६४

३९. धर्म-निष्ठा ६४, ४०. धर्म-सहिष्णुता ६६, ४१. धर्म-विधि ६९

खण्ड ६. नीति ७१–१००

(१७) सत्य ७१

४२. सत्यासत्य-वियेक ७१

(१८) याक्शुद्धि ७२

४३. सत्यसन्ध ७२, ४४. मंगल वाणी ७३, ४५. अनिन्दा ७४

(१९) अहिंसा ७६

४६. न्याय-बुद्धि ७६, ४७. न्याय से क्षमा श्रेष्ठ ७७

४८. अहिंसक निष्ठा ७८, ४९. सहयोग–वृत्ति ७९,

५०. असहयोग ८१, ५१. अनिवार्य प्रतिकार ८१

(२०) अस्वाद ८२

६२ रसना-जय ८२

(२१) ब्रह्मचर्य ८३

५३. पावित्र्य ८३

(२२) शुद्ध जीविका ८६

५४. अस्तेय ८६, ५५. असंग्रह ८८, ५६. दान ९२

(२३) नीति-बोध ९४

५७. शिव-शक्ति ९४, ५८. नीति-निर्देश ९५

(२४) शिष्टाचार ९८

५९. सदाचार ९८

खण्ड ७. मानव १०१–१०८

(२५) मानवता १०१

६०. मानव का वैशिष्ट्य १०१, ६१. मानव की दुर्बलता १०३,

६२. पापाभिमुखता १०४, ६३. कृतघ्नता १०५,

६४. आस्तिक-नास्तिकता १०७

खण्ड ८. प्रेषित १०९–१२५

(२६) **पूर्व-प्रेषित** १०९

६५. प्रेषित–सर्वजनहिताय १०९, ६६. प्रेषित मनुष्य ही १०९, ६७. गुणविशिष्ट १११, ६८. कथा कथनहेतु ११२, ६९. नूह ११२, इब्राहीम ११३, ७१. मूसा ११५, ७२. यीशु खीष्ट ११६, ७३. अकथित प्रेषित ११८

(२७) **मुहम्मद पैगंबर** ११८

७४. साक्षात्कार ११८, ७५. ईश्वरदत्त आदेश ११९, ७६. घोषणा १२२, ७७. गुण-सम्पदा १२३, ७८. मिशन १२५ ७९. आशीर्वाद-पात्र १२५

खण्ड ९. गूढ़-शोधन १२६–१३८

(२८) **तत्त्वज्ञान** १२६

८०. जगत १२६, ८१. जीव १२६, ८२. अन्तर्यामी १२८

(२९) **कर्मविपाक** १२८

८३. कर्मविपाकविषयक मूलभूत श्रद्धा १२८, ८४. कर्मविपाक अपरिहार्य १२९, ८५. मृत्यु के बाद भी कर्म नहीं टलता १३१

(३०) **साम्पराय (मरणोत्तर जीवन)** १३२

८६. पुनरुत्थान अटल १३२, ८७. पुनरुत्थान का दिन १३३ ८८. स्वर्ग, नरक आदि की व्यवस्था १३४, ८९. शान्ति-मन्त्र १३७, ९०. ईश्वर-प्रसाद १३८

परिशिष्ट : कुछ शब्दों के अर्थ १३९–१४२

'कुरान-सार' की कहानी; 'मियाँ' की जुबानी*

विनोबाजी ने जो धार्मिक साहित्य लिखा है, चुना है या अनूदित किया है, वह धर्म-प्रसार की दृष्टि से ही किया है, पर जिसे हम स्थूलतः **'धार्मिक-साहित्य'** कहते हैं, उसके लेखन पर जब हम ध्यान देते हैं, तो हमें ऐसा लगता है कि मानो उन्हें वह आशीर्वाद ही फलित हुआ है, जो महाराष्ट्र में भजन के अन्त में ईश्वर से माँगा जाता है। वह आशीर्वाद नित्य ही माँगा जाता है और सामूहिक रूप से माँगा जाता है। सैकड़ो वर्षों से यह रीति चली आयी है। मराठी भाषा में मूल आशीर्वाद का अभंग यों है--

आकल्प आयुष्य व्हावें तथा कुळा। माझिया सकळां हरीच्या दासां ।१।

कल्पनेची बाधा न हो कोणे काळीं। ही संतमंडळी सुखी असो ।२।

अहंकाराचा वारा न लागो राजसा। माझ्या विष्णुदासा भाविकांसी ।३।

'नामा' म्हणे तयां असावें कल्याण। ज्यां मुखीं निधान पांडुरंग ।४।

'हे प्रभु, हमारे करुणामय हरि के सभी दासों को, भक्तों को इस पूरी मंडली को, तू शाश्वत जीवन प्रदान कर। वे कभी भी, किसी भी समय, किसी भी प्रकार की कल्पनाओं से, मानसिक तरंगों से पीड़ित, त्रस्त और उद्वेलित न हों। हमारी यह संत-मंडली सदैव परम सुख का अनुभव करे। इन्हें तू सुखी जीवन प्रदान कर। हमारे विष्णु के इन निष्ठावान सेवकों को क्षुद्र अहंकार का कभी स्पर्श तक न हो और ये सदा तेरे साथ समरस रहें। (भक्त-शिरोमणि) 'नामा' कहता है कि जिनके मुख में सदैव विश्वप्रतिपालक आनन्दमय प्रभु पांडुरंग का नाम रहता है, जिनका एकमात्र आधार तू ही है, उनका सदैव कल्याण हो। इस संत-समाज का सतत अभ्युदय हो और इसे निःश्रेयस की प्राप्ति हो।'

हम मानते हैं कि इस आशीर्वाद ने, उनसे धर्म-पालन करवाया है और उसी के अनुसरण में कुछ लिखवाया है। **'कुरान शरीफ'** का काम भी इसी तरह ईश्वर ने उनसे करवाया है, ऐसा हम मानते हैं।

---

* श्री अच्युतभाई देशपंडे को विनोबाजी 'मियाँ' कहकर पुकारते हैं।

अध्ययन का प्रारम्भ

'कुरान शरीफ' के विनोबाजी के अध्ययन का श्रीगणेश हमारी जानकारी के अनुसार इस प्रकार है :

वर्धा-आश्रम में औरों की तरह एक मुसलमान बालक भी आया। उसने सुना था कि वहाँ जाने से वह कुछ जीवनदायी विद्या सीख सकेगा। उसने आश्रम में कातना सीखा, धुनना, बुनना सीखा, राष्ट्रीय जीवन जीना सीखा। आश्रम में जो प्रवचन होते थे, उन्हें भी वह सुनता था। कुछ दिन के बाद उसे इच्छा हुई कि वह विनोबाजी से 'कुरान' पढ़े।

उसने विनोबाजी से प्रार्थना की कि वे उसे कुरान पढ़ायें। विनोबाजी धर्म-विषयक ग्रंथों के अभ्यासी हैं। उन्होंने अंग्रेजी में तो कुरान पहले ही पढ़ी थी, पर अब इस बच्चे को पढ़ाने के लिए कुरान का मराठी अनुवाद मँगा लिया और उसे उन्होंने देख लिया। फिर अन्य भाषाओं के कुछ और अनुवाद भी देख लिये और साथ ही मूलग्रन्थ ही देखने का भी निश्चय कर लिया। जैसी कि उनकी विचार-पद्धति है, उन्होंने सोचा होगा कि इस कार्यकर्त्ता की इच्छा द्वारा उन्हें एक ईश्वरीय संकेत मिला है कि वे कुरान का अभ्यास करें। तभी से उनका कुरान का अध्ययन तीव्रता से चलने लगा। हमें जहाँ तक स्मरण है, यह अभ्यास सन् १९३७ से प्रारम्भ हुआ।

उच्चारण-शुद्धि

कुरान पढ़ने के लिए पवनार के देहात में जो मुल्ला भाई मिल सकते थे, उन्हीं से विनोबाजी कुरान-पाठ के सबक लेने लगे। स्पष्ट है कि ऐसे मुल्ला लोगों को केवल पाठ करना ही आता है, लिख वे नहीं सकते, और अर्थ वे शायद ही समझते हों। कुरान-पाठ करने में भी उनका उच्चारण शास्त्रीय नहीं होता। विनोबाजी ने कुरान का उच्चारण कैसा हो, इसके लिए तद्विषयक ग्रंथों के आधार से जानकारी प्राप्त की, भिन्न-भिन्न भाषाओं के उच्चारण-शास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया। शुद्ध उच्चारण करने की उनकी अपनी विशेष क्षमता है और उसका वे आग्रह भी रखते हैं। फलतः 'कुरान शरीफ' की आयतों का उन्होंने अस्खलित और सम्यक्रूप से उच्चारण आरम्भ किया।

भारत में अनेक स्थानों पर लोग कुरान में आये शब्दों के 'इ' कार और 'उ' कार का उच्चारण फारसी पद्धति से करते हैं, परन्तु विनोबाजी ने कुरान-पाठ में मूल

अरबी की ही पद्धति पर उच्चारण आरम्भ किया। उसे सुनकर स्थानीय मुल्ला तो दंग रहा ही, अन्य लोग भी विस्मित होकर रह गये!

बापू का आशीर्वाद

गांधीजी को थोड़े दिनों में पता चला कि उनका विनोबा कुरान का अध्ययन कर रहा है, तो कहते हैं कि उन्होंने कहा, 'हममें से किसी को तो भी यह करना ही था। विनोबा कर रहा है, यह आनन्द का विषय है।'

अब तो विनोबा को ईश्वर के संकेत के साथ-साथ बापू का आशीर्वाद भी मिल गया। अब उनका दैनिक कुरान-पाठ अत्यंत उत्साहपूर्वक अव्याहत गति से चलने लगा। उच्चारण ठीक हो, इसलिए वे इतनी ऊँची आवाज से कुरान पढ़ते थे कि बहुत दूर से उनकी वह ध्वनि आने-जानेवाले सुनते थे। उच्चारण बिलकुल शास्त्र-शुद्ध हो, इसलिए कुछ दिनों के बाद विनोबाजी ने एक युक्ति और निकाली। उन्हें एक गुरु मिल गया। वह गुरु था--'आल इंडिया रेडियो'। उन दिनों एक अरबी कारी (पाठक) द्वारा अरब देश से होनेवाली कुरान की तिलावत (कुरान-पाठ) दिल्ली रेडियो से प्रसारित होती थी। विनोबाजी रेडियो खोल देते थे और अपनी सहज स्वभावसिद्ध एकाग्रता से वे कुरान-पाठ सुनते थे। उस पर से उन्होंने कुरान के शब्दों के उच्चारण की पद्धति को पकड़कर उसे अपना लिया। आज जब विनोबाजी कुरान पढ़ते हैं, तो उनके उच्चारण हम जैसों को तो बहुत अभिनव प्रतीत होते हैं।

स्वाध्याय

इस प्रकार कुरान-पाठ का आयोजन होते ही विनोबाजी कुरान का अर्थ समझने के लिए स्वयं अपने शिक्षक बन गये। उन्होंने अरबी आयत और उसके सामने अंग्रेजी तर्जुमा की किताब हाथ में ली। एक आयत पढ़ी और उसका अर्थ पढ़ा। ऐसे कई पारायण किये। फिर शब्द और प्रत्यय, क्रिया और उसके रूप, अव्यय और वाक्य एवं उसकी प्रक्रियाएँ देखना आरंभ किया। इस प्रकार कई पारायण करके विनोबाजी ने अपने लिए उसका एक व्याकरण तैयार किया और उसके उपरांत अरबी व्याकरण मँगाकर उससे उसकी तुलना करके ठीक कर लिया।

अब उन्हें आयतों का अर्थ, शब्दों की रचना और व्याकरण की जानकारी हुई और जैसी कि उनके अध्ययन की सामान्य पद्धति है, शब्दों का मूलगामी अर्थ भी उनके हाथ आ ही गया होगा।

विनोबाजी का कुरान का यह अध्ययन जेल में भी चला। इस प्रकार कई वर्ष तक कुरान का अध्ययन चलने के उपरांत, विविध प्रवृत्तियों मे लग जाने के कारण, वह कुछ दिनों के लिए स्थगित हो गया।

अध्ययन-काल में विनोबाजी को कुरान के जितने भी अंग्रेजी अनुवाद मिल सके, उन्होंने देख डाले। उन अनुवाद-ग्रंथों मे जिन विशेष ग्रंथों का उल्लेख मिला, उन ग्रन्थों को भी मँगाकर उन्होंने पढ़ डाला–जैसे, गजाली की 'नूर' (देवी प्रकाश) पर किताब आदि।

विनोबाजी जिस भक्ति-भाव से कुरान पढ़ते हैं, वह भक्ति-भाव उनकी आँखों से आँसुओं की प्रेममयी धारा बहाता है। 'कुरान-शरीफ' में भक्तों का इसी प्रकार का एक जिक्र आया है। उसका अर्थ करते हुए कई अनुवादकों ने 'आँखें तर हो जाती हैं', 'आँखें भर आती हैं'–ऐसा अर्थ किया है। विनोबाजी को देखते हुए हमें यह विश्वास हो गया है कि वहाँ उस शब्द का अर्थ 'आँखों में आँसू उमड़ आते हैं', 'वे सतत प्रवाहित होती हैं', इस प्रकार ही करना ठीक होगा। वैसा ही अर्थ हमने किया है।

समभाव

कुरान में मक्की (मक्का में उतरे हुए) सूरों (ईश्वरीय प्रकरण) में विनोबाजी को बहुत अधिक आनन्द की अनुभूति होती है। उन्होंने अपनी यह स्थिति धर्मनिष्ठ बादशाह खान (खान अब्दुल गफ्फार खान) से कही। वे वर्धा में आते थे, तो दोनों की मुलाकात होती थी। बादशाह खान विनोबाजी से सहमत हुए और उन्होंने बताया कि उनका अपना भी ऐसा ही अनुभव है।

उन्हीं दिनों, कहते हैं कि अबुल कलाम आजाद एक बैठक के लिए वर्धा पधारे थे। विनोबा बापू से मिलने गये। आजाद की उपस्थिति में बापू ने विनोबाजी से कुरान-पाठ कराया। मौलाना विनोबाजी के उच्चारण से बहुत प्रभावित हुए। उन्हें जब पता चला कि देहात के एक मुल्ला से विनोबा ने कुरान पढ़ी है, तो उच्चारण की इतनी स्पष्टता का कारण वे समझ न सके। जब विनोबाजी के सारे प्रयत्नों की जानकारी उन्हें मिली, तभी उन्हें समाधान हुआ। विनोबा के कुरान-सम्बन्धी ज्ञान से मौलाना बहुत प्रसन्न हुए।

मौलाना आजाद का कुरान-संबंधी ज्ञान अत्यन्त विस्तृत था और इसके लिए वे सारे भारत में प्रख्यात थे। उन्होंने पहले सूरा से अठारहवें सूरा (प्रकरण) तक का ही अनुवाद करके प्रकाशित किया था। विनोबाजी की बड़ी इच्छा थी कि मौलाना 'कुरान-शरीफ' के अपने अनुवाद का शेष कार्य पूरा करते और सूरे कहफ से सूरे अन्नास तक का तर्जुमा पूरा कर डालते।

कहते हैं कि मौलाना से जब कभी कोई इस सम्बन्ध में निवेदन करता था, तो वे कहते कि 'मस्तिष्क में तो सारा पड़ा है, कभी कागज पर भी उतर आयेगा, पर उसके लिए समय मिलना चाहिए।' दुःख की बात है कि वह समय उन्हें नहीं मिल सका और वह तर्जुमा हमें नहीं मिला। उनसे हमें **'गुब्बारे खातिर'**, **'हिन्दुस्तान की आज़ादी की जीत'** तो मिली, पर **'तर्जुमानुल कुरान'** का दूसरा हिस्सा नहीं मिला, सो नहीं ही मिला।

गम्भीर अध्ययन

विनोबाजी से कोई यदि कुरान के किसी महत्त्वपूर्ण विषय या शब्द के सम्बन्ध मे पूछता है, तो वे तुरन्त कुरान का पन्ना पलटकर उसे बता देते हैं– ऐसी उनके कुरान-सम्बन्धी ज्ञान की स्थिति है। इसी कारण **'कुरान-सार'** तैयार करते समय सारे विषयों का समग्रता से ध्यान रखकर विनोबाजी कुरान की आयतों (वचनों) का सुचारु रूप से चयन कर सके।

विनोबाजी के 'कुरान शरीफ' के अध्ययन में बीच में कुछ व्यवधान पड़ा था, पर अजमेर के भूदान-सम्मेलन के पूर्व विनोबाजी ने फिर 'कुरान शरीफ' का अध्ययन शुरू कर दिया था। भूदान पदयात्रा में वे जिस-जिस प्रांत में जाते थे, वहाँ के लोगों के हाथ में जो धर्मग्रंथ होता था, उसका गहराई से वे अध्ययन करते थे। जब वे अजमेर शरीफ की ओर जा रहे थे, तब सहज ही 'कुरान शरीफ' ने उन्हें अपनी ओर आकृष्ट कर लिया।

सार-चयन का निश्चय

अबकी बार उन्होंने चयन के निश्चय के साथ 'कुरान शरीफ' का अध्ययन आरम्भ किया। जो वचन या वचनांश अपने चयन में लेने हैं, उन पर वे कुरान की अपनी पोथी में चिह्न लगाने लगे। डेढ़ साल की मेहनत से **'रूहुल-कुरान'** नामक अरबी नाम से यह पुस्तक तैयार हुई। कश्मीर के विद्वान् हाफिज मौलाना मुहम्मद

साहब मसूदी ने ठीक ही कहा कि 'विनोबाजी ने यह जो काम किया, इस काम के लिए कोई कमेटी भी बैठायी होती, तो उसे यह काम करने में कई वर्ष लग जाते।'

चयन की प्रक्रिया

अब इस चयन-कार्य की प्रक्रिया संक्षेप में हम यहाँ बता देना चाहते हैं। कुरान में से कौन-सी आयतें लेनी हैं, ऐसा निश्चय करके विनोबाजी ने उन पर निशानियाँ कीं और उन पर शीर्षक लगा दिये। अपने लिए इस तरह का सम्पादन-कार्य उन्होंने कई बार पहले भी कर रखा था। बीस वर्ष पूर्व की हुई उनकी निशानियों से अब की की हुई निशानियों की यदि तुलना की जाय, तो अध्ययन किस गहराई से करना पड़ता है, इसका एक पदार्थ-पाठ अध्ययनशीलों को मिल सकता है।

उन निशान लगी हुई आयतों को विनोबाजी ने नये सिरे से फिर देखा और एक ही विषय की दो आयतें मिलीं, तो एक को रखकर एक को उन्होंने कम कर दिया। इस प्रकार जितनी आयतों को रखना उन्होंने आवश्यक समझा, उन्हें विषयानुसार भिन्न-भिन्न विषयों के नीचे जमाने के लिए किताब के विभाग, अध्याय और प्रकरण उन्होंने निश्चित कर दिये।

विनोबा द्वारा चुनी हुई १०६५ आयतें यहाँ ९० प्रकरणों, ३० अध्यायों और ९ खण्डों में बँटी हैं। ये कुल आयतें कुरान की आयतों का करीब-करीब छठा हिस्सा होती हैं। कुरान की कुल आयतें ६२३७ हैं। इन प्रकरणों और शीर्षकों का निश्चय करने में जो गहनता काम कर रही है, वह विशेष ध्यान देने लायक है।

इस तरह प्रकरण और विषयों के अनुसार चयन निश्चित होने के बाद उन्होंने इस पुस्तक के नाम के विषय में सोचा और इसे नाम दिया **'कुरान-सार'**। कितना अन्वर्थक नाम है! कुरान में जो-जो विषय आये हैं, उनमें से जीवन के लिए सारभूत होनेवाले जो अंश हैं, वे इस पुस्तक में उपस्थित हैं, इसलिए इस पुस्तक का नाम है, **'कुरान-सार'**। जैसा कि उन्होंने उर्दू 'भूदान तहरीक' के सम्पादक श्री अहमद फातमी साहब को एक पत्र में लिखा था–'कुरान की रूहानी तालीम (आध्यात्मिक सीख) दुनिया के सामने पेश करने के लिए इस किताब का उपयोग होगा।'

विनोबा और धर्मग्रन्थ-लेखन

इस पुस्तक के विभाग आदि ध्यान में बने रहें, इस दृष्टि से विनोबाजी ने एक संस्कृत श्लोक तैयार किया है। यह श्लोक नित्य स्मरणीय श्लोक का स्थान प्राप्त कर

सकता है। श्लोक यह है–

आरंभे तदनुध्यानं, भक्त्या भक्तेर्निषेवितम्।
धर्मनीति मनुष्याणां प्रेषितैर्गूढशोधनम् ॥

यदि सम्भव होता तो यह पुस्तक जिस प्रकार सम्पादित हुई, उसी प्रकार से छप जाती, जैसा कि **'धम्मपद'** का हुआ। पाली में मूल ग्रन्थ और संस्कृत में सम्पादन। धार्मिक ग्रंथ-पाठ करनेवालों के लिए और अध्ययन की इच्छा रखनेवालों के लिए यह उपयुक्त पुस्तक हुई है। परन्तु साभान्य लोगों को इसका क्या लाभ मिलता? वे तो इसे समझ ही नहीं पाते। प्रश्न था कि इसका अनुवाद कौन करे? सम्पादन में विनोबाजी की जैसी विशिष्ट दृष्टि है, वैसी ही अर्थ के सम्बन्ध में भी होगी ही। परन्तु उनकी इस विशेष दृष्टि का ज्ञान उनके निकटवर्ती लोगों को है। परन्तु इस कार्य के लिए विनोबाजी के पास समय कहाँ?

अनेक धर्म-प्रेमी लोगों ने विनोबा से कई बार प्रार्थना की कि 'ऋग्वेद से हमें आप कोई पाथेय निकालकर दीजिये।' वे विनोबा के ही हाथ का वेद का प्रसाद चाहते थे। छत्तीस साल वेदाध्ययन, अखण्ड वेदाध्ययन, विनोबाजी ने किया है। मूलभूत और विशिष्ट दृष्टि से उन्होंने उसका अवगाहन किया है। पर विनोबाजी के पास उसका चयन करने को समय कहाँ? और भी दो महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की ओर वे थोड़ा भी ध्यान दें तो दो अनमोल ग्रन्थ समाज को मिल सकते हैं। उनकी निकटवर्ती मंडली जब कभी उनसे इस विषय में निवेदन करती है, तो विनोबाजी कहते हैं कि ''आप हमें सारे भारत का ग्राम-स्वराज्य करा दें तो हम निश्चिन्त होकर, आप लोग जिस प्रकार का ऋग्वेद का सार चाहते हैं, उसी प्रकारका सार तैयार कर देंगे।''

'कुरान' का यह चयन-कार्य आरंभ हो चुका था और आरम्भ किया हुआ कार्य बीच में छोड़ना ठीक नहीं होगा, ऐसा शायद उन्हें लगा हो; इसी कारण या अन्य किसी कारण से, वस्तुतः राम-राम करके, बड़ी उत्कंठा और कठिनाई से यह पुस्तक उनके अन्तेवासियों को मिल सकी है।

अनुवाद का प्रश्न

जिस प्रकार **'धम्मपद'** प्रकाशित हुआ, उसी प्रकार 'कुरान-सार' के प्रकाशित करने में कठिनाइयाँ थीं। मराठी शीर्षक और अरबी में मूल वचन। कौन पढ़े उसे?

किसके काम आये वह? अरबी का अनुवाद कौन करे? मराठी में अरबी पर से ही करना हो, तो विनोबा ही कर सकते थे। पर उन्हें समय नहीं था। इच्छा तो बहुतों की थी कि विनोबा स्वयं अनुवाद करें।

बिहार के एक मुस्लिम विद्वान् ने उन्हें सन्देश भिजवाया कि 'आप कुरान का संस्कृत अनुवाद कीजिये'। कितने महान् विश्वास की बात! पर यह विश्वास सही था। जानकार लोग इसे जानते हैं। जिन्होंने उनका 'अलफातिहा' और 'अलइखलास', कुरान के इन दो सूरों का मराठी कवितारूप में अनुवाद देखा है, उन्हें ऐसा लगा कि पूरी कुरान का न सही, केवल **'कुरान-सार'** का ही यदि वे मराठी में अनुवाद कर दें तो कितना अच्छा हो। परन्तु, ऐसा शक्य नहीं था।

अतः यह निश्चय हुआ कि कुरान का एम० पिक्थाल का अंग्रेजी अनुवाद ले लिया जाय और मराठी शीर्षकों का अनुवाद मराठी और अंग्रेजी जाननेवाले विद्वानों से कराया जाय। इस कार्य के लिए मित्रों की सहायता मिली और **'दि एसेन्स ऑफ दि कुरान'** तैयार हुआ। जिस प्रकार अंग्रेजी के लिए रास्ता निकल आया, उसी तरह उर्दू अनुवाद का भी रास्ता निकल आया। उर्दू अनुवाद अन्य भाषाओं के लिए आधार हो गया है। अन्य भाषाओं मे दूसरे सभी अनुवाद इसी अनुवाद के आधार पर निकल सकते हैं।

विनोबा का अपरिग्रह

विनोबाजी ने इस चयन के समय इसके संकलन-संपादन के समय, साथियों से जो चर्चाएँ कीं, जो दृष्टि बतायी,जो अर्थ सुझाये, उन सबके यदि 'नोट्स' (विवरण) रखे जाते, तो वे इस 'कुरान-सार' के भाष्य के तौर पर अत्यन्त लाभदायी सिद्ध होते। शब्दों के, विनोबाजी के, कभी-कभी अपने अर्थ होते हैं। वे दूसरों के अर्थों के साथ मेल खाते हों तो खायें, न खाते हों, न खायें। उन्हें जो अर्थ प्रतीत हुआ, वह होना ही चाहिए, ऐसा विश्वास उन्हें होता है और फिर ढूँढ़ने पर वह अर्थ कहीं न कहीं मिल भी जाता है– ऐसा अनुभव आया है। ये 'नोट्स' रखने चाहिए थे, यह बात सही है, परन्तु रखता कौन? इस प्रकार के 'नोट्स' रखने की क्षमतावालों को विनोबाजी ने दूसरे-दूसरे कामों में लगा रखा है। इन कामों के लिए किसी को अपने साथ रखने में विनोबाजी 'परिग्रह' मानते हैं और इसलिए ऐसे समर्थ लोगों को वे अन्यान्य कार्यों में लगा देते हैं। ठीक भी है, ऐसे अपरिग्रही लोगों के विचार, कहते हैं, अव्यक्त रीति से विश्व मे फैलते हैं। हम भी ऐसी ही आशा रखें।

कितने ही मित्रों की इच्छा थी कि विनोबाजी इस पुस्तक की एक विस्तृत प्रस्तावना लिख दें। पर उन्होंने केवल १७ पंक्तियों की एक प्रस्तावना दी। विनोबाजी ने कुरान के अवतरणों का निर्देश कर उन पर कई जगह अब तक व्याख्यान दिये हैं। वे उनकी, इन विषयों पर जो दृष्टि है, उसे स्पष्ट करते ही हैं। ये व्याख्यान, उनके व्याख्यानों की सम्पादित पुस्तकों में, यत्र तत्र बिखरे पड़े हैं। हम यहाँ स्मरण से कुछ दे रहे हैं।

कुरान सम्बन्धी व्याख्यान

'हम दो नहीं हैं, तीन हैं, और तीसरा बहुत महान् है'–यह विचार इस भूदान-पदयात्रा मे कितनी ही बार विनोबा ने सुनाया है और **'भूदान-गंगा'** में इस विषय की विस्तृत जानकारी दी है। सन् १९४५ में लिखी **'राम-नाम : एक चिन्तन'** पुस्तक में उन्होंने, कु रान में जिस 'शिर्क' का जिक्र आता है, उसकी बहुत ही अभिनव और विकसित व्याख्या की है। इन्दौर में दिये हुए आध्यात्मिक प्रवचनों में 'सूर्य को प्रणिपात न करो, उसके निर्माता को प्रणिपात करो'–इस विषय का जो विवेंचन उन्होंने किया है, उसमें उनकी व्यापक और समन्वयी वृत्ति का स्पष्ट दर्शन होता है। **'इलमुलयकीन'** (निश्चित ज्ञान) और **'अयनुल्यकीन'** (निश्चित साक्षात्कार) का उल्लेख तो उनके अनेक व्याख्यानों में आया है और 'तेरा काम संदेश पहुँचाना है और मेरा काम हिसाब लेना है'–इसका जप भी उन्होंने अनेक बार किया है।

अजमेर की दरगाह शरीफ में खड़े होकर वहाँ पर उपस्थित लोगों के निमित्त से उन्होंने हम सब भारत-वासियों के लिए प्रभु का जो संदेश सुनाया, वह कितना महत्त्वपूर्ण है! 'हक (सत्य), सबर (धृति) और रहमत (करुणा) की ताकीद एक-दूसरे को करो।' उनका यह व्याख्यान बहुत ही प्रसिद्ध है। कश्मीर में दिये गये उनके कई व्याख्यान **'कुरान-सार'** पर आधृत हैं, पर विशेषरूप से 'कुरान की तालीम' 'मजहब के अरकान' (धर्म के स्तम्भ), 'खुदा किसे मदद देता है?' और 'कुरान की तिलावत' (पठन)–ये व्याख्यान उन-उन विषयों को अच्छी तरह समझाते हैं।

'कुरान-सार' का अंतरंग

अब हम विनोबा द्वारा संपादित 'कुरान-सार' के अंतरंग के सम्बन्ध में कुछ चर्चा करेंगे। इस चयन में विनोबा ने 'सांपराय' के विषय पर विस्तार से अवतरण

लिये हैं। बहुत-से लोग मानते हैं कि बहिश्त (स्वर्ग) और दोजख (नरक)–ये बच्चों को, या बालवत् समाज को समझाने की बातें हैं, पर विनोबाजी मानते हैं कि स्वर्ग-नरक उतने ही वास्तविक हैं, जितना हमारा जीवन वास्तविक है और इसीलिए उन्होंने कुरान के इस विषय को छोड़ा नहीं, ऐसा माना जा सकता है। **'गीताई चिन्तनिका'** में उन्होंने इस विषय की विशेषरूप से व्याख्या की है। उससे इस सम्बन्ध में विनोबा के विचारों की कल्पना की जा सकती है।

कुरान की ऐसी मान्यता है कि मृत्यु के बाद की ही यह स्थिति है। विनोबाजी भी मानते हैं कि ऐसा ही है। पर हाँ, यहाँ भी हम स्वर्ग या नरक उत्पन्न कर सकते हैं, ऐसा यदि कोई माने, तो विनोबाजी उसे गलत नहीं कहेंगे। वैसा माना जाय, तो भी स्वर्ग और नरक की वास्तविकताओं में जीवन की यहाँ की वास्तविकताओं का सादृश्य तो हो भी सकता है, पर वह स्थिति मृत्यु के पश्चात् की अनुभूति ही है, इसमें आशंका की कोई गुंजाइश नहीं है।

कुरान की नैतिक व्यवस्था

पंच महाव्रतों को, विनोबाजी ने अपने **'कुरान-सार'** में कुरान के आधार से, महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। 'कलौ दानं च नामं च', इस विचार का सतत प्रचार करनेवाले भूदान-प्रणेता विनोबाजी ने **'कुरान-सार'** में दान प्रकरण के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है।

सूद (ब्याज) को 'कुरान-शरीफ' ने नाजायज माना है। इस विषय पर जितने महत्त्वपूर्ण अवतरण मिले हैं, उन्हें विनोबाजी ने **'कुरान-सार'** में उद्धृत किया है। ब्याज पूर्णतः त्याज्य है, ऐसा ही विनोबा मानते हैं; पर उस विचार को कार्यान्वित करने के लिए आज की समाज-रचना बदलनी होगी, यह स्पष्ट ही है। ग्रामदान द्वारा जिस समाज-रचना की स्थापना के लिए विनोबा प्रयत्नशील हैं, वह ऐसी रचना है जिसमें ब्याज के लिए स्थान ही नहीं रहेगा। इस विषय में कुछ लोग बीच की राह निकालना चाहते हैं, और उस पर तरह-तरह के वाद खड़े करते हैं, पर हमारा स्पष्ट मत है कि 'कुरान शरीफ' में सभी प्रकार के ब्याज निषिद्ध माने गये हैं।

इस्लाम माने ईश्वर-शरणता

चयन करते समय कभी-कभी आयतों (वचनों) में से थोड़ा-सा अंश ही लेना आवश्यक लगता है, क्योंकि विषय से उसका उतना ही सम्बन्ध रहता है।

परंपराभिमानी मुसलमान भाई इस प्रकार आयत को तोड़ना पसंद नहीं करते। यह बात जब किसी ने विनोबा से कही, तो वे बोले–'देखो, इस्लाम का अर्थ है, शान्ति; हरिशरणता। यह जिसमें है, वह मुस्लिम है। यदि तुम शान्ति, हरिशरणता के उपासक हो, तो तुम भी मुस्लिम हो।'

विनोबा की यह तब्लीग–ईश्वर-निक़टता–कितनी प्यारी, हृदयस्पर्शी, और समवायी है! शान्ति के लिए प्रयत्न करना आज के युग की माँग है। वह हम सबका जीवनोद्देश्य होना चाहिए, यह स्पष्ट ही है। हरिशरणता, उस करुणामय की आज्ञा का पालन (रहीम की, रहमत की इताअत) शान्ति का 'सुलभ साधन' है, यह विनोबा के अनुभव की बात दीखती है।

'कुरान-सार' के विभाग

'कुरान-सार' में ९ खंड हैं–(१) ग्रन्थारम्भ, (२) ईश्वर, (३) भक्ति-रहस्य, (४) भक्त-अभक्त, (५) धर्म, (६) नीति, (७) मानव, (८) प्रेषित (रसूल) और (९) गूढ़-शोधन। पुस्तक में ३० अध्याय हैं और ९० प्रकरण।

१—ग्रन्थारम्भ

'ग्रन्थारम्भ में' मंगलाचरण (अलफातिहा) और ग्रंथ-गौरव (जलालते किताब), ऐसे दो अध्याय हैं। ग्रन्थ-गौरव अध्याय में ग्रन्थ-प्रकाश, ग्रन्थ-स्वरूप और ग्रन्थ-पठन-विधि, इस प्रकार तीन प्रकरण हैं।

२—ईश्वर

इसके बाद 'ईश्वर' खंड आरम्भ होता है। इसमें 'एक एवाद्वितीयः', 'देवता निषेध', ऐसे दो प्रकरण हैं। इसके उपरान्त 'प्रभु का स्वरूप ज्ञानमय' है। इसमें परमात्मा प्रकाश-स्वरूप और सर्वज्ञ, ऐसे दो प्रकरण आते हैं। इसके बाद उसकी करुणा का दर्शन कराया जाता है और उस 'दयामय' अध्याय में दयालु और ईश्वरीय देनें, ये दो प्रकरण हैं।

इसके उपरांत ईश्वर का अनन्त कर्तृत्व हमें समझाया गया है। 'कर्त्ता' अध्याय मे सृष्टि-कर्ता, 'ईश्वर की रचना और ईश्वरीय संकेत, इस प्रकार तीन प्रकरण किये गये हैं। इसके अनन्तर उस सर्वशक्तिमान ईश्वर की शक्ति का वर्णन आता है। उस 'सर्व-शक्ति' अध्याय में सर्वशक्तिमान, इच्छा-समर्थ और उसकी अवर्णनीयता का वर्णन है। फिर हम परम प्रभु के 'साक्षात्कार' की आकांक्षा रखते हैं, उसका 'नाम

स्मरण' करते हैं। इस खण्ड के बाद हम भक्ति-रहस्य के दूसरे खण्ड में प्रवेश करते हैं।

३—भक्ति-रहस्य

'भक्ति-रहस्य' खंड में भक्ति, सत्संगति और अनासक्ति, ऐसे तीन अध्याय हैं और 'भक्ति' में प्रार्थनोपदेश, सृष्टिकृत प्रार्थना, निष्ठा, त्याग-समर्पण, कसौटी एवं आश्वासन और धीरज, ये प्रकरण हैं। 'सत्संगति' अध्याय में सत्संग का ही प्रकरण है और 'अनासक्ति' में संसार के अनित्यत्व का भान और वैराग्य, ये दो प्रकरण हैं।

४—भक्त-अभक्त

इसके बाद भक्त का वर्णन आरंभ होता है। इस खंड में 'भक्त' और 'अभक्त', विधायक और निषेधक, ऐसा मिलकर, दोनों के वर्णन से विषय पूरा होता है। इसलिए इस भाग में ये दो अध्याय हैं।

भक्त के सुलक्षणों में उनके अनेक पहलू, उनकी प्रार्थनामयता, उनकी निष्ठा, सहनशीलता, अहिंसा-वृत्ति, दानशीलता का वर्णन देते हुए अन्त में उन्हें देवदूतों से जो आशीर्वाद प्राप्त होते हैं, उनका उल्लेख करके हम भी ऐसे आशीर्वाद की अपेक्षा रखें, ऐसी कामना की गयी है।

इसके बाद अभक्तों के अवलक्षण समझाये गये हैं। वे नास्तिक हैं, अविश्वासी हैं, भ्रान्त चित्तवाले, मोघकर्माण और नरकभाज होते हैं। उनका दर्शन विपरीत होता है। उनके कर्म कैसे विफल होते हैं, यह दिखाकर उनकी नारकीय दुर्गति का दृश्य सामने खड़ा किया जाता है।

इस प्रकार 'भक्त' तथा 'अभक्त' का लक्षण और कुलक्षण देकर, अन्वय और व्यतिरेक न्याय से, विधेयक और निषेधक दोनों पद्धतियों से, हमे पूरी जानकारी मिलती है।

५, ६—धर्म और नीति

अब धर्म विचार एवं नीति के दो खण्ड आरंभ होते हैं। 'धर्म' खण्ड में धर्म विचार है, जिसमे धर्म-निष्ठा, धर्म-सहिष्णुता और धर्म-विधि, ऐसे तीन प्रकरण हैं। इसके अनन्तर 'नीति' का खण्ड शुरू होता है। इसमें नीति विषयक पंच महाव्रत, नीति बोध और शिष्टाचार, ऐसे तीन प्रमुख विषय आये हैं।

पंचमहाभूतों का श्रीगणेश सत्य से होता है। सत्य के दो पक्ष हैं। एक तात्विक–सत्यासत्यविवेक की वृत्ति को आधार देनेवाली निष्ठा और दूसरा व्यावहारिक आचरणात्मक वाक्-शुद्धि है। इस वाक्-शुद्धि अध्याय में सत्य संघ, मंगलवाणी और अनिंदा, ऐसे तीन प्रकरण आते हैं। इसके आगे 'अहिंसा' का अध्याय शुरू होता है। इस अहिंसा अध्याय के प्रकरण हैं : (१) न्याय बुद्धि, (२) न्याय से क्षमा श्रेष्ठ, (३) अहिंसक निष्ठा, (४) सहयोग-वृत्ति, (५) दुर्जनों से असहयोग और (६) अनिवार्य प्रतिकार। इसके उपरांत अस्वाद और उसके उपरांत ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह व्रत आते हैं। 'अस्वाद' अध्याय में रसनाजय का एक प्रकरण आता है और 'ब्रह्मचर्य' में पावित्र्य ही एक प्रकरण है। अपरिग्रह के विषय को 'शुद्ध जीविका' का समावेशी नाम देकर उसमें अस्तेय, असंग्रह और दान, ऐसे तीन प्रकरण दिये हैं। असंग्रह में कृपणता का निषेध करते हुए, दान में दान-प्रवाह का गौरव किया है।

इसके पश्चात् सर्व-सामान्य सामाजिक नीति-बोध का वर्णन किया है। फिर शिष्टाचार की रूपरेखा बतायी है। नीति बोध करते हुए शिवशक्ति का पहले दर्शन करा कर फिर नीति-निर्देश का विस्तार से वर्णन किया है, यह भी ध्यान रखने की बात है।

७—मानव

अब आगे मानव की, मानवता की, विशेषताओं और विगुणताओं का वर्णन आता है। इस खण्ड में 'मानवता' का ही अध्याय है और उस अध्याय में मानव की विशेषता और उसकी दुर्बलता, उसका पापाभिमुखता और कृतघ्नता का विवेचन है। अन्त में एक प्रकरण में यह दिखाया है कि जो मानव मानवीय सज्जनता में विश्वास करता है वही 'आस्तिक' है और जिसका मानवीय सज्जनता में विश्वास नहीं है, वही 'नास्तिक' है। मानव के ऐसे दो प्रकार बताकर, **'कुरान-सार'-कार** ने इस विषय को समाप्त किया है। इस प्रकरण में बताया है कि मनुष्य शैतान के पंजे में किस प्रकार पड़ता है और परम प्रभु की ओर किस प्रकार आता है।

८—प्रेषित

यहाँ से अब 'प्रेषित' (पैगम्बर) खण्ड शुरू होता है। इस खण्ड में दो अध्याय हैं। (मुहम्मद)-'पूर्वप्रेषित' और 'मुहम्मद पैगम्बर'।

मुहम्मद-पूर्व प्रेषितों में प्रारम्भ में सभी रसूलों के सर्व-सामान्य सद्गुणों का वर्णन आया है–वे सर्व जनहिताय काम करते हैं और मनुष्यों में मनुष्यों की हैसियत से ही काम करते हैं। इसकी जानकारी देकर आगे उनकी गुण-विशिष्टताओं का वर्णन किया गया है। पाँच में चार प्रेषितों का यहाँ वर्णन किया है। कुरान के अन्य पूर्व-प्रेषितों का वर्णन नहीं किया है। ऐसे अनेक प्रेषित हो गये हैं, जिनका कुरान में उल्लेख नहीं है। ऐसे प्रेषितों के वचन आगे दिये हैं। ये कथाएँ क्यों कही जा रही हैं, इस विषय का उपक्रम करके पंचरसूलों में से इन चार का उल्लेख इस अध्याय में आता है-नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा। ईसा के साथ उनके गुरु जॉन और उसके शिष्यों की विशेषताओं का भी वर्णन आया है। यह प्रकरण समाप्त होने के बाद मुहम्मद पैगंबर का अध्याय शुरू होता है।

मुहम्मद पैगंबर

इस अध्याय में सबसे पहला प्रकरण है–मुहम्मद को ईश्वर का साक्षात्कार। अल्लाह से 'वह्य' पाकर, तालीमे-गैबी पाकर, प्रज्ञान पाकर, बोध से बोधित होकर मुहम्मद ईश्वर के आदेश से धर्म की घोषणा करते हैं। इस धर्म के अनुष्ठान के कारण उनमें जिस गुण-संपदा का आविष्कार हुआ, उन गुणों का कीर्तन करते हुए अगले प्रकरण में उनके मिशन की, जीवन-कार्य की रूपरेखा बतायी गयी है। 'उनके लिए आशीर्वाद माँगो'–इस ईश्वरीय आदेश का स्मरण दिलाकर ग्रंथ-संपादक ने इस अध्याय को समाप्त किया है।

९—गूढ़-शोधन

इसके बाद अंतिम खंड 'गूढ़-शोधन' आता है। इसमें 'तत्त्वज्ञान', कर्म-विपाक' और 'साम्पराय' ऐसे तीन अध्याय हैं। 'तत्त्वज्ञान' में जगत्, जीव और अन्तर्यामी का उल्लेख है। 'कर्मविपाक' में (१) कर्मविपाकविषयक मूलभूत श्रद्धा, (२) कर्मविपाक अपरिहार्य और (३) मृत्यु के बाद भी कर्म टलता नहीं, ये तीन प्रकरण हैं। 'साम्पराय' में परलोक, पुनरुत्थान अटल है, इसका विश्वास दिला कर अन्तिम दिवस की जानकारी दी है।

इसके बाद स्वर्ग-नरकादि-व्यवस्था समझा कर शांति मंत्र के द्वारा इस स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए तथा ईश्वर की भक्त-मंडली में सम्मिलित होने के भव्य वातावरण का दर्शन करनेवाला प्रकरण आया है। अन्त में स्वर्ग का लाभ और उससे

प्रभु कृपा का अनन्त विस्तार हमारे सामने उपस्थित किया जाता है : "मेरे पास स्वर्ग से भी अत्यधिक है"–**'कुरान शरीफ'** के इस प्रभुप्रसाद को बाँटते हुए **'कुरान-सार'** के संपादक ने हम पर बहुत उपकार किये हैं।

स्पष्ट है कि **'कुरान-सार'** में 'कुरान शरीफ' के केवल अवतरण हैं। पर इन अवतरणों की प्रकरण-रचना देखकर हम स्तम्भित हो जाते हैं और यही उद्‌गार हमारे मुँह से अनायास निकल जाता है कि "हे प्रभो ! तू जिस पर अपनी कृपा करना चाहता है, उस पर करता है।" हम भी प्रभु से प्रार्थना करें कि वह दयामय प्रभु हम पर भी अपनी कृपा की वर्षा करे !

आयतों का विवरण

'कुरान-सार' में 'कुरान-शरीफ' की कुल १०६५ आयतें ली गयी हैं। नौ खण्डों में उन्हें इस प्रकार विभाजित किया है : ग्रन्थारम्भ में २९, ईश्वर में २३७, भक्ति-रहस्य में ११०, भक्त-अभक्त में १०४, धर्म में ३३, नीति में २०९, मानव में ६९, प्रेषित में १५०, गृह्ढ-शोधन में १२४। कुल ४०० परिच्छेद हैं। एक ही आयत जिनमें हैं, ऐसे परिच्छेद १९९ हैं। दो आयतोंवाले ६७, तीनवाले ४४, चारवाले २३, पाँचवाले २४, छहवाले १३, सातवाले ७, आठवाले ६, नौवाले ३, दसवाले ३, ग्यारहवाले २, बारहवाले ३, तेरह आयतोंवाला १, चौदहवाला १, पन्द्रहवाला १, सत्रहवाला १, अठारहवाला १ और इक्कीस आयतोंवाला भी १ परिच्छेद (विषय-भाग) है।

चयन में दृष्टि

आयतें लेते हुए कभी-कभी पूरी आयत लेने के बजाय, आयत का अंश भी ले लिया गया है। जिस विषय के अन्तर्गत आयत ली गयी है, वह विषय उस आयत में जितना है, उतनी ही आयत ली है। जब विषयवार आयतों का चुनाव करना होता है, तो ऐसा करना ही पड़ता है और जिन किन्हीं सज्जनों ने 'कुरान शरीफ' का इस प्रकार चयन और सम्पादन किया है, सबने ऐसा ही किया है।

'कुरान शरीफ' में समाज-विषयक या पंथ-विषयक जो कायदे-कानून आये हैं, उन्हें विनोबाजी ने चयन में नहीं लिया है। उसी प्रकार कथाएँ, जो विषय सुस्पष्ट करने के लिए विस्तार से ग्रन्थों में आया ही करती हैं, उन्हें भी उन्होंने छोड़ दिया है। इसके सिवा जो ऐतिहासिक निर्देश 'कुरान शरीफ' में आये हैं, या जो बातें अब

इतिहास के पृष्ठों में समा गयी हैं, उन्हें भी उन्होंने कुरान शरीफ से **'कुरान-सार'** में नहीं उतारा है।

अभी-अभी एक भाई ने, जो कि दार्शनिक दृष्टि से अपने को 'नास्तिक' मानते हैं, विनोबाजी से प्रश्न पूछा : "आप आजकल अध्यात्म का विशेष रूप से उल्लेख किया करते हैं। इस अध्यात्म से आपका क्या मतलब है?"

विनोबाजी ने जवाब दिया, उसका आशय इस प्रकार है :

(१) सर्वोच्च नैतिक मूल्यों में तथा नैतिक जीवन में श्रद्धा, (२) जीवमात्र एक हैं, इस ज्ञान में एवं भान में श्रद्धा और (३) मृत्योपरांत जीवन के सातत्य में श्रद्धा।

उन्होंने फिर पूछा : 'क्या विश्व के सभी धर्म इन बातों को मानते हैं?"

विनोबाजी ने उत्तर दिया, 'जी हाँ'।

विनोबाजी ने जिन धार्मिक ग्रन्थों का चयन और सम्पादन किया है, उनमें इस दृष्टि के कारण अध्यात्म अर्थात् दर्शन, भक्ति, नीति और भक्तों का और भक्तों के भगवान् का सद्गुण-संकीर्तन होता है। भक्तों के विशेष अनुभवों का दिग्दर्शन भी उनमें होता है। **'कुरान-सार'** भी इन्हीं विषयों का संपुट है, यह बात स्पष्ट है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

कुरान के अध्ययन के समय विनोबाजी ने जिन ग्रन्थों का अध्ययन किया, उनकी जानकारी मिलनी कठिन है, क्योंकि विनोबाजी स्वयं उस विषय में कुछ कहेंगे, यह आशा हम रख नहीं सकते। उनके आश्रम के ग्रन्थालयों में ही जो ग्रन्थ इस विषय पर होंगे, वे सब उन्होंने देखे हैं, यह स्पष्ट ही है। जो ग्रन्थ पढ़कर उन्होंने ग्रन्थ-स्वामियों को लौटा दिये होंगे, उन्हें हम कैसे जानें? उस विषय में हम कुछ भी नहीं कह सकते। पर **'कुरान-सार'** का संकलन करते समय भूदान-पदयात्रा में जिन ग्रन्थों का उपयोग उन्होंने किया, उनकी सूची नीचे दी जा रही है। विनोबाजी के मन में शब्दों का जो अर्थ है, उस अर्थ के अनुकूल अर्थ है या नहीं यह देखने के लिए जिन-जिन ग्रंथों का उपयोग हुआ, वे ग्रंथ निम्न प्रकार हैं :

कुरान-शरीफ के अंग्रेजी अनुवाद और भाष्य

१–एम० पिक्थाल का अनुवाद। २–पामर का अनुवाद।
३–युसुफ अली का अनुवाद। और ४–मौलवी शेरअली का अनुवाद।

उर्दू अनुवाद और भाष्य

१–कुरआनुल्मजीद–हजरत शेखुल्हिंद मौलाना मोहम्मद हसन और हजरत मौलाना शबीर अहमद उस्मानी (देवबंदी)।

२–कुरानुल् हकीम–शाह रफीउद्दीन साहब 'देहलवी' और मौलाना अशरफअली साहब थानवी।

३–तफसीरे सगीर–हजरत मिरजा बशीरुद्दीन अहमद साहब इमाम जमायते अहमदिया।

४–हमाइल शरीफ–शमसुलउलमा जनाब मौलवी हाफिज नजीर अहमद खां साहब।

अंग्रेजी सन्दर्भ ग्रन्थ–'कन्कोर्डन्स एण्ड ग्लौसरी आफ कुरा़न', बनारस के खिश्चियन मिशन द्वारा प्रकाशित।

उर्दू सन्दर्भ ग्रन्थ–'लुगातुल कुरान', ६ जिल्दें। प्रकाशक-नदवतुल मुसन्नफीन्', जामा मस्जिद, देहली।

मेरी नगण्य सेवा

'रूहुल कुरान' (**'कुरान-सार'** की मूल अरबी पुस्तक) के इस कार्य में प्रस्तुत लेखक भी कई मास तक जो मुन्शीगीरी या मुनीमी कर पाया है, यह ईश्वर की मुझ पर अत्यन्त कृपा है।

सन् १९४० में विनोबाजी की सूचना के अनुसार मैंने जेल में 'कुरान-शरीफ' अंग्रेजी में पढ़ी थी। सन् १९५९ में निर्मला ताई देशपांडे के साथ मैंने फिर कुरान पढ़नी शुरू की। मुझे अरबी आती नहीं थी। उर्दू आती थी। शुरू में शब्दार्थ के सहारे और फिर अनुवाद के ही सहारे 'कुरान-शरीफ' कुछ-कुछ मेरी समझ में आने लगी। बाद में पाँव की बीमारी से जब बहुत बीमार हो गया, तब बिस्तर पर पड़ा-पड़ा मैं 'कुरान' पढ़ने लगा।

उसके पश्चात् एक बार जब विनोबाजी से मेरी मुलाकात हुई और कुरान का प्रसंग चला तो मैंने उन्हें बताया कि मैंने भी 'कुरान' के नौ-दस प्रकरण पढ़ लिये हैं। तब विनोबाजी ने कहा–"फिर पूरा ही कर लो !"

तब मैंने 'कुरा़न-शरीफ' पूरी कर ली और विनोबाजी को लिख दिया कि मैंने

'कुरान' पूरी कर ली। उन्होंने मुझे लिखा कि वे 'कुरान-शरीफ' का चयन कर रहे हैं। उस कार्य में यदि मैं कुछ समय दे सकूँ, तो उस बारे में मैं सोचूँ।

इस धर्म-कार्य में योग करना मेरा धर्म ही था। मैंने "हाँ" भरी और उनके पास पहुँच कर काम में लग गया।

मराठी भाषा की जानकारी के साथ-साथ 'कुरान-शरीफ' की अरबी जानना, उस पर की हुई उर्दू, अंग्रेजी टीकाओं आदि को समझाये जाने पर समझ सकना, इतनी थोड़ी-सी योग्यता लेकर मैं उनकी सेवा में पहुँच गया। उन्होंने भी शायद "पल्लू में पड़ा और पवित्तर हुआ" मानकर मेरी यह नगण्य सेवा स्वीकार कर ली।

जाको राखे साँइयाँ !

प्रकाशन के लिए 'कुरान-सार' की मूल प्रति लेकर मैं वाराणसी जा रहा था। रेलगाड़ी में खूब भीड़ थी। हमने पुस्तकों की पेटी रेल में रखी और मैं सवार हो ही रहा था कि गाड़ी खुल गयी। पेटी को एक भाई ने पकड़ रखा था, पर वह उनसे संभली नहीं। पेटी वहाँ से खिसकी और पटरी, गाड़ी का पहिया और प्लेटफार्म का पत्थर, इसके बीच में पचास कदम तक रगड़ते-रगड़ते चली। यहाँ तक कि बाद में वह पेटो पहिये के नीचे आ गयी। अगर जंजीर न खींची जाती, तो शायद ट्रेन को दुर्घटनाग्रस्त भी होना पड़ता।

हम सबने समझा कि 'कुरान-शरीफ' की मूल प्रति और अन्य पुस्तकों का तो पटरी पर भूसा ही बन गया होगा और 'कुरान-सार' का काम तमाम हो गया होगा। प्रभु की कृपा तो देखिये कि किताबें पटरी के बाहर फेंकी पड़ी थीं और पेटी गाड़ी तले आ गयी थी। पेटी तो नेस्तनाबूद हुई, पर पुस्तकें और कापियाँ **'कुरान-सार'** की मूल प्रति और उसका उर्दू अनुवाद सब कुछ एक-एक पन्ना सही सलामत मिला! 'कुरान-सार' की पांडुलिपि पर से रेलगाड़ी का पहिया गुजरा, मगर ऐसे हिस्से पर से जिस पर कोई अक्षर नहीं थे। अतः पांडुलिपि सुरक्षित रही। 'कुरान-शरीफ' की आयतें दुहराते हुए मैं मन ही मन कहने लगा–

'हे परमेश्वर ! बुराई मेरी, भलाई तेरी।'

'तू ही मारता है, तू ही जिलाता है।'

–अच्युतभाई देशपाण्डे

जुलाई, १९६२
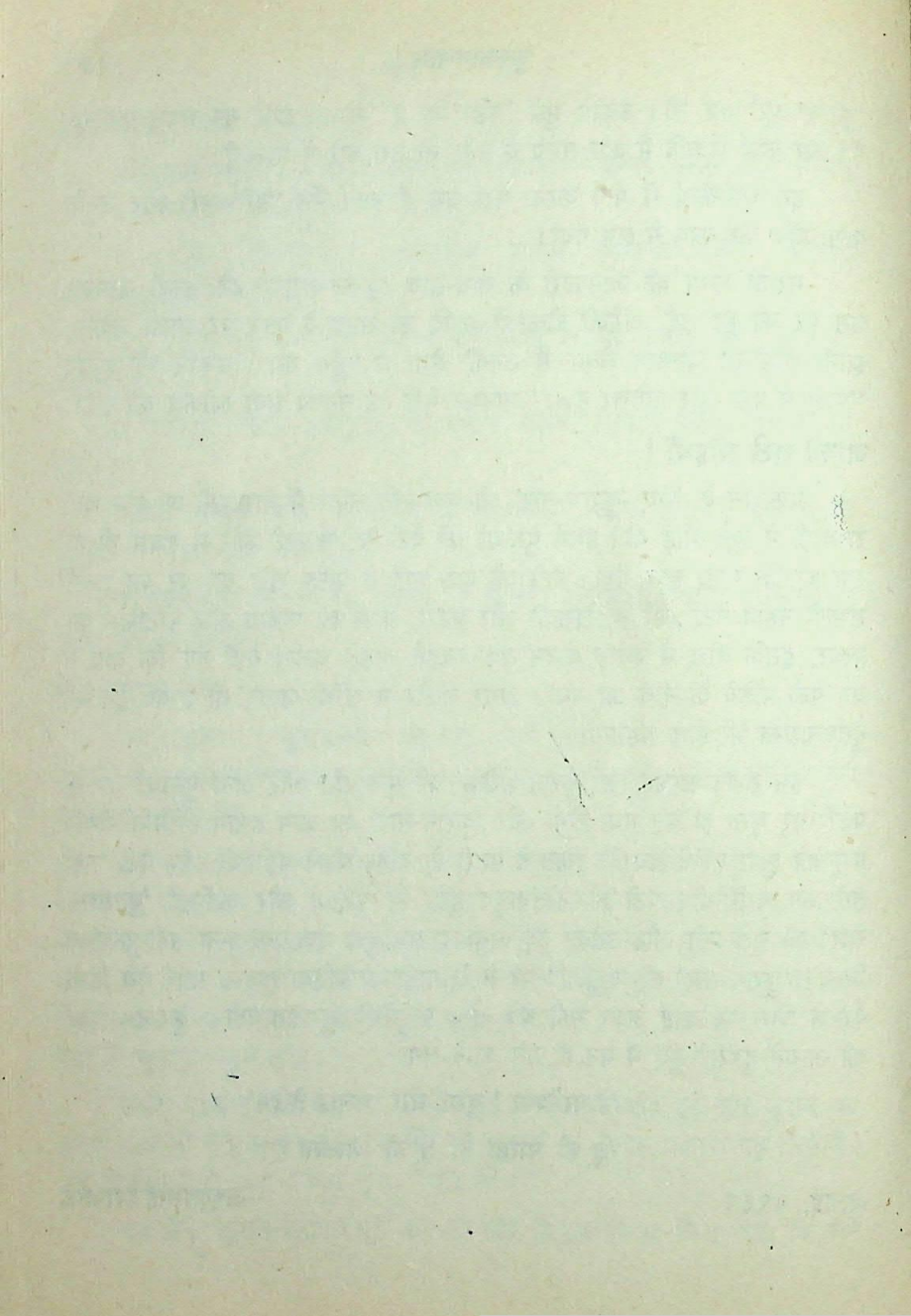
खण्डों और प्रकरणों की रचना

'कुर्आन-सार' के ९ खण्डों तथा ९० प्रकरणों के नाम कंठ करने के लिए निम्नलिखित श्लोक सहायक सिद्ध होंगे। यह संस्कृत-रचना विनोबाजी की है।

खण्ड-नाम

कुर्आन-सार के खण्डों का जो अनुक्रम निश्चित किया गया है, वह सूरह बक्र की प्रारम्भिक पाँच आयतों (वचनों) के क्रम के समान है।

१ आरम्भे, २ तदनुध्यानं, ३ भक्त्या, ४ भक्तैर्निषेवितम्।
७ धर्म ६ नीति, ७ मनुष्याणां, ८ प्रेषितै ९ गूढशोधनम्॥*

प्रकरण नाम

१ [१] सप्तकं, [२] सारतत्त्वं, च, [३] सरलं तत् [४] शुचिः पठेत्।

२ [५] एक एवा [६] द्वितीयश्च, [७] प्रकाशो, [८] ज्ञानमेव च,
[९] दयालुर, [१०] दानवान्, [११] कर्ता, [१२] सुरूपः, [१३] सुप्रकेतनः।
[१४] सर्वशक्तिः [१५] स्वतंत्रेच्छो, [१६] मनोवाचामगोचरः,
[१७] नामभिर्घोषित [१८] श्चाविः, [१९] प्रार्थनीयः पुनः पुनः।

३ [२०] उपासनोपदिष्टेयं, [२१] या धृता भौतिकैरपि,
[२२] निष्ठा, [२३] त्याग [२४] स्तपश्चर्या, [२५] धैर्यमद्भक्तिलक्षणम्।
[२६] सत्संगः, [२७] क्षणिको भावो, [२८] वैराग्यं च तदुद्भवम्।

४ [२९] लक्षण्याः, [३०] प्रार्थनावन्तो, [३१] नैष्ठिका, [३२] धैर्यशालिनः,
[३३] अहिंसका ये मद्भक्ता, [३४] मद्दूतैरभिरक्षिताः।
[३५] नास्तिका, [३६] भ्रान्त-चित्तास्तु, [३७] मोधा, [३८] निरयगामिनः।

५ [३९] धर्म-निष्ठा, [४०] सहिष्णुत्वं, [४१] लोकसंग्रह-योजना।

* प्रारम्भ[१] में मैं उस ईश्वर[२] का ध्यान करता हूँ, जिसकी भक्ति[३] कर भक्तों[४] ने जीवन-साफल्य पाया है।

जिसने धर्म[५] एवं नीति[६] की मानव[७] को शिक्षा दी है और प्रेषितों[८] के द्वारा गूढ़-शोधन[९] करवाया है।

६ ४२ सत्य-धीरो, ४३ वदेद्‌ वाक्यं सत्यं, ४४ शिवं ४५ मनिंदनम्‌,
४६ न्यायं रक्षेत्‌, ४७ परं न्यायात्‌ करुणैव गरीयसी।
४८ अहिंसायां दृढश्रद्धा, ४९ स्नेहेन सहजीवनम्‌,
५० पापैरसहकारश्च, ५१ प्रतीकारश्च संयतः।
५२ अस्वादो, ५३ वासनाशुद्धि ५४ रस्तेयं ५५ मित–संग्रहः,
५६ दानं, ५७ शिवानुसन्धानं, ५८ नीति ५९ राचार–पालनम्‌।
७ ६० वैशेष्येऽपि मनुष्याणां, ६१ दौर्बल्यं, ६२ पाप-वश्यता,
६३ निर्मातरि कृतघ्नत्वं, ६४ नास्तिकास्तिकयोर्भिदा।
८ ६५ साधारणा, ६६ मनुष्यास्तु, ६७ धीरा ये, ६८ तत्स्मृतिः शुभा,
६९-७२ अत्र प्रकाशिताः केचित्‌, ७३ सन्त्यन्येऽप्यप्रकाशिताः।
७४ प्रातिभं, ७५ चेश्वरादेशो, ७६ घोषणा, ७७ गुण-संश्रयः,
७८ कार्यं पञ्चविधं यस्य, ७९ स चाशीर्वादमर्हति।
९ ८० विश्वं, ८१ जीवं, ८२ परात्मानं नैवं तर्केण योजयेत्‌,
८३ श्रद्दधानः संविधानं, ८४ विपाकं, ८५ मरणोत्तरम्‌।
८६ समुत्तिष्ठ, ८७ दिनं पश्य, ८८ विविच्य विविधा गतीः
८९ तुष्टात्मन्‌ प्रविशोद्यानं, ९० प्राप्नुहि प्रेम चैश्वरम्‌।

●

खण्ड १ : ग्रन्थारम्भ

१ मंगलाचरण

१ मंगलाचरण

१ अल्फ़ातिहा

१ प्रारम्भ करता हूँ परमात्मा के नाम से, जो परम कृपालु, अतीव करुणावान् है।

२ प्रत्येक स्तुति परमात्मा के ही लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है।

३ परम कृपालु, अतीव करुणावान्,

४ अन्तिम दिन के स्वामी,

५ हे परमात्मन्, तेरी ही हम भक्ति करते हैं और तुझसे ही याचना करते हैं।

६ हमें सीधा रास्ता दिखा।

७ रास्ता उन लोगों का, जिनके ऊपर तूने दया की है, न कि उनका, जिन पर तेरा प्रकोप हुआ; और न उनका, जो भ्रमित हुए।

१.१–७

२ ग्रन्थ-गौरव

२ ग्रन्थ-प्रकाश

● २ ग्रन्थ कल्याणमार्गियों के लिए

१ अलिफ़् लाम् मीम्।

२ यह वह ग्रन्थ है, जिसमें कोई सन्देह नहीं। कल्याणमार्गियों का मार्गदर्शक है।

३ जो अव्यक्त पर श्रद्धा रखते हैं और प्रार्थना की प्रतिष्ठापना करते हैं और हमने* जो कुछ उन्हें दिया है, उसमें से हमारी राह में खर्च करते हैं।

४ और श्रद्धा रखते हैं उस पर, जो तुझ** पर उतारा गया और तुझसे पहले उतारा गया और अन्तिम (न्याय) पर विश्वास रखते हैं।

५ ये लोग अपने प्रभु के दिखाये मार्ग पर हैं और यही लोग सफल हैं।

२.१-५

● ३ दुहरे वचन (मौलिक तथा लाक्षणिक)

१ वही है, जिसने तुझ पर ग्रन्थ उतारा। उसमें कुछ वचन स्पष्ट हैं, वे ही ग्रन्थ का मूल हैं और दूसरे लाक्षणिक हैं। सो जिनके दिलों में कुटिलता है, वे भ्रम फैलाने के लिए और यथार्थता की टोह लगाने के लिए लाक्षणिक वचनों के पीछे पड़ते हैं। वस्तुतः इनकी यथार्थता परमात्मा के सिवा कोई नहीं जानता। ....

३.७

● ४ सर्वोत्तम सार ग्रहण करें

१ जो लोग इन वचनों को सुनते हैं और उनमें से सर्वोत्तम पर चलते हैं, उन्हींको परमात्मा ने मार्ग दिखाया है और वे ही लोग बुद्धिमान् हैं।

३९.१८

५ खुला बोध

१ निस्सन्देह यह एक सदुपदेश है,

२ जो चाहे, उसको विचारे।

८०.११-१२

---

* हम, मैं = परमात्मा। ** तू = मुहम्मद

६ शास्त्र प्रकट करना होता है, छिपाना नहीं

१ लोगों के लिए तुम इस ग्रन्थ को अवश्य प्रकट करोगे, इसे छिपाओगे नहीं।

३.१८७

३ ग्रन्थ-स्वरूप

● ७ ग्रन्थ--मातृभाषा में

१ यदि हम इसे अरबी के अतिरिक्त अन्य भाषा का कुरान बनाते, तो कहते कि इसके वचन खोलकर क्यों नहीं समझाये गये? यह क्या? परायी भाषा और अरबी लोग! कह : यह श्रद्धावानों के लिए प्रबोधन एवं शमन है। ...

४१.४४

८ सरल कुरान

१ हमने कुरान को समझने के लिए सरल बनाया है, तो है कोई सोचनेवाला?

५४.१७

९ कवि का शब्द नहीं

१ कसम खाता हूँ (गवाहा है) उस चीज की, जो तुम देखते ही

२ और उस चीज की, जो तुम नहीं देखते

३ कि यह कुरान माननीय दूत का कथन है।

४ किसी कवि का कहना नहीं, किन्तु तुम लोग कम ही श्रद्धा रखते हो।

५ और न यह किसी देवज्ञ की बात है, किन्तु तुम कम ही ध्यान देते हो।

६ यह उतारा हुआ है, विश्व-प्रभु का।

६९.३८-४३

१० हृदय को सन्तोष देनेवाला

१ परमात्मा ने सर्वोत्तम कथन अर्थात् ऐसा ग्रन्थ उतारा, जो परस्पर मिलता-जुलता एवं दुहराये जानेवाला है। जिससे उनके शरीर थर्रा उठते हैं, जो

अपने प्रभु से डरते हैं। फिर उनके शरीर और उनके अन्तःकरण ईश्वर-स्मरण से मृदु होते हैं।

३९.२३

● ११ आवर्तनीय अल्फातिहा

१ निस्सन्देह हमने तुम्हें दुहराये जानेवाले सात वचन दिये और महान् कुरान दिया।

१५.८७

४ पठन-विधि

● १२ शुचिर्भूत होकर

१ निस्सन्देह यह आदरणीय कुरान है।

....

२ इसे वही स्पर्श करते हैं जो शुचिर्भूत होते हैं।

५६.७७, ७९

१३ ईश्वराश्रयेण पठितव्यम्

१ जब तू कुरान पढ़ने लगे, तो परमात्मा की शरण माँग, बहिष्कृत शैतान से बचने के लिए।

१६.९८

खण्ड २ : ईश्वर

३ एक

५ एक एवाद्वितीयः

● १४ ईश्वर एक है

१ कह : ईश्वर एक है।

२ ईश्वर निरपेक्ष है।

३ वह न जनिता है, न जन्य।

४ और न कोई उसके समान है।

११२.१-४

● १५ ईश्वर को पुत्र होना शोभा नहीं देता

१ लोग कहते हैं कि ईश्वर को पुत्र है।

२ तुम एक भयंकर बात कह रहे हो।

३ जिससे आकाश फट जाय और पृथ्वी खण्ड-ख़ण्ड हो जाय और पर्वत चूर-चूर होकर गिर जाय,

४ कि ये लोग कहते हैं कि परमात्मा को पुत्र है

५ और कृपालु को यह शोभा नहीं देता कि वह किसीको पुत्र माने।

१९.८८-९२

१६ भक्तवृन्दों की सौगन्ध

१ गणसज्जित,

२ विद्रावक

३ तथा स्मरण-पठनशीलों की सौगन्ध।

४ निस्सन्देह तुम्हारा भजनीय एक है।

५ वह प्रभु है, आकाश एवं पृथ्वी का और उनमें जो वस्तुएँ हैं, उन सबका और उदय-स्थलों का।

३७.१–५

१७ यीशु का साक्ष्य

१ जब परमात्मा कहेगा : हे मरियम के बेटे यीशु, क्या तूने लोगों को कहा था कि मुझे और मेरी माँ को परमात्मा के अतिरिक्त दो उपास्य मानो। (यीशु) कहेगा : तू पवित्र है, मेरे लिए शोभनीय नहीं कि वह बात कहूँ जिसका मुझे अधिकार नहीं। यदि मैंने कहा होगा, तो तू उसे अवश्य जानता होगा। तू जानता है, जो कुछ मेरे मन में है और जो कुछ तेरे मन में है, वह मैं नहीं जानता। निस्सन्देह तू ही अव्यक्त का ज्ञाता है।

२ तूने मुझे जो आज्ञा दी, केवल वही मैंने उनसे कही कि परमात्मा की भक्ति करो, जो मेरा प्रभु है और तुम्हारा प्रभु है और जब तक मैं उनके बीच रहा, उनका साक्षी रहा। फिर जब तूने मुझे उठा लिया, तो तू ही उनका निरीक्षक था और तू ही प्रत्येक वस्तु का साक्षी है।

३ यदि तू उनको दण्ड दे, तो वे तेरे दास ही हैं और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो निःसंशय तू ही सर्वजित् और सर्वविद् है।

५.११९–१२१

● १८ अ-त्री

१ हे ग्रन्थवन्तो, अपने धर्म के विषय में अत्युक्ति न करो और परमात्मा के विषय में सत्य के अतिरिक्त कुछ मत कहो। निस्सन्देह, यीशु ख्रीष्ट मरियम का बेटा परमात्मा का प्रेषित है और उसका शब्द है, जिसे उसने मरियम की ओर भेजा और परमात्मा की ओर से संचरित प्राण है। सो परमात्मा और उसके प्रेषितों पर श्रद्धा रखो और न कहो कि 'तीन' हैं। इससे परावृत्त हो जाओ। तुम्हारे लिए ठीक होगा। निस्सन्देह परमात्मा ही

एकमेव भजनीय है। वह पवित्र है, इससे परे है कि उसको पुत्र हो। उसीका है, जो कुछ पृथ्वी एवं आकाशों में है। और रक्षण में परमात्मा पूर्ण समर्थ है।

४.१७१

● १९ न तत्र सूर्यो भाति

१ हम इब्राहीम को इसी प्रकार आकाशों एवं पृथ्वी का अपना आधिपत्य दिखाने लगे, जिससे वह विश्वास करनेवालों में से हो जाय।

२ फिर जब उस पर रात्रि ने अंधकार फैलाया, तो उसने एक तारा देखा। बोला : यह है मेरा प्रभु ! फिर जब वह अस्त हो गया, तो बोला : मैं डूबनेवालों को पसन्द नहीं करता।

३ फिर जब चमकता हुआ चन्द्रमा देखा तो कहा, यह है मेरा प्रभु ! फिर जब वह लुप्त हो गया, तो कहा यदि मेरा प्रभु मुझे मार्ग न दिखाये, तो निश्चय ही मैं भ्रमितों में से हो जाऊँगा।

४ फिर जब उसने दीप्तिमान् सूर्य को देखा, तो कहने लगा : यह है मेरा प्रभु। यह सबसे प्रचण्ड है। फिर जब वह अस्तंगत हुआ, तो बोल उठा : हे मेरे लोगो ! जिन्हें तुम (ईश्वर का) भागीदार ठहराते हो, उनसे मैं मुक्त हूँ।

५ निश्चय ही मैंने एकाग्र हो अपना मुख उसीकी ओर मोड़ दिया है, जिसने आकाश एवं भूमि बनायी है और मैं विभक्तों में से नहीं हूँ।

६.७५–७९

● २० सूर्य-चन्द्र-निर्माता को प्रणिपात करो

१ प्रणिपात न करो सूर्य को और न चन्द्र को, अपितु प्रणिपात करो परमात्मा को, जिसने उन्हें उत्पन्न किया; यदि तुम परमात्मा की ही भक्ति करते हो।

४१.३७

६ देवता-निषेध

२१ यदि अनेक देवता होते

१ परमात्मा ने किसीको पुत्र नहीं ठहराया और न उसके साथ कोई अन्य भजनीय है, यदि ऐसा होता, तो प्रत्येक भजनीय देवता अपनी निर्मित वस्तु पृथक् कर ले जाता और एक-दूसरे पर आक्रमण कर देता। परमात्मा उनकी कथित बातों से बहुत निराला है।

२३.९१

२२ अनेक मालिकों का गुलाम

१ परमात्मा ने एक दृष्टान्त दिया कि एक मनुष्य है, जिसके कई झगड़ालू मालिक हैं और एक मनुष्य पूरा एक का ही है। क्या दृष्टान्त में दोनों एक समान हैं? सारी स्तुति परमात्मा के लिए है, किन्तु बहुत-से लोग समझते नहीं।

३९.२९

● २३ मकड़ी का घर

१ जिन लोगों ने परमात्मा के अतिरिक्त अन्य संरक्षक चुने हैं, उन लोगों की उपमा मकड़ी की-सी है। उसने एक घर बना लिया, किन्तु इस बात में सन्देह नहीं कि सब घरों में कमजोर घर मकड़ी का घर है। अरे, यदि ये लोग समझते ! २९.४१

● २४ विभक्ति और उसका समर्थन

१ स्मरण रखो, शुद्ध भक्ति परमात्मा के ही लिए है और जिन लोगों ने परमात्मा के अतिरिक्त और संरक्षक बना रखे हैं (और कहते हैं कि) हम तो उनकी भक्ति केवल इस कारण करते हैं कि वे हमें परमात्मा के समीप पहुँचा दें। निस्सन्देह परमात्मा उनके बीच उस वस्तु के सम्बन्ध में निर्णय कर देगा, जिसके विषय में वे विरोध कर रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि परमात्मा उसको मार्ग नहीं दिखाता, जो झूठा और सत्यद्रोही है।

३९.३

२५ परमात्मा की दोनों शक्तियाँ देवता में नहीं

१ पूछ : तुम्हारे भागीदारों में कोई ऐसा है, जो पहली बार उत्पन्न करता है, फिर दोबारा उत्पन्न करता है? कह : परमात्मा पहली बार उत्पन्न करता है, फिर दोबारा उत्पन्न करता है, तो तुम कहाँ उलटे फिरे जाते हो!

२ पूछ : तुम्हारे भागीदारों में कोई ऐसा है, जो सत्य का मार्ग दिखाये? कह दे : परमात्मा सत्य का मार्ग दिखलाता है। फिर जो सत्य का मार्ग दिखलाता है, वह अनुसरण करने के अधिक योग्य है या वह कि जो बिना बतलाये स्वयं ही मार्ग न पाये? तो तुमको हुआ क्या है? कैसा निर्णय करते हो?

५०.३४–३५

२६ देवता मक्खी भी नहीं उड़ा सकते

१ लोगो, एक दृष्टान्त दिया जाता है, उसे कान लगाकर सुनो। परमात्मा के अतिरिक्त तुम जिन्हें पुकारते हो, वे कदापि एक मक्खी भी नहीं बना सकेंगे, यद्यपि उसके लिए सब इकट्ठा हो जायँ; और यदि मक्खी उनसे कुछ छीन ले जाय, तो वे उसको उससे छुड़ा नहीं सकते। कैसे दुर्बल हैं ये याचक तथा याच्य!

२२.७३

४ ज्ञानमय

७ परमात्मा प्रकाश-स्वरूप

२७ ईश्वरीय प्रकाश

१ परमात्मा आकाशों एवं भूमि का प्रकाश है, इस प्रकाश का दृष्टान्त ऐसा है कि जैसे एक आला है, उसमें एक दीपक है, दीपक शीशे में है। शीशा मानो एक चमकता हुआ तारा है,(दीपक) प्रज्वलित किया जाता है मंगलप्रद वृक्ष अर्थात् जैतून से, जो न पौर्वात्य है, न पाश्चिमात्य। निकट

है कि उसका तेल प्रज्वलित हो जाय, चाहे उसे अग्नि न छुये। प्रकाश पर प्रकाश। परमात्मा जिसको चाहता है, अपने प्रकाश का मार्ग दिखलाता है और परमात्मा लोगों के लिए दृष्टान्तों का वर्णन करता है और परमात्मा सर्वज्ञ है।

२ (यह दीपक ऐसे) घरों मैं (है), जिनको ऊँचा करने की और जिनमें परमात्मा के नाम-स्मरण की परमात्मा ने आज्ञा दी है। वहाँ प्रातः-सायं उसका स्मरण करते हैं।

३ वे लोग, जिन्हें ईश्वर-स्मरण, नियमित प्रार्थना तथा नित्य दान से न व्यापार असावधान करता है, न क्रय-विक्रय; वे उस दिन से डरते हैं, जिस दिन, हृदय और आँखें उलटायी जायँगी।

४ जिससे कि परमात्मा उन्हें उनके कर्मों का उत्तम-से-उत्तम प्रतिफल (बदला) दे और अपने वैभव में से उनको विपुलता दे। और परमात्मा जिसे चाहता है, अगणित देता है।

५ और जो लोग श्रद्धाहीन हैं, उनकी कृतियाँ ऐसी हैं, जैसे अरण्य में मृगजल, जिसे प्यासा पानी समझता है। यहाँ तक कि जब वह उसके पास आता है, तो कुछ नहीं पाता और पाता है ईश्वर को अपने पास। फिर उसने उसका लेखा पूरा कर दिया और ईश्वर शीघ्र हिसाब लेनेवाला है।

६ या जैसे अन्धकार एक गहन सागर में, जिस पर छायी हुई है लहर, उस लहर पर एक और लहर और लहर पर मेघ। अन्धकार पर अन्धकार! अपना हाथ जब बाहर निकालता है, तो देख नहीं पाता। और जिसे परमात्मा ने प्रकाश नहीं दिया, उसके लिए कोई प्रकाश ही नहीं।

२२.३५-४०

८ सर्वज्ञ

● २८ ईश्वर सर्वहृदय-साक्षी—वरुण

१ सावधान ! वे अपने वक्ष-स्थल को सिकोड़ते हैं, जिससे कि परमात्मा से

छुपायें ! सुनो, जिस समय वे अपने कपड़े ओढ़ते हैं, ईश्वर जानता है, जो कुछ वे छिपाते हैं और जो कुछ वे प्रकट करते हैं। निस्सन्देह वह अन्तःकरण के रहस्यों से अनभिज्ञ है।

२ भूमि पर चलनेवाला कोई ऐसा नहीं, जिसकी जीविका ईश्वर के अधीन न हो। वह जानता है उसके निवास का स्थान और उसके विश्राम का स्थान। सब बातें उस स्पष्ट ग्रन्थ में उपस्थित हैं।

३ और वही है, जिसने छह दिन में आकाशों और भूमि को उत्पन्न किया और उसका सिंहासन जल पर था (और है) जिससे कि वह तुम्हारी परीक्षा करे कि तुममें से कौन अच्छा काम करता है और यदि तू (मुहम्मद) कहे कि मृत्यु के पश्चात् निश्च्य ही तुम उठाये जाओगे, तो वे लोग, जो श्रद्धाहीन हैं, अवश्य कहेंगे कि यह तो खुला जादू है।

११.५-७

२९ सर्व-कर्म-साक्षी

१ और तू किसी भी स्थिति में हो। और तू कुरान का कोई पाठ करता हो। और तुम लोग कोई काम करते हो, हम तुम्हारे पास अवश्य उपस्थित होते हैं, जब कि तुम उसमें व्यस्त होते हो। और तेरे प्रभु से कणभर भी कोई वस्तु नहीं छिपती, न भूमि में, न आकाश में। उससे न कोई छोटी, न कोई बड़ी वस्तु है, जो उस स्पष्ट ग्रन्थ में नहीं है।

१०. ६१

● ३० परमात्मा के पास अव्यक्त की कुंजियाँ

१ और उसीके पास अव्यक्त की कुंजियाँ हैं, जिन्हें उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता। और वह जानता है, जो कुछ पृथ्वी और समुद्र में है। और कोई पत्ता नहीं झड़ता, पर वह उसे जानता है। बीज का कोई दाना भूमि के अँधेरे गर्भ में नहीं गिरता और न कोई हरी वस्तु, न कोई सूखी वस्तु ऐसी है, जो स्पष्ट ग्रन्थ में विद्यमान नहीं है।

६.५९

● ३१ ईश्वर पञ्चज्ञ

१ निस्सन्देह अन्तिम दिन (पुनरुत्थान) का ज्ञान ईश्वर को ही है। वही मेह बरसाता है और माता के गर्भ में जो कुछ है, उसे वही जानता है। कोई प्राणी नहीं जानता कि कल वह क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि वह किस भूमि में मरेगा। निस्सन्देह ईश्वर ही सर्वत्र है, सर्वविद् है।

६१.३४

३२ ईश्वर गर्भज्ञ

१ ईश्वर जानता है, जो प्रत्येक नारी के गर्भ में है और जो कुछ गर्भों में न्यूनाधिक होता है। प्रत्येक वस्तु उसके पास एक परिमाण से है।

२ वह अव्यक्त व्यक्त का ज्ञाता सर्वश्रेष्ठ, सर्वोच्च है।

३ तुममें जो चुपके से कहे या पुकारकर कहे और जो रात को छिप जाय और जो दिन में चले-फिरे, सब (उसके लिए) बराबर है।

१३.८–१०

● ३३ कण्ठ-शिरा से भी निकट

१ हमने मनुष्य को उत्पन्न किया। उसके मन में जो विचार आते रहते हैं, उन्हें हम जानते हैं और हम उससे उसकी कण्ठ-शिरा से भी निकट हैं।

५०.१६

● ३४ दृष्टेः द्रष्टा

१ उसे दृष्टि नहीं पाती, पर वह दृष्टि को पा लेता है। वह सूक्ष्मदर्शी सावधान है।

६.१०३

● ३५ आदि-अन्त, प्रकट-अप्रकट

वही है आदि, वही है अन्त, वही है प्रकट, वही है अप्रकट। वह वस्तुमात्र का ज्ञाता है।

५७.३

५ दयामय

९ दयालु

३६ ईश्वर का गुण-गौरव

१ निस्सन्देह वही पहली बार उत्पन्न करता है और वही दूसरी बार उत्पन्न करेगा।

२ वही क्षमावान्, प्रेममय।

३ सिंहासनाधिष्ठित कीर्तिमान् है।

४ जो चाहता है, सो करता है।

८५.१३–१६

३७ ईश्वर तुम्हारा भार हलका करना चाहता है

१ परमात्मा चाहता है कि तुम्हारे लिए प्रशस्त करे और तुम्हें दिखाये उन लोगों का मार्ग, जो तुमसे पूर्व थे और तुम्हें क्षमा करे। परमात्मा सर्वज्ञ तथा सर्वविद् है।

२ परमात्मा चाहता है कि तुम पर ध्यान दे और वासना के अनुगामी चाहते हैं कि तुम मार्ग से बहुत दूर जा पड़ो।

३ परमात्मा चाहता है कि तुम्हारा बोझ हलका करे, कारण कि मनुष्य अशक्त निर्माण किया गया है।

४.२६–२८

३८ दया-दक्ष

१ जब तेरे पास हमारे वचनों को माननेवाले लोग आयें, तो तू कह दे, तुम पर सलाम हो (तुम्हें शान्ति एवं शरणता मिले)। तुम्हारे प्रभु ने करुणा को अपना जिम्मा माना है कि तुममें से जो कोई अज्ञान से बुरा काम करे, फिर पश्चात्ताप करे और अपना सुधार करे, तो वह परमात्मा क्षमावान्, करुणावान् है।

६.५४

३९ ईश्वर दयालु और कठोर

१ निस्सन्देह प्रभु लोगों को उनके अत्याचारों के होते हुए क्षमा करनेवाला है और यह भी निश्चित है कि प्रभु कठोर दण्ड देनेवाला है।

१३.६

४०. ईश्वर की क्षमा की मर्यादाएँ

१ ईश्वर उन्हीं लोगों के पश्चात्ताप की स्वीकृति करता है, जो अज्ञान से दुष्कर्म करते हैं, फिर शीघ्र पश्चात्ताप करते हैं। ऐसे ही लोगों को वह क्षमा करता है। परमात्मा सर्वज्ञ, सर्वविद् है।

२ और उन लोगों के पश्चात्ताप की स्वीकृति नहीं होती, जो दुष्कर्म करते हैं। यहाँ तक कि जब उनमें से किसीके आगे मृत्यु आ जाती है, तो वह कहता है कि अब मैंने पश्चात्ताप किया। और ऐसों के भी पश्चात्ताप स्वीकृत नहीं होते, जो श्रद्धाहीन स्थिति में मरते हैं। ऐसे लोगों के लिए हमने भयानक दण्ड प्रस्तुत रखा है।

४.१७–१८

४१ अक्षमता का विषय

१ निस्सन्देह परमात्मा इस बात को क्षमा नहीं करेगा कि उसके साथ किसीको भागीदार किया जाय। इसके अतिरिक्त अन्य दोषों को वह क्षमा करेगा, जिसके लिए वह चाहे। और जो परमात्मा के साथ भागीदार ठहराये, उसने निश्चय ही महान् दोष की बात की।

४.४८

१० ईश्वरीय देनें

● ४२ आध्यात्मिक, नैतिक तथा भौतिक देनें

१ कृपालु ने

२ सिखाया कुरान।

३ निर्माण किया मनुष्य।

४ उसको बोलना सिखाया।

५ सूर्य-चन्द्र नियम-परायण हैं।

६ तारे और वृक्ष प्रणिपात करते हैं।

७ आकाश को ऊँचा किया और तुला रखी।

८ कि तौल में अतिक्रम न करो।

९ और न्याय से सीधी तौल तौलो और तौल में न्यूनता न करो।

१० भूमि बनायी प्रजा के लिए।

११ उसमें फल हैं तथा आवरणाच्छादित फलोंवाली खजूरें हैं।

१२ और धान्य है भूसीवाला और सुवासित फूल।

१३ तो तुम दोनों अपने प्रभु के किन-किन उपकारों और चमत्कृतियों को मुकरोगे?

५५,१-१३

४३ माँगा, सो सब दिया

१ ईश्वर वह है, जिसने आकाशों एवं भूमि को उत्पन्न किया। आकाश से पानी उतारा, फिर उससे तुम्हारे लिए फल उगाये, जो तुम्हारा खाद्य है; नौकाओं को तुम्हारे अधिकार में कर दिया कि परमात्मा की से वे समुद्र में चलें और नदियों को तुम्हारी सेवा में लगाया।

२ और लगाया तुम्हारी सेवा में सूर्य और चन्द्र को, जो कि सतत चले जा रहे हैं। रात्रि को और दिन को भी तुम्हारी सेवा पर नियुक्त किया।

३ और वह सब तुम्हें दिया, जो तुमने माँगा। यदि तुम ईश्वर की देनों को गिनना चाहो, तो गिन नहीं सकते।

१४.३२-३४

४४ द्वन्द्व-निर्माण दया

१ कह : देखो तो, यदि ईश्वर पुनरुत्थान के दिन तक तुम पर सदा के लिए रात्रि कर दे, तो ईश्वर के अतिरिक्त कौन अधिकारी है कि तुम्हारे पास कहीं से दिन ले आये? फिर क्या तुम सुनते नहीं?

२ कह : देखो तो, यदि ईश्वर पुनरुत्थान के दिन तक तुम पर सदा के लिए दिन कर दे, तो ईश्वर के अतिरिक्त कौन अधिकारी है कि जो तुम्हारे पास ऐसी रात्रि ले आये कि जिसमें तुम विश्राम पाओ? फिर क्या तुम सोचते नहीं?

३ और अपनी कृपा से तुम्हारे लिए उसने रात-दिन बनाये कि उसमें विश्राम करो और उसका कृपा-वैभव चाहो, जिससे कि तुम कृतज्ञ रहो।

२८.७१-७३

● ४५ मनुष्य का अन्न

१ मनुष्य अपने अन्न की ओर देखें,

२ कि हमने ऊपर से खूब पानी बरसाया,

३ फिर हमने विशेष प्रकार से जमीन चीरी,

४ उसमें अनाज उगाया

५ और अंगूर और सब्जियाँ

६ जैतून और खजूरें

७ और घने बाग

८ और फल तथा चारा उगाया

९ तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के लाभ के लिए।

८०.२४-३२

● ४६ दूध, द्राक्ष, मधु

१ निस्सन्देह तुम्हारे लिए गायों में भी शिक्षण है–उनके पेट की चीजों में से गोबर और खून के बीच में से शुद्ध दूध, जो पीनेवालों के लिए स्वादिष्ट है, हम तुम्हें पिलाते हैं—

२ और खजूर और द्राक्ष के फलों में भी। जिससे तुम लोग मद्य और उत्तम खाद्य बनाते हो। इनमें संकेत है उन लोगों के लिए, जो समझ रखते हैं।

३ तेरे प्रभु ने मधुमक्खी के मन में यह बात डाली कि पर्वतों में, वृक्षों में और जहाँ ऊँची-ऊँची टट्टियाँ बाँधते हैं, उन स्थानों में घर बना ले।

४ फिर सब फलों में से खा और अपने प्रभु के सुलभ किये हुए मार्गों पर चलती रह। उनके पेट से रंगबिरंगा पेय निकलता है, जिससे लोगों के लिए आरोग्य-लाभ है। निस्सन्देह इसमें संकेत है उन लोगो के लिए, जो सोचते हैं।

१६.६६-६९

● ४७ बुद्धि सर्वोत्तम देन

१ वह जिसे चाहता है, बुद्धि देता है और जिसे बुद्धि दी गयी, महत्तम कल्याण दिया गया और बुद्धिमान् ही सदुपयोग मानते हैं।

२ २६९

६ कर्ता

११ सृष्टिकर्ता

४८ केन पंचक

१ भला किसने निर्माण किया आकाशों को और भूमि को और तुम्हारे लिए पानी उतारा, फिर उससे सुन्दर बाग उगाये तथा उनमें वृक्ष उगाये। इन वृक्षों को उगाने की सामर्थ्य तुममें नहीं थी। क्या ईश्वर के अतिरिक्त कोई और नियन्ता है? कोई नहीं। पर, वे ऐसे लोग हैं कि मुँह मोड़ लेते हैं।

२ अथवा किसने भूमि को स्थल बनाया और उसके बीच में नदियाँ बनायीं। और उसके लिए पर्वत बनाये और दो समुद्रों के बीच सीमा-रेखा रखी। क्या है ईश्वर के अतिरिक्त कोई अन्य नियन्ता? कोई नहीं। पर इनमें अधिकतर लोग समझते नहीं।

३ भला कौन सुनता है आर्त की, जब वह उसे पुकारता है तथा संकट दूर कर देता है और तुम्हें भूमि पर विश्वस्त बनाता है? क्या ईश्वर के साथ कोई अन्य नियन्ता है? तुम लोग कम ही ध्यान देते हो।

४ अथवा कौन है, जो तुम्हें भूमि एवं सागर के अन्धकार में मार्ग दिखलाता है, और कौन भेजता है वायु को अपनी कृपा के आगे, मांगल्यवाहक बनाकर, क्या कोई और नियन्ता है ईश्वर के अतिरिक्त? ईश्वर उच्च तथा श्रेष्ठ है उस चीज से, जिसे वे भागीदार ठहराते हैं।

५ भला कौन पहली बार पैदा करता है फिर दोबारा करेगा, और कौन तुम्हें आकाश से और भूमि से जीविका देता है? क्या है और कोई नियन्ता ईश्वर के अतिरिक्त? कह : यदि तुम सच्चे हो, तो प्रमाण ले आओ।

२७.६०–६४

४९ देवदूत-निर्माता

१ स्तुति सब ईश्वर के ही लिए है, जो आकाशों तथा भूमि का उत्पन्न करनेवाला एवं देवदूतों को सन्देश-वाहक बनानेवाला है, जो दो-दो, तीन-तीन और चार-चार पंखोंवाले हैं। उत्पत्ति में वह जो चाहता है, सो बढ़ा देता है। निस्सन्देह ईश्वर सर्व-कर्म-समर्थ है।

३५.१

५० विकास-कर्ता

१ निस्सन्देह, ईश्वर धान्य-बीज और गुठली का भेदन (कर उसे अंकुरित) करता है, जीवित को मृत से निकालता है। वह मृत को जीवित से निकालनेवाला है। यह है ईश्वर ! फिर तुम किधर बहके जा रहे हो?

२ वह उषा की किरणों को प्रस्फुटित करता है। उसीने रात बनायी है विश्राम के लिए और सूर्य-चन्द्र गणित के लिए। सर्वजित् सर्वज्ञ का यह माप है।

३ और वही है, जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाये, जिससे तुम उनके द्वारा भूमि एवं सागर के अंधकार में मार्ग प्राप्त करो। निस्सन्देह हमने बुद्धिमानों के लिए विस्तार के साथ संकेतों का वर्णन किया है।

४ और वही है, जिसने तुम सबको एक जीव से निर्माण किया, फिर एक ठहरने का स्थान है और एक सौंपने का स्थान है। निश्चय ही हमने उन

लोगों के लिए, जो सोचते हैं, संकेतों का स्पष्ट रूप से विवेचन किया है।

५ और वही है, जिसने आकाश से पानी उतारा और फिर हमने उससे प्रत्येक प्रकार की वनस्पति उत्पन्न की। फिर उससे हरे कोंपल उगाये, जिससे हम ऊपर-नीचे चढ़े हुए दाने निकालते हैं और खजूर के गाभे से फलों के गुच्छे, जो झुके होते हैं और द्राक्ष के उद्यान और जैतून और अनार, जो परस्पर मिलते-जुलते और अलग भी हैं, उत्पन्न किये। उसके फल की ओर देखो, जब वह फलता है और उसके पकने को देखो। निस्सन्देह इसमें संकेत है उन लोगों के लिए, जो श्रद्धा रखते हैं।

६.९५-९९

५१ सर्जन का समय-पत्रक

१ कह : क्या तुम उस ईश्वर का इनकार करते हो, जिसने दो दिन में भूमि निर्माण की और किसीको उसके समकक्ष बनाते हो? यह है सारे विश्व का प्रभु?

२ और उसीने भूमि के ऊपर पर्वत रखे और भूमि में विपुलता रखी। उसने चार दिन में उसके उत्पादन की योजना निश्चित की, जिससे कि माँगनेवालों को पूरा-पूरा मिले।

३ फिर आकाश की ओर ध्यान दिया और वह आकाश धुआँ था। फिर उससे और भूमि से कहा : तुम दोनों आओ, प्रसन्नतापूर्वक या खिन्न होकर। दोनों बोले : हम आये प्रसन्नता से।

४ सो दो दिन में उन्हें सात आकाश बना दिये और प्रत्येक आकाश में उसकी आज्ञा उतारी और निकटवर्ती आकाश को दीपों से सजाया और सुरक्षित कर दिया। यह उस सर्वजित् सर्वज्ञ की योजना है।

४१.९-१२

५२ तेजोबन्न-निर्माता

१ तो क्या तुमने सोचा उस पर, जो तुम बोते हो?

२ क्या तुम उसे उगाते हो या हम हैं उगानेवाले?

३ यदि हम चाहते, तो उसको चूर-चूर कर देते, फिर तुम बातें बनाते रह जाते।

४ कि हम पर तो दण्ड पड़ा।

५ अपितु हम वंचित कर दिये गये!

६ क्या तुमने विचार किया जल पर, जिसे तुम पीते हो?

७ उसे मेघ से हमने उतारा या तुम हो उतारनेवाले?

८ यदि हम चाहते तो उसे खारी कर देते, फिर तुम क्यों नहीं कृतज्ञ होते?

९ क्या तुमने विचार किया अग्नि पर, जिसे तुम सुलगाते हो?

१० क्या उसके लिए वृक्ष तुमने उत्पन्न किया या हम हैं उत्पन्न करनेवाले?

११ हमने ही बनाया उस वृक्ष को, उपदेश और प्रवासियों के लाभ के लिए?

१२ सो तू अपने परम प्रभु के नाम का जप कर, जयजयकार कर।

५६.६३–७४

५३ विश्वाधार (पक्षी का दृष्टान्त)

१ क्या उन लोगों ने अपने ऊपर पक्षियों को नहीं देखा पंख फैलाते हुए और कभी समेट लेते हुए? उनको कोई नहीं थाम रखता, अतिरिक्त कृपालु के। निस्सन्देह वह प्रत्येक वस्तु का द्रष्टा है।

६७.१९

१२ ईश्वर की सुन्दर रचना

५४ व्यवस्थित रचना

१ मंगलप्रद है वह, जिसके हाथ में अधिसत्ता है और वह सर्व-कर्म-समर्थ है।

२ जिसने मृत्यु एवं जीवन का निर्माण किया कि तुम्हारी परीक्षा करे कि कृति में कौन तुममें से अधिक अच्छा है। वह सर्वजित् एवं क्षमावान् है।

३ जिसने तह पर तह सात आकाश बनाये। तू कृपालु की रचना में कोई न्यूनता नहीं देखेगा। फिर दोबारा दृष्टि डाल, तुझे कहीं दरार दीखती है?

४ फिर बार-बार दृष्टि डाल, तेरी दृष्टि लौट आयेगी, खिसियानी-सी होकर और थकी हुई।

६७.१-४

५५ प्रभुनिर्मित सुन्दर जगत्

१ क्या हमने भूमि को बिछौना नहीं बनाया?

२ और पर्वतों को मेखें।

३ और हमने तुम्हें युगल-युगल उत्पन्न किया।

४ और हमने तुम्हारी निद्रा को विश्राम का साधन बनाया।

५ और रात्रि की यवनिका बनायी।

६ और दिन उपार्जन के लिए बनाया। ७८.६-११

५६ ऊँट आदि सृष्टि-चमत्कार

१ क्या वे ऊँटों की ओर नहीं देखते कि वे कैसे बनाये गये।

२ और आकाश की ओर कि वह कैसे ऊँचा किया गया।

३ और पर्वत की ओर कि वे कैसे गाड़े गये ?

४ और भूमि की ओर कि वह कैसे बिछायी गयी।

८८.१७-२०

५७ गूढ में मस्तिष्क न लड़ाओ

१ हमने निकटतम आकाश को तारिकाओं से विभूषित किया।

२ और उसे प्रत्येक विद्रोही शैतान से सुरक्षित किया।

३ वे उस उच्च सभा की ओर कान नहीं लगा सकते; और उन्हें खदेड़ने के लिए सभी ओर से उन पर अंगारे फेंके जाते हैं।

४ अंगारे, उनके लिए नित्य दण्ड है।

५ किन्तु जो झप से उचक ले, उसके पीछे, एक वेधक ज्वाला लगती है।

३६.६-१०

१३. ईश्वरीय संकेत

५८. एक जल से विविध फल

१ भूमि में पास-पास कई खण्ड हैं, द्राक्ष के उद्यान हैं, कृषि है तथा खजूर के वृक्ष हैं, जिनमें एक की जड़ दूसरे से मिली हुई है, और कुछ बिन-मिली अकेली ही हैं। एक ही पानी सबको दिया जाता है। और हम फलों में किसीको किसीसे बढ़ा देते हैं। निस्सन्देह इसमें संकेत है उन लोगों के लिए जो बुद्धि रखते हैं।

१३.४

५९ ईश्वरीय चिह्न

१ उसके चिह्नों में से यह है कि उसने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर अब तुम मनुष्य हो कि भूमि पर सब ओर फैले पड़े हो।

२ और उसके चिह्नों में से यह है कि तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जाति में से युगल बनाये कि उनके पास तुम्हें विश्राम मिले। और तुम्हारे बीच प्रीति और करुणा निर्माण की। निस्सन्देह, इसमें चिन्तन करनेवालों के लिए संकेत हैं।

३ और उसके चिह्नों में से है आकाशों और भूमि की रचना और तुम्हारी बोलियों और तुम्हारे रंगों का भिन्न-भिन्न होना। निस्सन्देह इसमें बुद्धिमानों के लिए संकेत हैं।

४ और उसके चिह्नों मे से है तुम्हारा रात में और दिन में सोना और तुम्हारा उसके कृपा-वैभव को ढूँढ़ना। निस्सन्देह, इसमें संकेत हैं उनके लिए, जो सुनते हैं।

५ और उसके चिह्नों में से यह है कि वह तुमको बिजली दिखलाता है, (जिससे) डर भी (होता है) और आशा भी। वह आकाश से पानी उतारता है, फिर उस पानी से भूमि को उसके मरने के पश्चात् जीवित करता है। निस्सन्देह इसमें बुद्धिमानों के लिए संकेत हैं।

६ और उसके चिह्नों में से यह है कि उसकी आज्ञा से भूमि एवं आकाश

स्थिर है। फिर वह जब तुम्हें पुकारकर जमीन में से बुलायेगा, तो तुम उसी समय निकल पड़ोगे।

३०.२०-२५

६० ईश्वर छाया करनेवाला

१ क्या तूने अपने प्रभु की ओर दृष्टि नहीं की कि उसने छाँह कैसे फैला रखी है, और यदि वह चाहता तो उसे स्थिर रखता। फिर हमने सूर्य को उसका पथ-प्रदर्शक बनाया।

२ फिर हमने उस छाँह को अपनी ओर शनैः-शनैः समेट लिया।

२५.४५-४६

६१ ईश्वर नाना रंग निर्माता—लोहित-शुक्ल- कृष्णवर्णाः

१ क्या तूने नहीं देखा कि ईश्वर ने आकाश से पानी उतारा और फिर उससे हमने विविध रंग के फल उपजाये, और पर्वतों में धारियाँ हैं श्वेत श्याम रतनार।

२ और इसी प्रकार मनुष्यों में, वन्य पशुओं में और चौपायों में भी कई प्रकार के रंग हैं। ईश्वर से उसके दासों में वही डरते हैं, जो जानते हैं। निस्सन्देह, ईश्वर सर्वशक्तिमान् एवं क्षमावान् है।

३५,२७-२८

७ सर्वशक्ति

१४ सर्वशक्तिमान्

६२ सर्वाधिपति

१ कह: किसने रची है भूमि और जो-जो उसमें है, यदि तुम जानते हो ?

२ वे अवश्य कहेंगे कि ईश्वर की, तो कह: फिर तुम सोचते नहीं ?

३ : कौन है सातों आकाशों का प्रभु और महान् सिंहासन का स्वामी?

४ वे अवश्य कहेंगे : सब ईश्वर का है। कह : फिर तुम क्यों नहीं डरते?

५ कह: किसके हाथों में प्रत्येक वस्तु की अधिसत्ता है, और कौन संरक्षण

देता है और किसके विरोध में संरक्षण नहीं दिया जा सकता, यदि तुम जानते हो?

६ वे अवश्य कहेंगे कि यह सब ईश्वर का है, तो कह : फिर तुम पर क्या जादू आ पड़ता है?

२३.८४-८९

६३ प्रलयकारी

१ और वे नहीं समझते ईश्वर को, जितना कि वह है। पुनरुत्थान के दिन सारी भूमि उसकी एक मुट्ठी में होगी और आकाश उसके दाहिने हाथ में लिपटा होगा। वह पवित्र, निराला है एवं सर्वोच्च है उससे, जिसे वे भागीदार ठहराते हैं।

३९.६७

६४ तज्जलान्

१ श्रेष्ठतम प्रभु के नाम का जप कर, जयजयकार कर।

२ जिसने रचा, फिर सँवारा।

३ जिसने परिमाप बनाया, फिर मार्ग दिखलाया।

४ तथा जिसने चारा उगाया।

५ और फिर उसे काला कूड़ा कर डाला।

८७.१-५

● ६५ पुनरुत्थान-समर्थ

१ मनुष्य ने सोचा नहीं कि हमने उसे एक बीज बि़न्दु से निर्माण किया, सो एकाएक वह स्पष्ट झगड़ालू हो गया।

२ और हमारे विषय में अद्भुत बातें बोलने लगा और अपनी उत्पत्ति भूल गया। कहता है कि कौन जीवित करेगा हड्डियों को, जो गल गयी हों?

३ कह : उनको वह जीवित करेगा, जिसने उन्हें पहली बार उत्पन्न किया और वह सब प्रकार उत्पन्न करना जानता है।

४ जिसने तुम्हारे लिए हरे वृक्ष से अग्नि का निर्माण किया, फिर अब तुम उससे आग सुलगाते हो?

५ क्या वह, जिसने आकाशों एवं भूमि का निर्माण किया, इस बात में सक्षम नहीं कि उन जैसों को उत्पन्न करे? क्यों नहीं ? और वही है सृष्टिकर्ता सर्वज्ञ।

६ उसकी आज्ञा यही है कि जब किसी वस्तु का संकल्प करता है, तो उससे कहता है : 'हो जाओ', सो वह हो जाती है।

७ तो पावन है वह, जिसके हाथ में सर्व वस्तु की अधिसत्ता है और उसकी ओर तुम सबको लौट कर जाना है।

३६.७७–८३

१५ इच्छा-समर्थ-ईश्वरीय इच्छा सार्वभौम

६६ कन्या-पुत्रदाता

१ ईश्वर की अधिसत्ता है, आकाशों में और भूमि में। जो चाहता है सो उत्पन्न करता है, जिसे चाहता है पुत्री देता है और जिसे चाहता है पुत्र देता है।

२ या दोनों देता है, पुत्र और पुत्रियाँ; और जिसे चाहता है, निःसन्तान सख देता है। निस्सन्देह वह ज्ञाता है, समर्थ है।

४२.४९-५०

● ६७ 'कल्याण तेरे हाथ'—ईश-स्तवन

१ कह : हे ईश्वर! अधिसत्ता के स्वामी, तू जिसे चाहे सत्ता दे और जिससे चाहे सत्ता छीन ले और जिसे चाहे प्रतिष्ठा दे और जिसे चाहे अप्रतिष्ठा दे। सर्व कल्याण तेरे हाथ में है। निस्सन्देह, तू सर्व-कर्म-समर्थ है।

३.२६

● ६८ ईश्वरभिन्न जीव-स्वातन्त्र्य नहीं

१ तेरा प्रभु जिसे चाहता है उत्पन्न करता है और चुन लेता है। उन

(जीवों) को लेशमात्र चुनने का अधिकार नहीं। ईश्वर पवित्र है तथा उन (लोगों की) वि-भक्ति से ऊँचा है।

२८.६८

६९ यमेव एष वृणुते तेन लभ्यः

१ ..... कह : वैभव निश्चय ही ईश्वर के हाथ में है, जिसे चाहे दे। ईश्वर सर्वव्यापक है, सर्वज्ञ है।

२ जिसे चाहता है, अपनी कृपा के लिए चुन लेता है। ईश्वर महान् वैभवशाली है।

३.७३–७४

७० ईश्वर की अनुज्ञा बिना श्रद्धा नहीं

१ किसी व्यक्ति के लिए संभव नहीं कि ईश्वर की अनुज्ञा के बिना श्रद्धा रखे और वह (अश्रद्धा का) अशुचित्व देता है उन लोगों को, जो बुद्धि से काम नहीं लेते।

१०.१००

७१ कौषीतकी उपनिषद्–प्रभु-कृपा की महत्ता

१ जिसे ईश्वर ऋजुमार्ग दिखाना चाहता है, उसके हृदय को खोल देता है अपनी शरणता के लिए और जिसे मार्ग-भ्रष्ट रखना चाहता है, उसके लिए उसके हृदय को बहुत ही संकुचित कर देता है, मानो वह मनुष्य बलपूर्वक आकाश पर चढ़ता है। इस प्रकार ईश्वर श्रद्धा न रखनेवालों को अपयश देता है।

६.१२५

१६ अवर्णनीय–महान्

● ७२ ईश्वरीय सिंहासन

१ ईश्वर ! उसके अतिरिक्त कोई नियन्ता नहीं। शाश्वत, स्थिर, उसे न ऊँघ आती है न नींद, उसीका है जो कुछ आकाशों में और भूमि में है। उसके पास उसकी अनुज्ञा के बिना कौन सिफारिश कर सकता है? वह

जानता है, जो कुछ उन लोगों के आगे है और जो कुछ उन लोगों के पीछे है और वे लोग उसके ज्ञान में से किसी अंश को अपनी परिधि में नहीं ला सकते, सिवा इसके कि जो वह चाहे। उसके सिंहासन के आकाशों एवं भूमि को व्याप्त कर लिया है और उन दोनों की सार-सँभाल उसको थकाती नहीं। और वह श्रेष्ठतम है, महत्तम है।

२.२५५

● ७३ ईश्वर के वर्णन को स्याही अपर्याप्त

१ कह : मेरे प्रभु की बातें लिखने के लिए यदि समुद्र स्याही हो, तो मेरे प्रभु के गुण का वर्णन समाप्त होने के पूर्व समुद्र समाप्त हो जाय, यद्यपि हम वैसे ही दूसरे समुद्र भी उसकी सहायता के लिए ले आयें।

१८.१०९

● ७४ असितगिरिसमं स्यात्.....

१ भूमि में जितने भी वृक्ष हैं, यदि वे लेखनी बन जायँ तथा समुद्र (स्याही हो जायँ), उसके अतिरिक्त सात समुद्र और साथ हो जायँ, तो भी ईश्वर की बातों का वर्णन पूरा नहीं होगा। निस्सन्देह परमात्मा सर्वजित्, सर्वविद् है।

६१.२७

८:नाम-स्मरण

१७ ईश्वर का नाम

● ७५ ईश्वर के लिए सुन्दर नाम

१ नरक के भागी और स्वर्ग के भागी समान नहीं हो सकते। जो स्वर्गप्राप्ति के अधिकारी हैं, वे विजयी हैं।

२ यदि हम इस कुरान को किसी पहाड़ पर उतारते, तो तू देखता कि वह ईश्वर के डर से दब जाता, फट जाता। हम ये दृष्टान्त लोगों के लिए उपस्थित करते हैं कि वे सोचें।

३ वही ईश्वर है, जिसके अतिरिक्त कोई नियन्ता नहीं। अव्यक्त-व्यक्त का ज्ञाता, वह बहुत कृपालु और अतीव करुणावान् है।

४ वही ईश्वर है, जिसके अतिरिक्त अन्य कोई नियन्ता नहीं। वह सर्वसत्ताधीश है, पवित्रतम है। शरण्य, शान्तिदाता, संरक्षक, सर्वजित्, बलवान् एवं महत्तम है। ईश्वर पवित्र है, निराला है उससे, जिसे ये भागीदार ठहराते हैं।

५ वही ईश्वर है, कर्ता, भर्ता, स्वरूपदाता सारे सुन्दर नाम उसीके लिए हैं। आकाशों में और भूमि में जो हैं, वे उसका जप करते हैं, जयजयकार करते हैं और वही सर्वजित्,सर्वविद् है।

५९.२०-२४

९ साक्षात्कार

१८ साक्षात्कार

७६ मूसा को साक्षात्कार—प्रभु बोले

१ हमने मूसा को तीस रात्रियों का अभिवचन दिया तथा उनमें और दस बढ़ाकर पूरा किया। फिर जब उसके प्रभु की चालीस रात्रियाँ पूरी हुईं और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि तू समाज में मेरा स्थान ग्रहण कर, कार्य को सँवारता रह और उपद्रवियों के मार्ग का अनुसरण न कर।

२ और जब मूसा हमारे अभिवचन की अवधि पर पहुँचा, तो प्रभु ने उससे बात की। तब मूसा बोला : हे मेरे प्रभु, तू मुझे अपना दर्शन दे कि मैं तुझे देखूँ। कहा : तू मुझे कदापि नहीं देख सकेगा, किन्तु तू पर्वत की ओर देख, यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रहा, तो अवश्य ही तू मुझे देख सकेगा। फिर जब उसके प्रभु ने पर्वत पर अपना तेज प्रकट किया, तो उस (तेज) ने पर्वत को चकनाचूर कर दिया और मूसा बेहोश होकर गिर पड़ा। फिर जब होश में आया, तो बोला : पवित्रतम है तू, तेरा जयजयकार है ! मैं पश्चात्तापदग्ध होकर तेरी ओर आया हूँ एवं मैं सर्वप्रथम श्रद्धालु हूँ।

३ कहा : हे मूसा ! अपने सन्देशों के साथ और अपने वार्तालाप के साथ मैंने तुझे लोगों पर विशेषता प्रदान की। सो जो कुछ मैंने तुझे दिया, ले ले और कृतज्ञों में से हो जा।

४ हमने मूसा को पाटियों पर प्रत्येक प्रकार का उपदेश और प्रत्येक वस्तु का विस्तृत वर्णन लिख दिया। कहा : उनको दृढ़ता से थाम ले और अपने समाज को आज्ञा दे कि उसके उत्तम सार को ग्रहण कर उस पर दृढ़ रहे······ ।

७ १४२-१४५

७७ मूसा को साक्षात्कार—अग्नि-ज्योति-दर्शन

१ क्या तेरे पास मूसा की कथा पहुँची ?

२ जब उसने एक आग देखी, तो अपने घरवालों से कहा : ठहरो, निश्चय ही मैंने एक आग देखी है, कदाचित् मैं उसमें से तुम्हारे पास एक अंगारा ले आऊँ या आग के पास पहुँचकर रास्ते का पता पाऊँ।

३ फिर वह जब उसके पास पहुँचा, तो आवाज दी गयी : "मूसा !

४ निस्सन्देह मैं तेरा प्रभु हूँ, सो अपनी जूतियाँ उतार डाल। तू पुण्यक्षेत्र तुवा में है।

५ और मैंने तुझे निर्वाचित कर लिया है, सो जो कुछ प्रज्ञान दिया जाता है, वह सुन।

६ निस्सन्देह मैं जो हूँ, परमात्मा हूँ। मेरे अतिरिक्त अन्य कोई भजनीय नहीं। सो मेरी भक्ति कर तथा मेरे स्मरण के लिए नित्य-नियमित प्रार्थना कर।"

२०.९-१४

७८ मुहम्मद को साक्षात्कार

१ शपथ है तार की, जब कि वह नीचे झुके।

२ तुम्हारा यह साथी न बहका, न मार्गच्युत हुआ।

३ और न वह वासना से बोलता है।
४ यह तो ईश्वरीय ज्ञान है, जो भेजा जाता है।
५ यह उस बलशाली शक्तिमान् ने उसको सिखाया है।
६ वह शक्तिमान् पूर्ण रूप से प्रकट हुआ।
७ और वह आकाश के उच्च क्षितिज पर था।
८ फिर वह समीप हुआ, फिर और उतर आया।
९ फिर दो धनुष का अन्तर रह गया अथवा उससे भी निकट आया,
१० फिर उसने अपने इस दास की ओर ईश्वरीय ज्ञान भेजा। जो भेजा, सो ईश्वरीय ज्ञान ही था।
११ जो देखा उस हृदय ने मिथ्या नहीं (देखा)।
१२ तो उसने जो देखा, उस पर अब तुम उससे झगड़ते हो।
१३ और उसने उसे और भी एक बार उतरते हुए देखा है।
१४ अन्तिम सीमावर्ती बदरी-वृक्ष के समीप,
१५ –उसके पास सुख से रहने का स्वर्ग है–
१६ जब वह बदरी-वृक्ष तेजोवेष्टित था, सतत तेजोवेष्टित था।
१७ उस समय दृष्टि न तो हटी और न उसने अधिक धृष्टता की,
१८ निश्चय ही उसने अपने प्रभु के महान् संकेत देखे।

५३.१–१८

● ७९ त्रिविध साक्षात्कार

१ किसी मानव पर यह अनुग्रह नहीं होता कि ईश्वर उससे वार्तालाप करे, सिवा कि (१) प्रज्ञान द्वारा, (२) आवरण की ओट से या (३) प्रेषित भेजकर जो कि पहुँचाये, परमात्मा की आज्ञा से, वह सन्देश जो परमात्मा चाहे। निश्चय ही वह सर्वोच्च, सर्वविद् है।

२ और उसी प्रकार हमने तेरी ओर अपनी आज्ञा से प्रज्ञान भेजा। तू नहीं

जानता था कि ग्रन्थ क्या है और श्रद्धा क्या है, किन्तु हमने उसे ऐसा प्रकाश बनाया, जिसके द्वारा अपने दासों में हम जिसे चाहते हैं, मार्ग दिखाते हैं और निःसंशय तू लोगों को सीधा मार्ग दिखलाता है।

३ उस ईश्वर का मार्ग जिसके लिए है, जो कुछ कि आकाशों में है और जो कुछ भूमि में है। सावधान ! ईश्वर की ओर ही सब कार्य प्रवृत्त होंगे।

४२.५१-५३

● ८० ज्ञान की एक रात्रि=सहस्र मास का जीवन

१ हमने उसे (कुरान को) मंगलप्रद रात्रि में उतारा।

२ और तूने क्या जाना कि मंगलप्रद रात्रि क्या है ?

३ वह रात्रि सहस्र मासों से उत्तम है।

४ उस रात्रि में देवदूत और जीव अपने प्रभु की आज्ञा से प्रत्येक कार्य के लिए उतरते हैं।

५ शरण्या एवं करुणामयी है वह रात्रि, अरुणोदय तक।

९७.१-५

८१ ज्ञान-प्राप्ति के लिए शीघ्रता न कर

१ ईश्वर ! परमोच्चपदप्रतिष्ठित वस्तुतः राजराजेश्वर है ! और तू कुरान के साथ शीघ्रता न कर, जब तक उसका उतरना पूरा न हो चुके और कहः हे प्रभु ! मुझे ज्ञान-वृद्ध कर।

२०.११४

१० प्रार्थना

१९ प्रार्थना

८२ शरणता

१ ····· आकाशों तथा भूमि के स्रष्टा! तू ही इहलोक में मेरा संरक्षक मित्र है। मुझे शरणावस्था में मृत्यु दे और मुझे संतों में सम्मिलित कर।

१२.१०१

८३ कृतज्ञता

१ ····· हे मेरे प्रभु ! मुझे ऐसी शक्ति दे कि मैं तेरे दयापूर्ण वरदानों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ, जो वरदान तूने मुझे और मेरे माता-पिता को प्रदान किये हैं और मैं वह सत्कृत्य करूँ, जो तुझे भाये तथा मुझे अपनी कृपा से अपने पुण्यचरित दासों में प्रविष्ट कर।

२७.१९

● ८४ संकट-मोचन

१ कह : उषा के प्रभु का मैं आश्रय लेता हूँ बचने के लिए
२ प्रत्येक वस्तु की दुष्टता से जो उसने बनायी।
३ और अन्धकार की दुष्टता से, जब कि वह छा जाय।
४ और उनकी दुष्टता से, जो ग्रन्थियों में फूँकती हैं।
५ और ईर्ष्यालु की दुष्टता से, जब कि वे ईर्ष्या करें।

११३.१-५

● ८५ विकार-मोचन

१ मैं आश्रय माँगता हूँ, मानवों के प्रभु का।
२ मानवों के सत्ताधीश का।
३ मानवों के भजनीय का, जिससे कि बचूँ
४ कुप्रेरणा करनेवाले पीछे हट जानेवाले की दुष्टता से।
५ जो मानवों के हृदय में विकार डालता है।
६ वह जिनों में से हो या मनुष्यों में से।

११४.१-६

खण्ड ३ : भक्ति-रहस्य

११ भक्ति

२० प्रार्थनोपदेश

● ८६ सप्तविध

१ हे प्रावरणावगुण्ठित !

२ उठ और लोगों को सावधान कर

३ और अपने प्रभु की महत्ता बोल

४ एवं अपने मन को शुद्ध रख

५ और अशुचिता से दूर रह,

६ अधिक प्रतिदान के उद्देश्य से उपकार न कर।

७ और अपने प्रभु के लिए धीरज रख।

७४.१-७

● ८७ प्रार्थना के लिए रात्रि का महत्त्व

१ हे चादर में लिपटनेवाले !

२ रात को उठकर उपासना कर, परन्तु थोड़ी देर

३ रात्रि के आधे समय अथवा उससे कुछ कम कर

४ अथवा उससे अधिक कर और सावधानी से कुरान का स्पष्ट पाठ कर।

५ निस्सन्देह हम तुझ पर एक भारी बात डालनेवाले हैं।

६ निस्संशय, रात को उठना वासनाओं को कुचलने में बहुत तेज है और वाणी सरल करनेवाला है।

७ निस्सन्देह, दिन में तुझे बहुत काम रहता है!

८ अपने प्रभु का नाम लेता रह और एकाग्र होकर उसीकी ओर प्रवृत्त हो।

९ वह पूर्व एवं पश्चिम का स्वामी है, उसके अतिरिक्त कोई भजनीय नहीं। सो उसीको अपना सार-सँभाल करनेवाला बना ले।

१० और वे लोग जो कुछ कहते रहें, वह सहता रह तथा सुचारु रूप से उन्हें छोड़ दे।

७३.१-१०

८८ संयत वाणी से प्रार्थना करो

१ जब कुरान पढ़ा जाय, तो उसकी ओर कान लगाओ और मौन रहो जिससे कि तुम पर कृपा की जाय।

२ और अपने प्रभु का, अपने हृदय में, नम्रता एवं भय से, संयत वाणी से, प्रातः-सायं स्मरण करता रह और असावधानों में से न हो जा।

३ निस्सन्देह, जो तेरे प्रभु के निकट हैं वे उसकी भक्ति करने में अहंकार नहीं रखते और उसका जप करते हैं, जयजयकार करते हैं और उसको प्रमाणित करते हैं।

७.२०४-२०६

८९ अल्ला कहो या रहमान कहो

१ कह : अल्ला कहकर पुकारो या रहमान (दयामय) कहकर, जो भी कहकर पुकारोगे, सो सभी अच्छे नाम उसीके लिए हैं और अपनी प्रार्थना उच्च स्वर से न पढ़ और न चुपके पढ़, उसके बीच का मार्ग स्वीकार कर।

१७.११०

९० क्षमापनम्

१ तू यह जान कि परमात्मा के अतिरिक्त कोई भजनीय नहीं और अपने पापों के लिए और श्रद्धावानों एवं श्रद्धावतियों के लिए भी क्षमा माँग।

परमात्मा तुम्हारे चलने-फिरने का स्थान और तुम्हारा अन्तिम स्थान जानता है।

४७.१९

९१ प्रार्थना, व्यापार तथा खेल

१ हे श्रद्धावानो ! जब प्रार्थना के लिए शुक्रवार को तुम्हें पुकारा जाय, तो ईश-स्मरण के लिए दौड़ो और क्रय-विक्रय छोड़ दो। यदि तुम समझो, तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है।

२ फिर जब प्रार्थना पूरी की जाय, तो पृथ्वी में फैल जाओ और ईश्वर का कृपा-वैभव ढूँढ़ो तथा ईश्वर का बहुत स्मरण करो, जिससे कि तुम्हारा भला हो।

३ और वे लोग जब देखते हैं सौदा बिकता हुआ या तमाशा, तो उसे देखकर उसकी ओर दौड़े जाते हैं और तुझे खड़ा छोड़ जाते हैं। कह : जो ईश्वर के पास है, वह तमाशे से और व्यापार से उत्तमोत्तम है। और ईश्वर श्रेष्ठ जीविका पहुँचानेवाला है।

६२.९-११

● ९२ प्रार्थना से स्मरण बड़ा

१ जो ग्रन्थ तेरी ओर उतरा, उसे पढ़ और नित्य नियमित प्रार्थना कर। निस्सन्देह, प्रार्थना लज्जास्पद एवं अनुचित बातों से रोकती है। ईश्वर का स्मरण इन सबसे बड़ा है और ईश्वर जानता है, जो कुछ तुम करते हो।

२९.४५

९३ ईश्वर-स्मरण से अन्तःसमाधान

१ .... भलीभाँति समझ लो कि ईश्वर के स्मरण से अन्तःकरण को समाधान मिलता है।

१३.२८

२१ सृष्टिकृत प्रार्थना

९४ मेघ-गर्जना जप करती है

१ मेघ-गर्जना परमात्मा की स्तुति के साथ उसका जप करती है, जयजयकार

करती है और सब देवदूत उसका आदर के साथ जप एवं स्तवन करते हैं।

१३.१३

९५ पक्षी स्तवन करते हैं

१ क्या तूने नहीं देखा कि आकाश एवं भूमि में जो पक्षी हैं, वे पंख पसारे परमात्मा का नाम-स्मरण करते हैं। प्रत्येक अपने ढंग की प्रार्थना एवं जप करता है और परमात्मा जानता है, जो कुछ वे करते हैं।

२४.४१

९६ सृष्टि का जप अगम्य

१ सात आकाश एवं भूमि तथा जो कोई उनमें हैं, उसका जप करते हैं, जयजयकार करते हैं। ऐसी कोई वस्तु नहीं, जो स्तवनपूर्वक (स्तुति के साथ) उसका जप नहीं करतीं, किन्तु तुम उनका नाम-स्मरण नहीं समझते। निस्सन्देह वह धृतिमान्, करुणावान् है।

१७.४४

९७ छाया का प्रणिपात

१ आकाशों एवं भूमि में जो कोई है, वह स्वेच्छया या अनिच्छया परमात्मा को प्रणिपात करते हैं और उनकी परछाइयाँ भी, प्रातः-सायं उसे प्रणिपात करती हैं।

१३.१५

९८ सृष्टि का प्रणिपात

१ क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि ईश्वर ने जो वस्तुएँ उत्पन्न की हैं, उनकी परछाइयाँ दाहिने और बाँयें ईश्वर को प्रणिपात करते हुए ढलती हैं और वे विनम्र हैं।

२ आकाशों एवं भूमि में जितने भी प्राणी हैं, वे एवं सभी देवदूत ईश्वर को प्रणिपात करते हैं। वे घमंड नहीं करते।

३ अपने प्रभु का, जो उनके सिर पर है, भय रखते हैं। जो आज्ञा पाते हैं, सो करते हैं।

१६.४८-५०

● ९९ सारी सृष्टि एवं कतिपय मनुष्य प्रणिपात करते हैं

१ क्या तूने नहीं देखा कि जो आकाशों एवं भूमि में हैं तथा सूर्य और चन्द्र और तारे और पर्वत और वृक्ष एवं पशु तथा मनुष्यों में से बहुत-से लोग परमात्मा को प्रणिपात करते हैं? ......

२२.१८

२२ निष्ठा

१०० शरणता एवं नैष्ठिकता

१ गँवार लोग कहते हैं कि हम श्रद्धा रखते हैं। कहो कि तुममें अभी श्रद्धा नहीं आयी। अपितु तुम यह कहो कि हमने शरणता स्वीकृत की है, अभी तुम्हारे मानस में श्रद्धा का प्रवेश नहीं हुआ। तथापि यदि तुम ईश्वर की और प्रेषित की आज्ञा मानो, तो ईश्वर तुम्हारे सत्कृत्यों का फल लेशमात्र भी न घटायेगा। निस्सन्देह ईश्वर क्षमावान् हैं, क़रुणावान् है।

२ श्रद्धावान् केवल वे ही हैं, जिन्होंने ईश्वर पर एवं उसके प्रेषित पर श्रद्धा रखी और फिर सन्देह नहीं किया तथा धन-प्राण से ईश्वर के मार्ग में जूझते रहे। ये ही लोग सच्चे हैं।

४९.१४-१५

● १०१ साधना, श्रद्धा एवं संस्कृति का त्रिकोण

१ जिन लोगों ने श्रद्धा रखी और सत्कृत्य किये, उन्होंने जो आहार किया है, उसमें दोष नहीं, जब कि वे प्रभु-परायण रहें और श्रद्धा रखें और फिर प्रभु-परायण रहें और अनेक सत्कृत्य करें। ईश्वर सत्कृत्य करनेवालों से प्रेम करता है।

५.९६

● १०२ नारायणायेति समर्पयेत्तत्

१ कह : निस्सन्देह मेरी प्रार्थना, मेरी भक्ति, मेरा जीवन, मेरा मरण सब

परमात्मा के ही लिए है, जो सारे विश्व का प्रभु है।

६.१६२

१०३ मन तो रँगा राम में

१ रँगा है हमको परमात्मा ने, और रँगने में परमात्मा से श्रेष्ठतर कौन है? हम उसीके भक्त हैं।

२.१३८

१०४ नाते नेह राम के मनियत

१ हे श्रद्धालुओ, अपने पिता को, अपने भाई को भी मित्र न बनाओ, यदि वे लोग श्रद्धाहीनता को श्रद्धा की अपेक्षा प्रिय मानें। तुममें से जो लोग उन्हें मित्र समझें, वही लोग दोषी हैं।

२ कह : तुम्हारे पिता , तुम्हारे पुत्र, तुम्हारे भाई, तुम्हारी पत्नियाँ, तुम्हारा परिवार और वह धन, जो तुमने उपार्जित किया है तथा वह व्यापार, जिसकी मन्दी से तुम डरते हो और वे घर, जो तुम्हें भाते हैं, यदि ईश्वर से और उसके प्रेषित से और उसके मार्ग में जूझने से तुम्हें अधिक प्यारे हैं, तो तुम प्रतीक्षा करो, जब तक कि ईश्वर आज्ञा भेजे। ईश्वर अपनी अवज्ञा करनेवालों को अपना मार्ग नहीं दिखाता।

९.२३-२४

● १०५ नम्रत्वेन उन्नमन्तः

१ निस्सन्देह परमात्मा के पास तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक विनम्र है। परमात्मा सर्वज्ञ है, सर्वस्पर्शी है।

४९.१३

● १०६ ईश्वरेच्छा को शरण

१ किसी बात के सम्बन्ध में कदापि यह न कह कि मैं यह कल करूँगा।

२ परन्तु यह कि 'यदि ईश्वर चाहे तो' !

१८.२३-२४

● १०७ भवन चट्टान पर या धँसनेवाले कगार पर

१ भला जिसने अपने भवन की नींव ईश्वर के प्रति अपने धर्म पर एवं उसकी प्रसन्नता पर रखी हो, वह अधिक लाभकारी है या वह, जिसने अपने भवन की नींव एक खोखली घाटी के कगार पर रखी हो, जो गिरने को ही है कि फिर वह उसको लेकर नारकीय अग्नि में ढह पड़े? ....

९.१०९

२३ त्याग-समर्पण

१०८ उत्तम व्यापार

१ हे श्रद्धालुओ, मैं तुम्हें ऐसा व्यापार बताऊँ, जो तुम्हें दुःखद दण्ड से बचाये।

२ परमात्मा पर एवं उसके प्रेषित पर श्रद्धा रखो, और अपने धन से एवं अपने प्राण से परमात्मा के मार्ग में जूझते रहो। यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है, यदि तुम बुद्धि रखते हो।

६१.१०-११

● १०९ श्रेष्ठ पुण्य

१ क्या तुमने यात्रियों को पानी पिलाने और पवित्र मसजिद बनाने को उस व्यक्ति के समान ठहराया, जिसने ईश्वर पर एवं पुनरुत्थान के दिन पर श्रद्धा रखी तथा ईश्वर के मार्ग में जूझते रहा? ये ईश्वर के समीप समान नहीं हो सकते। ईश्वर अन्यायी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

२ जिन्होंने श्रद्धा रखी एवं घर-द्वार छोड़ा तथा ईश्वर के मार्ग में तन-मन-धन से जूझे, वे ईश्वर की दृष्टि में बहुत श्रेष्ठ हैं और विजयी हैं।

९.१९-२०

११० सर्वोत्तम सञ्चय

१ हे श्रद्धालुओ, तुम उन लोगों के जैसे मत बनो, जिन्होंने ईश्वर के प्रति अश्रद्धा दिखलायी और अपने भाइयों के विषय में, जब कि वे परदेश में

प्रवास को निकले हों या लड़ते हों, यह कहते रहें कि यदि वे हमारे पास रहते तो न मरते, न मारे जाते। (उनके इस कहने को) ईश्वर उनके लिए शोक का कारण बनायेगा। ईश्वर ही जिलाता है और ईश्वर ही मारता है और ईश्वर तुम्हारा सब काम देखता है।

२ और यदि तुम ईश्वर के मार्ग में मारे जाओ या मर जाओ, तो क्या हुआ? ईश्वर की क्षमा और कृपा उस धन से बहुत ही श्रेष्ठ है, जिसे वे सञ्चित करते हैं।

३ और यदि तुम मर गये या मारे गये, तो अवश्यमेव ईश्वर के ही पास एकत्र किये जाओगे।

३.१५६-१५८

१११ सर्वत्र आश्रय

१ जो कोई ईश्वर के मार्ग में अपनी जन्मभूमि छोड़ेगा, वह इस विशाल भूमि में जाने के लिए बहुत स्थान एवं क्षेत्र पायेगा। तथा जो कोई अपने घर से प्रस्थान कर ईश्वर एवं प्रेषित की ओर चले और यदि उसे मृत्यु आ जाय, तो उसका प्रतिफल ईश्वर के अधीन है। ईश्वर महान्, क्षमावान् एवं महान् करुणावान् है।

४.१००

११२ सद्‌गति

१ ..... जिन्होंने अपनी जन्मभूमि छोड़ी, जो अपने घरों से निकाले गये, मेरे मार्ग में त्रस्त किये गये और लड़े तथा मारे गये, उन लोगों के दोष मैं अवश्य दूर करूँगा और उनको स्वर्ग में प्रविष्ट करूँगा, जिसके नीचे नदियाँ बहती हैं। यह प्रतिफल है ईश्वर की ओर से और अच्छा प्रतिफल तो ईश्वर के ही पास है।

३.१९५

११३ उभय पक्ष में श्रेयस्कर

१ तो हाँ, ईश्वर के मार्ग में तो वे लोग लड़ें, जो ऐहिक जीवन का

पारलौकिक जीवन से विनिमय करते हैं। जो कोई ईश्वर के मार्ग में लड़े और मारा जाय या विजय प्राप्त करे, तो उन दोनों स्थितियों में हम उसे महान् फल देंगे।

४.७४

२४ कसौटी एवं आश्वासन

११४ कसौटी अवश्य होगी

१ क्या ये लोग ऐसा सोचते हैं कि वे इतना कहकर छूट जायँगे कि हम श्रद्धा रखते हैं और उनकी कसौटी न होगी?

२ हमने उनसे पूर्व जो थे, उनकी अवश्य ही कसौटी की है। सो ईश्वर जान लेगा उन्हें, जो सच्चे लोग हैं और जान लेगा उन्हें, जो झूठे हैं।

२९.२-३

११५ परीक्षा होगी

१ हम निश्चय ही तुम्हारी कसौटी करेंगे, जिससे कि हम तुममें से जूझनेवालों और धीरज रखनेवालों को जान लें और तुम्हारी स्थिति जाँच लें।

४७.३१

● ११६ भक्तों को गरीबी का वरदान

१ यदि ईश्वर अपने दासों की जीविका अत्यधिक बढ़ा दे, तो वे दुनिया में ऊधम मचा दें। किन्तु वह जितनी चाहता है, मापकर उतारता है। निस्सन्देह वह अपने दासों का ध्यान रखनेवाला निरीक्षक है।

४२.२७

११७ साधना-मार्ग में ईश्वर मार्गदर्शक

१ जो हमारे लिए जूझते रहे, उन्हें हम अपने मार्ग अवश्य दिखा देंगे। निस्सन्देह ईश्वर सत्कृत्य करनेवालों के साथ है।

२९.६९

११८ भक्तों की सहायता : ईश्वर का विरुद

१ हमारे दासों, प्रेषितों के लिए हमारा यह अभिवचन पहले से ही पहुँच चुका है।

२ कि निस्सन्देह उन्हें अवश्यमेव सहायता दी जायगी।

३७.१७१-१७२

● ११९ सहायकों को सहायता मिलेगी

१ हे श्रद्धालुओ ! यदि तुम ईश्वर की सहायता करोगे, तो वह तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे पाँव जमा देगा।

४७.७

● १२० ईश्वर सन्निकट है

१ जब मेरे दास तुझे मेरे विषय में पूछें (तो तू कह कि) मैं सन्निकट हूँ। पूकारनेवाले की पुकार का उत्तर देता हूँ, जब कि वह मुझे पुकारता है। सो उन्हें चाहिए कि वे मेरी आज्ञा मानें और मुझ पर श्रद्धा रखें, जिससे कि वे सन्मार्ग पर आयें।

२.१८६

● १२१ ददामि बुद्धियोगम्

१ हे श्रद्धालुओ ! यदि ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करो, तो वह तुम्हें विवेक देगा, बुद्धि देगा और तुम्हारे दोष दूर करेगा और तुम्हें क्षमा करेगा। ईश्वर महान् वैभवशाली है।

८.२९

१२२ सान्त्वना मिलती है

१ वही है , जिसने श्रद्धावानों के हृदय में सान्त्वना उत्पन्न की, जिससे कि वे अपनी श्रद्धा के साथ श्रद्धा में और आगे बढ़े ...।

४८.४

१२३ मोक्षयिष्यामि

१ फिर हम अपने प्रेषितों और उन लोगों को, जो श्रद्धायुत हुए, मोक्ष देंगे। इसी प्रकार हमारा उत्तरदायित्व है कि श्रद्धावानों को मुक्त करें।

१०.१०३

२५ धीरज

१२४ शीघ्रता न कर, संकेत दिखाऊँगा

१ मनुष्य शीघ्रता का बना है। निकट भविष्य में तुम्हें प्रभु-संकेत दिखलाऊँगा। सो तुम मुझसे शीघ्रता करने को मत कहो।

२१.३७

१२५ धीरज रखो

१ देवदूत और जीव उसकी ओर एक दिन में चढ़ते हैं, जिस दिन का परिमाण पचास हजार वर्ष है।

२ सो धीरज रख, खूब धीरज रख।

७०.४-५

१२६ क्रम-क्रम से विकास

१ शपथ खाता हूँ सन्ध्या की लालिमा की,

२ और रात्रि की और उनकी, जिनको वह समेट लेती है।

३ और चन्द्रमा की, जब वह पूर्ण हो जाय

४ कि तुम अवश्य क्रम-क्रम से विकास करोगे।

८४.१६-१९

१२ सत्संगति

२६ सत्संग

१२७ महापुरुषों की संगति का लाभ

१ जो ईश्वर एवं उसके प्रेषित की आज्ञा माने, सो वह उन लोगों के साथ है, जिन पर ईश्वर ने दया की है, अर्थात् सन्देष्टा, सत्यभाषी, हुतात्मा, साक्षात्कारी तथा सन्त, सज्जन। ये लोग निश्चय ही अच्छे साथी हैं।

२ यह ईश्वर से प्राप्त कृपावैभव है और ईश्वर पूर्ण ज्ञानी है।

४.६९-७०

१२८ सत्संगति से चिपटे रहो

१ अपने आपको उनके साथ चिपटा रख, जो अपने प्रभु को प्रातः-सायं पुकारते हैं और यह चाहते हैं कि वह उन पर प्रसन्न रहे। ऐहिक जीवन की जगमगाहट से तेरी आँखें उन लोगों से फिर न जायँ।

१८.२८

१२९ गुरुप्रबोध-पद्धति

१ फिर हमारे दासों में से एक दास को (मूसा ने) पाया, जिस पर हमने अनुग्रह किया था और अपने पास से ज्ञान दिया था,

२ उससे मूसा ने कहा : क्या मैं तेरे साथ रहूँ, इसलिए कि जो भला मार्ग तुझे दिखाया गया है, वह तू मुझे सिखा दे ?

३ वह बोला : तू कदापि मेरे साथ धीरज न रख सकेगा।

४ और तू क्योंकर धीरज रखेगा ऐसी बात के सम्बन्ध में, जो तेरी समझ की परिधि में नहीं है !

५ मूसा ने कहा : यदि ईश्वर ने चाहा, तो तू अवश्य मुझे धीरज रखनेवाला पायेगा और मैं तेरी किसी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।

६ वह बोला : फिर यदि तू मेरा अनुसरण करता है, तो मुझसे किसी बात के विषय में कोई प्रश्न न करना, जब तक मैं तेरे लिए उसके निर्देश का प्रारम्भ न करूँ।

१८.६५-७०

● १३० स्वाध्याय के लिए कुछ लोग पीछे रहें

१ श्रद्धावानों के लिए उचित नहीं कि सब-के-सब कूच कर जायँ। उनके हर समुदाय में से एक भाग क्यों न कूच करे, जिससे कि शेष लोग धर्म का ज्ञान प्राप्त करें। जिससे कि ये लोग अपने समाज को, जब कि वह युद्ध से लौटकर आये, सावधान करें, जिससे कि वह समाज धर्म के विषय में सचेत रहे।

९.१२२

१३१ सज्जनों का समाज बनाओ

१ हे श्रद्धावानो! ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करो, जैसा कि करना चाहिए, और ऐसी ही स्थिति में मरो कि तुमने सम्पूर्ण ईश्वर की शरण ली है।

२ और तुम सब मिलकर ईश्वर की रस्सी दृढ़ता से पकड़ो और बिखर न जाओ। तुम पर ईश्वर की जो दया है, उसे याद करो कि जब तुम परस्पर शत्रु थे, तो ईश्वर ने तुम्हारे हृदय में स्नेह डाला और अब तुम उसकी दया से भाई-भाई हो गये तथा तुम आग के एक गढ़े के किनारे पर थे, सो तुमको ईश्वर ने उससे बचाया। इस प्रकार ईश्वर अपने संकेत तुम्हारे लिए वर्णन करता है, जिससे कि तुम मार्ग प्राप्त करो।

३ तुममें से एक समाज ऐसा होना चाहिए, जो भलाई की ओर बुलाता रहे और अच्छे कामों की आज्ञा करे और बुराई का निषेध करे। ये ही लोग हैं, जो साफल्य पानेवाले हैं।

३.१०२-१०४

१३२ पशु-पक्षि-समाज मनुष्यवत्

१ भूमि पर चलनेवाले जो भी पशु हैं और अपने दोनों पंखों से उड़नेवाले जो भी पक्षी हैं, उनके तुम्हारे ही भाँति समाज ······· है।

६.३८

१३ अनासक्ति

२७ संसार अनित्य

१३३ उजड़ा बगीचा

१ ऐहिक जीवन की स्थिति तो ऐसी है, मानो हमने आकाश से पानी बरसाया, फिर उससे भूमि की वनस्पति, जिसको मनुष्य और प्राणी खाते हैं, खूब घनी होकर निकली, यहाँ तक कि जब भूमि ने अपना शृंगार किया और प्रियदर्शिनी हुई तथा भूमिवालों ने यह विचार किया कि यह वैभव अब हमारे हाथ लगेगा, अचानक उस पर रात को या दिन को

हमारी आज्ञा जा पहुँची और हमनें उसे काटकर ढेर कर डाला, मानो कि कल वहाँ वह उपस्थित ही नहीं थी। इस प्रकार हम संकेतों को विस्तार से वर्णन करते हैं उन लोगों के लिए, जो विचार करते हैं।

१०.२४

१३४ फसल पर पाला

१ लोग इस ऐहिक जीवन में जो कुछ व्यय करते हैं, दृष्टान्त ऐसा है, जैसे एक हवा हो, जिसमें पाला हो, वह हवा ऐसे लोगों की खेती को लग जाय, जिन्होंने अपने तईं बुरा किया था—सो उस हवा ने उसे चौपट कर डाला और ईश्वर ने उन पर अत्याचार नहीं किया, अपितु वे स्वयं ही अपने पर अत्याचार करते हैं।

३.११७

१३५ इह लोक क्षणभंगुर

१ ऐहिक जीवन का दृष्टान्त उनसे वर्णन कर, जैसे, हमने आकाश से पानी उतारा, फिर उसमें से भूमि की वनस्पति खूब घनी हो गयी, फिर वह ऐसी चूर-चूर हो गयी कि हवाएँ उसे उड़ाये फिरती हैं। ईश्वर सर्व-कर्म-समर्थ है।

२ सम्पत्ति और सन्तति ऐहिक जीवन की कसौटी है और शेष रहनेवाली हैं सत्कृतियाँ। तेरे प्रभु के निकट प्रतिफल में ये अधिक अच्छी हैं और आकांक्षा की दृष्टि से श्रेष्ठतर हैं।

१८.४५-४६

१३६ संसार की शोभा परीक्षा के लिए

१ निस्सन्देह जो कुछ भूमि के ऊपर है, उसे हमने भूमि का शृंगार बनाया है, जिससे कि हम लोगों की कसौटी करें कि उनमें कौन अच्छा काम करता है।

१८.७

१३७ अमर पट्टा किसीको भी नहीं

१ हमने तुझसे पूर्व किसी मनुष्य को अमरता प्रदान नहीं की, फिर क्या तू मर गया, तो क्या ये लोग सदा जीवित रहेंगे ?

२ प्रत्येक जीव को मृत्यु चखनी है। और हम बुरी और भली स्थितियों द्वारा तुम्हारी खूब कसौटी करते हैं। फिर हमारे ही पास तुम लौटाये जाओगे।

२१.३४-३५

१३८ तुम सुरक्षित हो ?

१ क्या तुमको उन सबमें, जो यहाँ हैं, बेखटके छोड़ दिया जायगा ?

२ उद्यानों में, झरनों में

३ और खेती में। खजूरों में, जिनके गुच्छे टूटे पड़ते हैं।

४ (यद्यपि तुम) पर्वतों में इतराते हुए घर तराशते (रहोगे)।

२६.१४६-१४९

● १३९ ऐहिक संसार एक खेल

१ यह ऐहिक जीवन तो मनोरंजन एवं क्रीड़ा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं और वास्तविकता यह है कि अन्तिम गृह ही जीवन है। अरे-अरे ! यदि ये लोग जानते !

२९.६४

१४० वासनाओं के विषय

१ वासनाओं को आकृष्ट करनेवाले विषय के प्रेम ने लोगों को आसक्त किया है। जैसे, स्त्रियाँ, पुत्र, स्वर्ण-रजतराशि, अंकित अश्व, पशु तथा कृषि। यह ऐहिक जीवन का मूलधन है, पर ईश्वर के पास ही अच्छा आश्रय है।

३.१४

२८ वैराग्य

१४१ भोग-विलास की लालसा न रखो

१ और अपनी आँखें उन वस्तुओं की ओर न पसार, जो हमने उन युग्मों

को ऐहिक जीवन की जगमगाहट के रूप में लाभ उठाने के लिए दे रखी है कि उन्हें उन वस्तुओं के द्वारा जाँचें। और तेरे प्रभु की देन अधिक हितावह एवं निरन्तर स्थायी रहनेवाली है।

२०.१३१

● १४२ स्त्री-पुत्रों में शत्रु सम्भव

१ परमात्मा के अतिरिक्त कोई भजनीय नहीं और श्रद्धावानों को चाहिए कि वे परमात्मा पर ही विश्वास करें।

२ हे श्रद्धावानो ! तुम्हारी स्त्रियों और पुत्रों में तुम्हारे शत्रु सम्भव हैं। सो तुम उनसे बचो। और यदि तुम उनके दोषों को भूल जाओ, उनकी त्रुटियों की ओर ध्यान न दो एवं उन्हें क्षमा कर दो (तो) निस्सन्देह परमात्मा क्षमावान् करुणावान् है।

६४.३-१४

● १४३ निःस्वार्थी रहो

१ तुम्हारी सम्पत्ति एवं तुम्हारी सन्तति तुम्हारे लिए कसौटी है और ईश्वर के ही पास सर्वोत्तम पुरस्कार है।

२ तो यथासम्भव ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करो और सुनो और मानो तथा उसके मार्ग में धन व्यय करो। इसमें तुम्हारा अपना भला है और जो लोग अपने लोभ से बचा लिये जायँ, वे ही लोग सफलता पानेवाले हैं।

६४.१५-१६

● १४४ शैतान से सावधान !

१ हे लोगो, निश्चय ही ईश्वर का अभिवचन सच्चा है। सो तुम्हें ऐहिक जीवन धोखे में न डाले और कपटी शैतान ईश्वर के विषय में तुम्हें कदापि धोखा न दे।

२ निस्सन्देह शैतान तुम्हारा शत्रु है, सो तुम भी उसे शत्रु समझो। वह

अपनी टोली को इसलिए बुलाता है कि वे नारकीय आगवालों में से हो जायँ (नरक के भागी बन जायँ)। ३५.५-६

१४५ लोक लाहु परलोक निबाहू

१ जो कोई परलोक की फसल चाहता है, हम उसे उसकी खेती में अधिक देते हैं और जो कोई इहलोक की फसल चाहता है, उसे हम इहलोक में से कुछ देते हैं। उसे परलोक में कोई भाग नहीं मिलता।

४२.२०

खण्ड ४ : भक्त-अभक्त

१४ भक्त-लक्षण

२९ दशलक्षणी

● १४६ दशलक्षण

१ शरणागत एवं शरणागता, श्रद्धावान् एवं श्रद्धावती, आज्ञापालक एवं आज्ञापालिका, सत्यभाषी एवं सत्यभाषिणी, धीर एवं धीरा, विनीत एवं विनीता, दाता एवं दात्री, उपवासी एवं उपवासिनी, शीलरक्षक एवं शीलरक्षिका तथा ईश-स्मरणशील एवं ईश-स्मरणशीला–इनके लिए ईश्वर ने क्षमा एवं महान् पुण्यफल सन्नद्ध कर रखा है।

३३.३५

३० प्रार्थनावान्

● १४७ जामिनि जागहिं जोगी

१ निस्सन्देह ईश्वर-कर्म-परायण व्यक्ति स्वर्ग के उद्यानों एवं निर्झरों में निवास करेंगे।

२ उनका प्रभु तुम्हें जो देगा, सो लेते रहेंगे। वे इससे पूर्व सदाचारी थे।

३ वे रात को बहुत थोड़ा सोते थे।

४ और पिछली रात में अपने पापों के लिए क्षमा माँगते थे।

५ और उनकी सम्पत्ति में भिक्षुकों एवं सर्वहाराओं का अधिकार था।

५१.१५-१९

१४८ बिस्तर से पीठ नहीं छूती

१ हमारे वचनों को वही मानते हैं कि जब उन्हें उन वचनों के द्वारा समझाया जाता है, तो वे प्रणिपात में गिर पड़ते हैं और अपने प्रभु की स्तुति के साथ उसका स्मरण करते हैं और घमण्ड नहीं करते।

२ उनकी करवटें बिछौने से छूतीं नहीं। अपने प्रभु को भय एवं आशा के साथ पुकारते हैं और हमारा दिया हुआ हमारे मार्ग में व्यय करते हैं।

३ और कोई नहीं जानता कि उनके लिए उनको प्रसन्नता देनेवाली क्या-क्या वस्तुएँ छिपा रखी गयी हैं। यह प्रतिफल है उनकी कृतियों का।

३२.१५-१७

१४९ माथे पर घट्ठे

१ .... तू देखेगा उनको प्रणाम करते हुए, प्रणिपात करते हुए, ईश्वर का कृपा-वैभव एवं उसकी प्रसन्नता ढूँढ़ते हुए। उनकी पहचान उनके माथे पर प्रणिपात के घट्ठे हैं। यही है उनका दृष्टान्त तौरात में और यही है उनका दृष्टान्त बाइबिल में। जैसे कि खेती ने अपना अँखुआ निकाला, फिर उसको मजबूत किया, फिर मोटा हुआ और अपने तने पर ऐसा सीधा खड़ा हो गया कि किसानों को प्रसन्न करने लगा।

४८.२९

१५०कम्पित-हृदय

१ श्रद्धावान् वे ही हैं कि जब ईश्वर का वर्णन किया जाता है, तो उनके हृदय कम्पित होते हैं और जब उनके सम्मुख उसके वचन पढ़े जाते हैं, तो वे वचन उनकी श्रद्धा बताते हैं और वे अपने प्रभु पर विश्वास रखते हैं।

८.२

१५१ विनम्र

१ .... शुभ सन्देश दे उन विनम्रों को।

२ कि उनके हृदय कम्पित हो उठते हैं, जब ईश्वर का वर्णन किया जाता

है। जो आ पड़नेवाले संकट में धीरज रखते हैं और जो नित्यनियत प्रार्थना करते हैं और हमारे दिये में से हमारे मार्ग में व्यय करते हैं।

२२.३४-३५

१५२ कृपालु के दास

१ मंगलप्रद है वह, जिसने आकाश में राशि-चक्र बनाये और उसमें एक प्रचण्ड दीप एवं प्रकाशमान चन्द्र बनाया,

२ और वही है, जिसने अदलते-बदलते आगे-पीछे आनेवाले रात और दिन बनाये। ये सब उनके लिए संकेत हैं, जो सोचना चाहते हैं और कृतज्ञता व्यक्त करना चाहते हैं।

३ और कृपालु के दास वे हैं, जो भूमि पर नम्रता से चलते हैं और जब बेसमझ लोग उनसे बातें करते हैं, तो कहते हैं : 'भाई सलाम !'

४ जो लोग अपने प्रभु के सपक्ष प्रणिपात में और खड़े-खड़े रात्रि बिताते हैं।

२५.६१-६४

३१ निष्ठावान्

१५३ मच्चित्ताः मद्गतप्राणाः

१ लोगों में ऐसे भी हैं, जो ईश्वर की प्रसन्नता के लिए अपने प्राणों को बेच डालते हैं। ईश्वर अपने दासों पर बहुत स्नेह करनेवाला है।

२.२०७

१५४ अन्योन्य मित्र

१ निस्सन्देह जो लोग श्रद्धा रखते हैं, जिन्होने अपनी जन्मभूमि छोड़ी और तन-मन-धन से ईश्वर के मार्ग में जूझते रहे तथा जिन लोगों ने उन्हें आश्रय दिया और सहायता की, वे लोग अन्योन्य मित्र हैं।

८.७२

१५५ परमात्मा के मित्र

१ स्मरण रखो, जो परमात्मा के मित्र, हैं उनको न भय है, न शोक।

२ ये वे लोग हैं, जो श्रद्धा रखते हैं और संयम से रहते हैं।

३ उनके लिए इहलोक के जीवन के और परलोक के जीवन में शुभ सन्देश है। परमात्मा की बातें परिवर्तित नहीं होतीं।

१०.६२-६४

१५६ ईश्वर की भक्त-मण्डली

१ तू न पायेगा ऐसे लोगों को, जो ईश्वर एवं अन्तिम दिन पर श्रद्धा रखते हुए उन लोगों से मित्रता रखते हों, जो ईश्वर एवं उसके प्रेषित के विरोधी हैं, फिर भले ही वे उनके पिता हों, पुत्र हों, भाई हों या उनके कुटुम्बी हों। ये ही लोग हैं, जिनके मन में ईश्वर ने श्रद्धा लिख दी है और अपने दातृत्व से जिनकी सहायता की है। वह उन्हें ऐसी वाटिकाओं में प्रविष्ट करेगा, जिनके नीचे नदियाँ बहती होंगी। वे उनमें नित्य रहेंगे। ईश्वर उनसे प्रसन्न और वे उससे प्रसन्न। यह ईश्वर की भक्त-मण्डली है, खूब सुन लो, ईश्वर की मण्डली ही सफलता प्राप्त करनेवाली है।

५८.२२

३२ धैर्यवान्

● १५७ सहनशील

१ हे श्रद्धाबानो ! धीरज से और प्रार्थना के साथ ईश्वर से सहायता चाहो। निस्सन्देह ईश्वर धीरज रखनेवालों के साथ है।

२ और जो ईश्वर के मार्ग में मारे जाते हैं, उनको मरा हुआ न कहो, अपितु वे जीवित हैं। पर तुम नहीं समझते।

३ और हम तुम्हारी कसौटी अवश्य करेंगे, कुछ भय द्वारा, कुछ क्षुधा द्वारा और कुछ धन, प्राण और फलों की हानि द्वारा। शुभ सन्देश सुना दे धीरज रखनेवालों को–

४ कि जब तुम्हें कुछ कष्ट पहुँचे, तो कहें कि हम तो ईश्वर के ही हैं, और हम उसीकी ओर लौटकर जानेवाले हैं।

५ ऐसे लोगों पर उनके प्रभु की ओर से दया है और कृपा है और ये ही लोग ठीक रास्ते पर हैं।

२.१५३-१५७

३३ अहिंसक

१५८ क्षमाशील

१ अपने प्रभु की क्षमा की ओर दौड़ो, तथा स्वर्ग की ओर, जिसकी व्यापकता में आकाश एवं भूमि समाविष्ट है, जो सन्नद्ध रखा गया है, पाप से बचनेवालों के लिए।

२ (वे) सम्पन्नता एवं विपन्नता में हमारे मार्ग में व्यय करते हैं, क्रोध पी जाते हैं और लोगों की ओर ध्यान नहीं देते—और ईश्वर सत्कृति करनेवालों पर प्रेम करता है।

३ और उन लोगों पर, जो जब घृणास्पद कर्म करते हैं या अपने ऊपर अत्याचार करते हैं, तो वे ईश्वर को याद करते हैं और (वे) अपने पापों की क्षमा माँगते हैं और ईश्वर के अतिरिक्त कौन है, जो पापों को क्षमा करे ? और जान-बूझकर वे अपने किये पर हठ नहीं करते—

४ ये ही लोग हैं, जिनका प्रतिफल उनके प्रभु की ओर से क्षमा है और उद्यान हैं, जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं। ये लोग नित्य उनमें रहेंगे। कर्मठ लोगों के लिए यह क्या ही उत्तम पुरस्कार है !

३.१३३-१३६

● १५९ दातार

१ ईश्वर के प्रेम के लिए वे वञ्चितों, अनाथों तथा बन्दियों को भोजन कराते हैं।

२ (वे कहते हैं) केवल ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ही हम खिलाते हैं, हम तुमसे न कोई प्रतिफल चाहते, न कृतज्ञता।

३ हम अपने प्रभु का भय रखते हैं और भय रखते हैं मुँह बनानेवाले और त्योरी चढ़ानेवाले दिन का।

४ अतः ईश्वर ने उन्हें उस दिन के संकट से बचा लिया और उन्हें स्फूर्ति एवं आनन्द देकर सहायता दी।

७६.८-११

● १६० अन्योन्य विमर्शकारी

१ जो लोग दोषों एवं घृणास्पद कर्मों से बचते हैं, जब उन्हें क्रोध आता है, तो क्षमा करते हैं।

२ और जिन लोगों ने अपने प्रभु की आज्ञा मानी तथा नित्य-नियमित प्रार्थना की, उनका कार्य परस्पर विमर्श से होता है और वे हमारे मार्ग में उसमें से व्यय करते हैं, जो हमने उन्हें दिया है।

४२.३७-३८

१६१ जोड़नेवाले

१ और वे लोग जो जोड़ते हैं उसको, जिसके जोड़ने की ईश्वर ने आज्ञा दी है और अपने प्रभु से डरते हैं और हानिकर लेखे-जोखे की चिन्ता रखते हैं।

२ और अपने अपने प्रभु की प्रसन्नता चाहने के लिए धीरज रखते हैं तथा नित्य-नियमित प्रार्थना करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें दिया है, उसमें से हमारे मार्ग में प्रकट या अप्रकट व्यय करते हैं तथा अच्छाई के द्वारा बुराई को दूर करते हैं। ये ही लोग हैं, जिनके लिए सद्गति है।

१३.२१-२२

३४ भक्तों को आशीर्वाद

१६२ शैतान का बस भक्तों पर नहीं चलेगा

१ (हे शैतान !) निस्सन्देह जो मेरे दास हैं, उन पर तेरा कुछ भी बस नहीं चलेगा। (वह) उन भ्रमितों पर चलेगा, जो तेरे मार्ग पर चलें।

१५.४२

१६३ देवदूतों की भक्तों के लिए प्रार्थना

१ जो देवदूत ईश्वर का सिंहासन उठा रहे हैं और जो उनके इर्द-गिर्द हैं, वे अपने प्रभु का जप करते हैं और उसका स्तवन करते हैं, और उस पर दृढ़ श्रद्धा रखते हैं और श्रद्धावानों के लिए प्रभु की क्षमा माँगते हैं कि हे प्रभो! तेरी करुणा और तेरे ज्ञान ने प्रत्येक वस्तु को व्याप लिया है। तो जो लोग पश्चाताप करें तथा तेरे मार्ग पर चलें, उनको क्षमा कर और उन्हें नरक के दण्ड से बचा।

२ हे प्रभो ! उनको नित्य रहने के स्वर्ग में, जिनका तूने उन्हें वचन दिया है, प्रविष्ट कर और उनके पितरों, पत्नियों एवं सन्तति में से जो सत्कृतिवान् हों, उन्हें भी, उसमें प्रविष्ट कर। निश्चय ही तू सर्वशक्तिमान्, सर्वविद् है।

३ और उन्हें दुष्कृत्यों से बचा। और जिसे तू दुष्कृत्यों से उस दिन बचा ले, उस पर तूने बहुत बड़ी कृपा की। और यही बड़ी विजय है।

४०.७-९

१५ अभक्त

३५ नास्तिकाः

१६४ पाषाण से भी कठोर

१ इस पर भी (ईश्वर के संकेत देखने के पश्चात् भी) फिर तुम्हारे मन पत्थर के समान अथवा उससे भी कठोर हो गये। वास्तव में पत्थरों में तो ऐसे भी हैं, जिनसे निर्झर फूट निकलते हैं और उनमें कुछ ऐसे हैं, जो फट जाते हैं और उनमें से पानी निकलता है। और उनमें से ऐसे भी हैं कि ईश्वर के भय से गिर पड़ते हैं। ......

२.७४

१६५ अविश्वास की परिसीमा

१ यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल दें और वे दिन-दहाड़े उसमें चढ़ने लगें।

२ तब भी यही कहेंगे कि हमारी दृष्टि बाँध दी गयी है। अपितु हम लोगों पर तो जादू कर दिया गया है।

१५.१४-१५

१६६ डाँवाडोल

१ उसने सोचा और अटकल दौड़ायी।

२ उसका नाश हो, कैसी अटकल दौड़ायी।

३ फिर उसका नाश हो–कैसी अटकल दौड़ायी।

४ फिर विचार किया।

५ फिर त्यौरी चढ़ायी और मुँह बनाया।

६ फिर पीठ फेरी और घमण्ड किया।

७ फिर बोला : यह तो केवल जादू है, जो (पहले से) चला आता है।

७४.१८-२४

१६७ चमत्कार दिखाओ

१ वे बोले : हम तेरा कहना कदापि न मानेंगे, जब तक तू हमारे लिए भूमि से एक स्रोत प्रवाहित न कर दे।

२ या तेरा खजूरों का और अंगूरों का एक बाग हो। फिर उनके बीच-बीच में तू नदियाँ प्रवाहित कर दे।

३ या तू हम पर आकाश टुकड़े-टुकड़े (कराके) गिरा दे, जैसा कि तू कहा करता है या ईश्वर को या देवदूतों को हमारे सामने ले आ।

४ या तेरे लिए स्वर्ण-भवन हो या तू आकाश पर चढ़ जा, और तेरे चढ़ने का भी हम विश्वास न करेंगे, जब तक तू हम पर एक ग्रन्थ उतार न

लाये, जिसे हम पढ़ें । तू कह : पवित्र है मेरा प्रभु, मैं एक मानव हूँ–सन्देश पहुँचानेवाला ।

१७.९०-९३

१६८ वितण्डवादी नास्तिक एवं तथाकथित आस्तिक

१ कुछ लोग ऐसे होते हैं कि वे परमात्मा के विषय में झगड़ते रहते हैं– बिना किसी ज्ञान के, बिना मार्ग-दर्शन के, या बिना किसी ऐसे ग्रन्थ के, जो प्रकाश दे–

२ घमण्ड के साथ, जिससे कि परमात्मा के मार्ग से लोगों को च्युत करें । ऐसे मनुष्य के लिए इस जगत् में अपकीर्ति है और हम उसे पुनरुत्थान के दिन जलती आग का दण्ड भुगतायेंगे ।

३ और कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो सीमा-रेखा पर (रहकर) परमात्मा की भक्ति करते हैं । फिर यदि उन्हें लाभ पहुँचा, तो उस भक्ति पर स्थिर हुए और यदि उन पर कोई कसौटी आ पड़ी, तो उलटे फिर गये । उसने इहलोक एवं परलोक दोनों गँवाये । यही स्पष्ट हानि है ।

२२.८,९,११

१६९ अविश्वासी की उपमा

१ उनका दृष्टान्त उस मनुष्य का-सा है, जिसने आग जलायी, फिर जब आग ने उसके परिसर को प्रज्वलित किया, तो ईश्वर उनका प्रकाश ले गया और उनको अँधेरे में छोड़ दिया कि वे कुछ नहीं देखते ।

२ बहरे हैं, गूँगे हैं, अन्धे हैं, सो वे नहीं पलटेंगे ।

३ या उनका दृष्टान्त ऐसा है, जैसे आकाश से जोर की वर्षा हो रही है, उसमें अन्धकार है और मेघों की गड़गड़ाहट और बिजली की चमक है । वे कड़क के मारे मृत्यु के डर से अपने कानों में उँगलियाँ ठूँस लेते हैं और ईश्वर श्रद्धाहीनों को घेरे हुए है ।

४ ऐसा लगता है कि विद्युत् उनकी दृष्टि छीन ले जाय । जब वह उन पर चमकती है, तो उसके प्रकाश में वे चलने लगते हैं और जब उन पर

अन्धकार करती है, तो वे खड़े हो जाते हैं और यदि ईश्वर चाहे तो उनकी दर्शन-शक्ति एवं श्रवण-शक्ति ले जाय। निस्सन्देह, ईश्वर सर्व-कर्म-समर्थ है।

२.१७-२०

३६ भ्रान्तचित्त

१७० श्रीमान् नहीं मानते

१ हमने किसी बस्ती में कोई सावधान करनेवाला भेजा, तो वहाँ के श्रीमानों ने यही कहा कि जिस वस्तु के साथ तुम भेजे गये हो, उसे हम नहीं मानते।

२ और उन्होंने कहा : हम सम्पत्ति एवं सन्तति में अधिक हैं और हमें कोई दण्ड नहीं होगा।

३४.३४-३५

● १७१ "श्रद्धा रखना मूर्खों का काम !"

१ जब उनसे कहा जाता है कि श्रद्धा रखो, जिस प्रकार अन्य लोगों ने श्रद्धा रखी, तो कहते हैं : क्या हम श्रद्धा रखें, जिस प्रकार कि मूर्खों ने श्रद्धा रखी। समझ लो, वास्तव में वे ही मूर्ख हैं, किन्तु वे जानते नहीं।

२.१३

● १७२ कामवादी एवं कालवादी

१ क्या तूने देखा उस व्यक्ति को, जिसने वासनाओं को अपना देवता बना रखा है। और परमात्मा ने उसे, सूझ-बूझ रहते हुए, भ्रमित कर दिया है और उसके कान और मन पर मुहर लगा दी है और उनकी आँख पर आवरण डाल दिया है। फिर उसे परमात्मा के अतिरिक्त कौन मार्ग पर लाये ? तो क्या तुम नहीं सोचते ?

२ और वे कहते हैं : हमारे इस ऐहिक जीवन के अतिरिक्त और कुछ

नहीं है। हम मरते हैं और हम जीते हैं और काल के बिना हमें कोई नहीं मारता। ४५.२३-२४

● १७३ "ईश्वर उन्हें नहीं देता, तो हम क्यों दें ?"

१ और जब उनसे कहा जाता है कि परमात्मा ने जो कुछ तुम्हें दिया है, उसमें से उसके मार्ग में व्यय करो, तो श्रद्धाहीन श्रद्धावानों से कहते हैं कि क्या हम ऐसों को खिलायें कि जिन्हें ईश्वर चाहता तो खिला देता ? तुम लोग तो स्पष्ट हो भ्रमित अवस्था में हो।

३६.४७

१७४ भक्तों को सतानेवाला

१ निस्सन्देह जिन्होंने श्रद्धावान् पुरुषों को एवं श्रद्धावती महिलाओं को सताया, फिर पश्चाताप नहीं किया, तो उनके लिए नरक का दण्ड है और उनके लिए जलने का दण्ड है।

८५.१०

● १७५ अनजानों से दुर्व्यवहार उचित माननेवाले

१ ग्रन्थवानों में से कुछ लोग ऐसे हैं कि यदि तू उनके पास धन की राशि धरोहर रखे, तो वे तुझे वह लौटा देंगे और कुछ उसमें ऐसे हैं कि यदि तूने उनके पास एक दीनार भी धरोहर रखी, तो वे तुझे वापस न करेंगे, जब तक कि तू उनके सिर पर खड़ा न हो। यह इसलिए कि उनका कहना है कि "अनपढ़ लोगों के साथ किये जानेवाले व्यवहार में हम पर कोई दोष नहीं।" और वह ईश्वर के विषय में झूठ बोलते हैं और वे यह जानते हैं।

३.७५

३७ मोघकर्माणः

१७६ सर्व हुतं भस्मनि

जो लोग अपने प्रभु से अश्रद्ध हुए, उनके कर्मों का दृष्टान्त उस राख का-सा है, जिसे एक तूफानी दिन की आँधी ने उड़ा दिया हो। वे कुछ न

पायेंगे उसमें से, जो उन्होंने कमाया। यही है दूर की भ्रान्ति।

१४.१८

१७७ खुदी हुई गुफाएँ व्यर्थ गयीं

१ निस्सन्देह हिज्रवालों ने प्रेषितों को अस्वीकार किया।

२ और हमने उन्हें अपने संकेत दिये, तो वे उनसे मुँह फेरे रहे।

३ और वे निश्चिन्त होकर पहाड़ों में घर कुरेदते रहे।

४ तो प्रातः होते ही एक बहुत बड़े धमाके ने उन्हें आ घेरा।

५ सो उनका कौशल उनके कुछ काम न आया!

१५.८०-८४

१७८ के मोघकर्माणः

१ कह : क्या हम तुम्हें उन लोगों की बात कहें, जो कर्मों की दृष्टि से बहुत घाटे में हैं ?

२ ये वे ही लोग हैं, जिनकी सारी दौड़धूप ऐहिक जीवन में खो गयी और वे इस कल्पना में हैं कि वे बहुत अच्छे काम कर रहे हैं····।

३ यही लोग हैं, जिन्होंने अपने प्रभु के संकेतों को और उसके मिलने को अस्वीकार किया, सो उनका किया-धरा मटियामेट हो गया। सो हम उनके लिए पुनरुत्थान के दिन कोई वजन निर्धारित नहीं करेंगे।

१८.१०३-१०५

● १७९ यथा खरो चन्दनभारवाही

१ जिन पर धर्मग्रन्थ, तौरात, लादा गया, पर उन्होंने उसे नहीं उठाया, उन लोगों का दृष्टान्त गधे जैसा है कि पीठ पर किताबें लादे हुए हैं।

६२.५

३८ नरकभाजः

१८० ऊँचाई से गिरना

१ ····जिसने ईश्वर का भागीदार बनाया, वह मानो आकाश से गिर पड़ा,

फिर उसको पक्षी उड़ा ले जाते हैं या हवा उसे किसी दूर स्थान पर फेंक देती है।

२२.३१

१८१ शैतान दुष्ट साथी

१ जो कोई ईश्वर के स्मरण से मुँह मोड़ता है, उसके लिए हम एक शैतान नियुक्त करते हैं, सो वह उसका साथी होता है।

२ और वे उसको मार्ग से रोकते हैं और ये लोग इस कल्पना में रहते हैं कि हम मार्ग पर हैं।

३ यहाँ तक कि जब हमारे पास आयेगा तो (शैतान से) कहेगा : अरे-अरे, मेरे और तेरे बीच पूर्व-पश्चिम की दूरी होती ! कैसा दुष्ट साथी है !

४३.३६-३८

१८२ शैतान किस पर सवार होता है ?

१ क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतर आते हैं ?

२ वे उतर आते हैं प्रत्येक झूठे पापी पर।

३ जो (जहाँ तहाँ) कान लगाये रहते हैं, पर उनमें अधिकतर झूठे हैं।

४ और कवि ? तो उनका अनुसरण करते हैं भटके हुए लोग !

५ क्या तूने नहीं देखा कि वे प्रत्येक क्षेत्र में सिर मारते फिरते हैं।

६ और यह कि वे जो कुछ कहते हैं, वह करते नहीं।

२६.२२१-२२६

१८३ हमारी करतूत

१ (स्वर्गवासी नरकवासियों से पूछेंगे) क्या चीज तुम्हें नरक में ले गयी ?

२ वे कहेंगे : हम प्रार्थना नहीं करते थे

३ तथा हम वञ्चितों को खाना नहीं खिलाते थे।

४ बकवासियों के साथ हम बकवास करते थे।

५ और हम अन्तिम न्याय के दिन का अस्वीकार करते थे।

६ यहाँ तक कि हमें मृत्यु आ गयी।

७४.४२-४७

१८४ नास्तिकों को धिक्कार

१ धिक्कार है, उस दिन ईश्वर का अस्वीकार करनेवालों के लिए।

२ क्या हमने पूर्वकालीनों को नष्ट नहीं किया,

३ फिर हम (इन) उत्तरकालीनों को भी उनके साथ कर देंगे।

४ हम पापियों के साथ ऐसा ही किया करते हैं।

५ धिक्कार है, उस दिन अस्वीकार करनेवालों के लिए।

७७.१५-१९

● १८५ "अरे-अरे, यदि मैं धूल होता तो!"

१ निस्सन्देह हमने तुम्हें एक निकटवर्ती आपत्ति से सावधान कर दिया, जिस दिन प्रत्येक मनुष्य अपने कृत-कर्मों को देखेगा और श्रद्धाहीन कहेगा : "अरे-अरे मैं धूल होता तो!"

७८.४०

खण्ड ५ : धर्म

१६ धर्म-विचार

३९ धर्म-निष्ठा

● १८६ धर्म-सार

१ धार्मिकता यह नहीं कि तुम अपना मुँह पूर्व की ओर करो या पश्चिम की ओर, अपितु धार्मिकता यह है कि कोई व्यक्ति श्रद्धा रखे ईश्वर पर, अन्तिम दिन पर, देवदूतों पर और ईश्वरीय ग्रन्थों पर और प्रेषितों पर तथा ईश्वर के प्रेम से धन दे, सगे-सम्बन्धियों को, अनाथों को, वञ्चितों को, प्रवासियों को तथा याचकों को और किसी बन्दी की मुक्ति के लिए और नित्य-नियमित प्रार्थना करे, नियत दान दे। और वे जब अभिवचन दें, तो अभिवचन पूरा करें। और तंगी, कठिन समय, संकट एवं आपत्ति में धीरज रखें। ये हैं सत्य-प्रिय लोग और यही हैं ईश्वर-परायण।

२.१७७

● १८७ धर्म-मर्यादा

१ सो, जिस प्रकार तुझे आज्ञा हुई है, दृढ़ रह और तेरे साथ वे भी दृढ़ रहें, जो पश्चात्तापयुक्त होकर मेरी ओर मुड़ें। और मर्यादा से न बढ़ो। निस्सन्देह तुम जो कुछ करते हो, उसे ईश्वर देखता है।

२ और उन लोगों की ओर न झुकना, जिन्होंने अत्याचार किये हैं। वरन् अग्नि की लपेट में आ जाओगे। ईश्वर के अतिरिक्त तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र नहीं। फिर तुम्हारी सहायता न की जायगी।

३ और नियमित प्रार्थना करो, दिन के दोनों छोरों में और कुछ रात्रि व्यतीत

होने पर। निस्सन्देह,सत्कृत्य दुष्कृत्यों को दूर करते हैं। यह एक स्मरणदायिनी वस्तु है उन लोगों के लिए, जो स्मरण रखते हैं।

४ और धीरज रखो। निस्सन्देह, सत्कृतिवानों का पारिश्रमिक नष्ट नहीं होता।

११.११२-११५

● १८८ ईश्वर-निर्मित मानव-स्वभाव का अनुसरण ही धर्म

१ अपना ध्यान स्थिर कर लो धर्म के लिए एकाग्र होकर। ईश्वर-निर्मित स्वभाव को धारण करो, जिस पर उसने मनुष्य को निर्माण किया। ईश्वर के सृष्टि-नियमों में कोई परिवर्तन नहीं। यही सरल धर्म है। किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं।

३०.३०

● १८९ इस्लाम की निष्ठा

१ जो कुछ आकाशों एवं भूमि में है, वह परमात्मा का ही है और तुम अपने मन की बात प्रकट करो या छिपाओ, ईश्वर तुमसे इसका लेखा लेगा, फिर जिसको चाहे क्षमा करे और जिसको चाहे दण्ड दे। ईश्वर सर्व-कर्म-समर्थ है।

२ प्रेषित उस पर श्रद्धा रखता है, जो उस पर उसके प्रभु की ओर से उतरा और श्रद्धावान् भी श्रद्धा रखते हैं। प्रत्येक श्रद्धा रखता है ईश्वर पर, देवदूतों पर, ग्रन्थों पर और प्रेषितों पर। उनका कहना है कि हम प्रेषितों में से किसीमें कोई भेद नहीं करते। हमने सुना और हमने माना। हे प्रभो ! हम तेरी क्षमा के याचक हैं और हमें तेरी ओर लौटकर जाना है।

२ ईश्वर किसी प्राणी पर उसकी समाई से अधिक बोझ नहीं डालता। जिसने जो कुछ कमाया, उसका फल उसीको है और जिसने जो कुछ करनी की, वह उसीको भरनी है। हे प्रभो ! यदि हमसे कोई भूल हो जाय या कोई दोष हो जाय, तो हमें न पकड़। हम पर ऐसा बोझ न डाल, जो तूने हमसे पहले लोगों पर डाला था। हे प्रभो, हम पर वह भार

न डाल, जिसकी हममें शक्ति नहीं और हमें माफ कर, क्षमा कर और हम पर कृपा कर। तू ही हमारा रक्षक है। श्रद्धाहीनों के विरोध में हमारी सहायता कर।

२.२८४-२८६

१९० ईश्वर-शरणता के अतिरिक्त कोई धर्म नहीं

१ क्या वे ईश्वरीय निष्ठा के अतिरिक्त और कुछ चाहते हैं ? वस्तुतः आकाश एवं भूमि में जो कोई हैं, सब सम्मति से या असम्मति से ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं और उसीकी ओर लौटाये जायेंगे।

३.८३

● १९१ दृढ़ आधार

१ जो कोई अपना हेतु ईश्वर के अधीन करे और वह सत्कृतिवान् हो, तो निस्सन्देह उसने मजबूत रस्सी पकड़ ली। ईश्वर के अधीन प्रत्येक कार्य की पूर्ति है।

३१.२२

४० धर्म-सहिष्णुता

१९२ धर्म में जबरदस्ती को अवकाश नहीं

१ धर्म के विषय में जोर-जबरदस्ती नहीं। सच्चा मार्ग कुमार्ग से अलग और स्पष्ट हो गया है। जो कोई कुवासनाओं को तज दे और ईश्वर पर श्रद्धा रखे, तो उसने दृढ़ सहारा, आश्रय ग्रहण किया, जो कभी टूटनेवाला नहीं। ईश्वर सब सुननेवाला, सब जाननेवाला है।

२.२५६

१९३ सर्व प्रेषितों पर श्रद्धा

१ जो लोग ईश्वर एवं उसके प्रेषितों को मानते नहीं और ईश्वर एवं उसके प्रेषितों में भेद करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम किसीको मानेंगे और किसीको नहीं मानेंगे और श्रद्धाहीनता एवं श्रद्धा के बीच एक रास्ता निकालना चाहते हैं,

२ वास्तव में यही लोग श्रद्धाहीन हैं और हमने श्रद्धाहीनों के लिए लज्जास्पद दण्ड तैयार रखा है।

३ किन्तु जो लोग ईश्वर एवं उसके प्रेषितों पर श्रद्धा रखते हैं और प्रेषितों में किसी में भी भेद नहीं करते, उनको हम अवश्य उनके प्रतिफल प्रदान करेंगे। ईश्वर क्षमावान्, करुणावान् है।

४.१५०-१५२

● १९४ भक्तों का समाज एक

१ निस्सन्देह तुम्हारा (भक्तों का) समाज एक समाज है और मैं तुम्हारा प्रभु हूँ, अतः मत्परायण हो जाओ।

२ फिर लोगों ने अपने (इस) धर्म को अपने बीच काटकर टुकड़े-टुकड़े कर लिया, और प्रत्येक सम्प्रदाय जो उसके पास है, उसी पर रीझ रहा है।

२३.५२-५३

● १९५ भाविकों को दूर न करो

१ जो लोग अपने प्रभु को प्रातः-सायं पुकारते हैं और उसकी प्रसन्नता चाहते हैं, उनको तू दूर न ढकेल। उनके लेखे में से तुझ पर कुछ नहीं है और न तेरे लेखे में से उन पर कुछ है कि तू उन्हें दूर हटा दे। ऐसा करने से दुष्टों में तेरी गिनती होगी।

६.५२

● १९६ अन्य देवताओं की निन्दा न करो

१ ये लोग ईश्वर के अतिरिक्त जिसको पूजनीय मानते हैं, तुम उनको बुरा न कहो, जिससे कि वे मर्यादा का भंग कर बिना समझे ईश्वर को बुरा कहने लगें......

६.१०८

● १९७ भलाई में होड़ करो

१ तुममें से हरएक के लिए हमने एक मार्ग बनाया एवं एक पद्धति बनायी

और यदि ईश्वर चाहता, तो तुम सबको अवश्य एक समाज बना देता। किन्तु उसने जो कुछ तुम्हें दिया है, उसमें तुम्हें वह जाँचना चाहता है। इसलिए तुम सत्कृतियों में एक-दूसरों से बढ़ने का प्रयत्न करो। ईश्वर के ही पास तुम्हें पहुँचना है। फिर जिस बात में तुम विरोध करते थे, उस विषय में वह तुम्हें वास्तविकता बतायेगा।

५.४१

● १९८ सुसंवाद साधो

१ तुम ग्रन्थवानों से केवल इस रीति से चर्चा करो, जो सौजन्यपूर्ण हो–उन लोगों को छोड़कर, जो अत्याचारी हैं–और कहो : जो ग्रंथ हम पर उतरा और तुम पर उतरा, उस पर हम श्रद्धा रखते हैं और हमारा भजनीय एवं तुम्हारा भजनीय एक ही है और हम उसीकी शरण हैं।

२९.४६

● १९९ तुम्हारा और मेरा प्रभु एक है

१ निस्सन्देह ईश्वर ही मेरा और तुम्हारा प्रभु है। सो उसकी भक्ति करो। यह सीधा मार्ग है।

४३.६४

● २०० पूर्व-पश्चिम समान

१ पूर्व एवं पश्चिम सब ईश्वर के ही हैं। सो तुम जिस ओर मुख करो, उसी ओर ईश्वर सम्मुख है। निस्सन्देह, ईश्वर व्यापक और ज्ञानमय है।

२.११५

● २०१ स्वर्ग किसीकी बपौती नहीं

१ वे कहते हैं : यहूदी और ईसाई के अतिरिक्त और कोई कदापि स्वर्ग में नहीं जायँगे। अरे, ये तो उनके मनोरथ हैं। कह : यदि तुम सच्चे हो, तो अपना प्रमाण लाओ।

२ क्यों नहीं ? जिसने अपने व्यक्तित्व ईश्वर को सौंप दिया और वह सत्कृतिवान् है, तो उसके लिए उसका प्रतिफल उसके प्रभु के पास है

● २१० सत्य हमारी वासनाओं के अनुसार नहीं चलता

१ सत्य यदि लोगों की वासनाओं का अनुकरण करे, तो आकाश एवं भूमि में जो कोई उनके बीच में है, सब बिगड़ जाय ..... ।

२३.७१

● २११ असत्य का मस्तक भंग

१ हम सत्य को असत्य पर फेंक मारते हैं। फिर वह उसका सिर फोड़ डालता है, फिर वह खतम होता है।

२१.१८

१८ वाक्शुद्धि

४३ सत्यसन्ध

● २१२ कथनी वैसी करनी

१ हे श्रद्धावानो ! ऐसी बात क्यों कहते हो, जो करते नहीं ?

२ ईश्वर के निकट यह बात बहुत निन्द्य है कि वह बात कहो, जो करो नहीं।

६१.२-३

● २१३ परोपदेश पाण्डित्यम्

१ क्या तुम लोगों को सत्कार्य करने का आदेश देते हो और अपने-आपको भूल जाते हो, जब कि तुम ग्रन्थ-पारायण करते हो ! फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ?

२.४४

● २१४ सूत तोड़नेवाली

१ ईश्वर को दिया हुआ अभिवचन पूरा करो जब कि तुमने अभिवचन

जो कोई अधिक सत्कर्म करे, तो वह उसके लिए अच्छा ही है। और यदि तुम उपवास करो, तो तुम्हारे लिए हितकर है, यह तुम जानो।

२.१८३-१८४

● २०६ पुण्ययात्रा

१ पुण्ययात्रा एवं क्षेत्र-दर्शन को ईश्वर के लिए पूरा करो। फिर यदि तुम कहीं रोके जाओ, तो जो भेंट बन पड़े, वह भेज दो........।

२ .... यात्रा में कोई दुष्ट आचरण, कोई दुर्भाषण और कोई कलह न हो.... ।

२.१९६-१९७

खण्ड ६ : नीति

१७ सत्य

४२ सत्यासत्य-विवेक

२०७ ज्ञान-अज्ञान-भेद

१ अन्धा और देखनेवाला समान नहीं

२ और न प्रकाश एवं अन्धकार

३ और न छाया एवं धूप

४ और न समान हैं जीवित एवं मृत.........।

३५.१९-२२

२०८ जल-फेन-न्याय

१ उसने आकाश से पानी उतारा, फिर अपने माप के अनुसार नाले बहने लगे। फिर वह बाढ़ फूला हुआ झाग ऊपर ले आयी और उस चीज पर भी ऐसा ही झाग होता है, जिसको गहने या साजो-सामान के लिए आग में तपाते हैं, इसी प्रकार ईश्वर सत्यासत्य का दृष्टान्त देता है। तो, जो झाग है, वह सूखकर उड़ जाता है और उसमें से जो चीज लोगों के काम आती है, वह जमीन में शेष रह जाती है, इस प्रकार ईश्वर अपने दृष्टान्त देता है।

१३.१७

● २०९ सत्यासत्य की मिलावट न करो

१ सत्य एवं असत्य की मिलावट न करो, और सत्य को जान-बूझकर मत छिपाओ।

२.४२

उनको कोई भय नहीं और न वे दुःखी होंगे।

२.१११-११२

४१ धर्म-विधि

● २०२ विधि-त्रय

१ और उन्हें आज्ञा दी गयी कि ईश्वर की भक्ति करें और केवल उसीके लिए शुद्ध निष्ठा रखें, एकाग्र होकर। और नित्य-नियमित प्रार्थना करें एवं नियत दान दें। यह सीधा धर्म है।

९८.५

● २०३ उपासना (पंच-नमाज)

१ वे जो कुछ कहते हैं, उसे सहन कर और अपने प्रभु के स्तवन के साथ उसका जप कर, जयजयकार कर। सूर्य निकलने से पहले और उसके अस्त होने के पहले और जप किया कर। रात की कुछ घड़ियों में और दिन के दोनों छोरों पर, जिससे कि प्रभु तुझे स्वीकार करे।

२०.१३०

● २०४ प्रभु-स्मरणपूर्वक आहार-सेवन

१ यदि ईश्वर के संकेतों पर तुम श्रद्धा रखते हो, तो जिस अन्न पर ईश्वर-नाम-स्मरण किया गया हो, उसमें से खाओ······

२ ···और उसमें से न खाओ, जिस पर ईश्वर-नाम-स्मरण न किया गया हो, क्योंकि ऐसा करना आज्ञा-भंग है······।

६.११८, १२१

● २०५ उपवास

१ हे श्रद्धावानो ! तुम्हारे लिए उपवास की विधि है–जैसे उन लोगों के लिए विधि थी, जो तुमसे पूर्व थे–जिससे कि तुम संयमी हो जाओ।

२ कुछ गिनती के दिन उपवास करो। फिर तुममें से जो कोई बीमार हो या प्रवास में हो, तो दूसरे दिनों में वह गिनती पूरी करे। और जो लोग शक्ति रखते हैं, उनके लिए विधि है, एक अकिंचन को अन्न देना। फिर

दिया है। और शपथों को दृढ़ करने के पश्चात् तोड़ न डालो, जब कि तुम ईश्वर को अपने ऊपर साक्षी बना चुके हो। निश्चय ही ईश्वर जानता है, जो कुछ तुम करते हो।

२ और उस स्त्री के जैसा न हो जाओ, जिसने अपना काता हुआ सूत मजबूत बना करके फिर टुकड़े-टुकड़े कर डाला !.......

१६.९१-९२

● २१५ सत्य-निष्ठा

१ जो लोग सच्ची बात लेकर आये और जिन्होंने उसे सच माना, वे ही लोग धर्मपरायण हैं।

२ वे जो कुछ चाहेंगे, वह उनके प्रभु के पास है। सत्कृतिवानों का यह प्रतिफल है।

३९.३३-३४

४४ मंगल वाणी

● २१६ सुवचन-कुवचन--उपमा

१ क्या तूने देखा नहीं कि ईश्वर ने सुवचन का कैसा दृष्टान्त दिया है ? उसका दृष्टान्त एक अच्छे (जाति के) वृक्ष का है, जिसका मूल दृढ़ है और उसकी शाखाएँ आकाश में हैं।

२ प्रतिक्षण वह अपने प्रभु की आज्ञा से फल दे रहा है और ईश्वर लोगों के लिए दृष्टान्त देता है, जिससे कि वे शिक्षा प्राप्त कर सकें।

३ और कुवचन का दृष्टान्त एक दुष्ट (जाति के) वृक्ष का है, जो भूमि के ऊपर ही ऊपर उखाड़ लिया जाता है। उसके लिए कोई स्थैर्य नहीं है।

१४.२४-२६

२१७ शिवं वद

१ मेरे दासों को कह कि वह बात कहें, जो बहुत अच्छी है। शैतान उसमें कलह के बीज डालता है। वास्तविकता यह है कि शैतान मनुष्य का स्पष्ट शत्रु है।

१७.५३

२१८ उत्तम वाणी

१ उससे उत्तम किसकी बात हो सकती है, जो ईश्वर की ओर बुलाये, और सत्कृत्य करे, और कहे कि निस्सन्देह मैं उन लोगों में हूँ, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व को ईश्वर की आज्ञा के अधीन किया।

४१.३३

२१९ सीधी बात

१ हे श्रद्धावानो ! ईश्वर से डरो और सीधी बात करो

३३.७०

४५ अनिन्दा

२२० बुरी बात मुख से न निकालो

१ बुरी बात वाणी पर लाना ईश्वर को नहीं भाता, अतिरिक्त इस स्थिति के कि किसी पर अत्याचार हुआ हो। ईश्वर सुननेवाला है, जाननेवाला है।

२ यदि तुम भलाई प्रकट करो या अप्रकट रखो, या बुराई को क्षमा करो तो, निस्सन्देह, ईश्वर क्षमावान्, सर्वशक्तिमान् है।

४.१४८-१४९

२२१ निन्दा न करो

१ हे श्रद्धावानो ! पुरुषों को पुरुषों की हँसी नहीं उड़ानी चाहिए कि कदाचित् वे उनसे अधिक अच्छे हों, और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उड़ायें, कि कदाचित् वे उनसे अधिक अच्छी हों। एक-दूसरे को दोष न लगाओ और एक-दूसरों को विद्रूपित नामों से न पुकारो। श्रद्धायुक्त होने के पश्चात् पाप का नाम ही बुरा है, और जो इससे परावृत न हों, वे ही अत्याचारी हैं।

२ हे श्रद्धावानो ! बहुत संशय करने से बचे रहो। निसन्देह, कुछ संशय पाप

हैं। और किसीकी टोह में न लगो, और तुम से कोई किसीकी चुगली न करे। भला तुममें से किसीको यह भायेगा कि अपने मरे हुए भाई का मांस खाये ? तुम्हें उससे घिन आयेगी। ईश्वर से डरते रहो। निस्सन्देह ईश्वर पश्चात्ताप को स्वीकार करनेवाला है, करुणावान् है।

४९.११-१२

२२२ विवाद टालो

१ जब तू उन लोगों को देखे कि वे हमारे वचनों पर टीका-टिप्पणियाँ कर रहे हैं, तो तू उनके पास से हट जा। यहाँ तक कि वे उसके अतिरिक्त और किसी बात में लग जायँ। और शैतान तुझे भुलावे में डाल दे, तो स्मरण आ जाने के पश्चात् तू उन अत्याचारियों के साथ न बैठ।

६.६८

२२३ व्यर्थ बातें टालो

१ जब व्यर्थ बातें सुनते हैं, तो टाल जाते हैं और कहते हैं : हमारे कर्म हमारे लिए हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए हैं। तुम्हें सलाम। हम बे-समझ लोगों से उलझना नहीं चाहते।

२८.५५

२२४ धर्म-निन्दा नहीं सुननी चाहिए

१ ईश्वर इस ग्रन्थ में तुम पर आज्ञा उतार चुका है कि जब तुम ईश्वर के वचनों के विषय में सुनो कि उनका अस्वीकार किया जा रहा है और उसकी हँसी उड़ायी जा रही है, तो उन लोगों के पास न बैठो। जब तक कि वे इसके अतिरिक्त दूसरी बात में न लग जायँ, नहीं तो तुम भी उन्हीं जैसे होगे……।

४.१४०

● २२५ निन्दकों की गति

१ दोष ढूँढ़नेवाले पिशुन एवं कटुभाषी के लिए धिक्कार,

२ जिसने धन इकट्ठा किया और उसे गिनता रहा,

३ वह इस गुमान में है कि धन उसको नित्य जीवित रखेगा।

४ कदापि नहीं, वह अवश्य फेंका जायगा उस जलानेवाली के भीतर।

५ और तू क्या जानता है कि वह जलानेवाली क्या है ?

६ वह है ईश्वर की सुलगायी हुई आग।

७ जो दिलों पर चढ़ जाती है।

८ निश्चय ही वह आग उन पर बन्द कर दी जायगी।

९ लम्बे-लम्बे खम्भों (के रूप) में।

१०४.१-९

११ अहिंसा

४६ न्याय-बुद्धि

● २२६ एक मनुष्य बचाना अर्थात् जगत् को बचाना

१ हमने इस्रायल-पुत्रों को आदेश दिया कि जिसने किसी मनुष्य की किसी प्राण की हानि के बदले या पृथ्वी में युद्ध छेड़ने के कारण के अतिरिक्त अन्य कारण से—हत्या की, तो उसने मानो, अखिल मानव-जाति की हत्या कर दी। और जिसने किसी प्राण को बचाया, उसने मानो अखिल मानव-जाति को जीवन प्रदान किया।

५.३५

२२७ कलह न फैलाओ

१ अपने प्रभु को पुकारो, गिड़गिड़ाते हुए और मौनपूर्वक।

निस्सन्देह, वह मर्यादाओं का अतिक्रमण करनेवालों को पसंद नहीं करता ?

२ इस जगत् में बखेड़ा न मचाओ, जब कि उस (जगत्) का सुधार हो चुका है। और उसी (प्रभु) को पुकारो भय एवं आशा के साथ। ईश्वर की करुणा सत्कृति करनेवालों के निकट है।

७.५५-५६

२२८ द्वेष करनेवालों पर भी अन्याय न करो

१ हे श्रद्धावानो ! ईश्वर के लिए सत्य पर स्थिर रहनेवाले तथा न्याय का साक्ष्य देनेवाले बनो। किसीका द्वेष तुम्हें इस प्रकार उत्तेजित न करे कि तुम न्याय न कर सको। न्याय करो। यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है; ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करो। निस्सन्देह, ईश्वर तुम्हारे कृत्यों से अवगत है।

५.९

२२९ मैत्री के लिए प्रस्तुत रहो

१ यदि वे सन्धि की ओर झुकें, तो तू भी उसके लिए झुक जा और ईश्वर पर भरोसा रख। निस्सन्देह वही सर्वश्रुत, सर्वज्ञ है।

२ और यदि वे तुझे धोखा देने की इच्छा रखते हों, तो तेरे लिए ईश्वर पर्याप्त है। उसीने तुझे अपनी सहायता से एवं श्रद्धावानों के द्वारा बल पहुँचाया।

३ और श्रद्धावानों के हृदय एक-दूसरे से जोड़ दिये। यदि तू पृथ्वी में जो कुछ है, सब व्यय कर डालता, तो भी उनके हृदयों को जोड़ न सकता। किन्तु ईश्वर ने उनके हृदय जोड़ दिये। निस्सन्देह वह सर्वजित्, सर्वविद् है।

८.६१-६३

४७ न्याय से क्षमा श्रेष्ठ

● २३० सहन करना श्रेष्ठ

१ यदि बदला लो, तो उतना ही, जितना तुम्हें कष्ट दिया गया और यदि सहन करो, तो सहन करनेवालों के लिए सहन करना ही अच्छा हैं।

२ तू सहन कर। तेरा सहन करना ईश्वर की ही सहायता से है। उनके लिए

दुःखी न हो और उनके कपटों से व्यथित न हो।

३ निस्सन्देह ईश्वर उन लोगों के साथ है, जो उससे डरते हैं और जो अच्छे काम करते हैं।

१६.१२६-१२८

२३१ क्षमा करना श्रेष्ठ

१ वे लोग जब उन पर बहुत अत्याचार होता है, तो जवाब देते हैं।

२ बुरे काम का बदला उतना ही बुरा है। फिर जो कोई क्षमा करे और सुलह करे, उसका प्रतिफल ईश्वर के अधीन ही है। निस्सन्देह, वह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता।

४२.३९-४०

४८ अहिंसक निष्ठा

२३२ क्षमा एवं ईश्वराश्रय

१ क्षमा करने का अभ्यास कर, सत्कृति का आदेश देता जा; और गँवारों से टल।

२ यदि शैतान की छेड़ तुझे उकसाये, तो ईश्वर का आश्रय माँग। निस्सन्देह, वह सर्वश्रुत है, सर्वज्ञ है।

३ निस्सन्देह, जो लोग ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य करते हैं, उनको शैतान की ओर से कोई विकार छू भी जाता है, तो वे चौकन्ने हो जाते हैं। सो एकाएक उनकी आँखें खुल जाती हैं।

७.१९९-२०१

● २३३ बुराई का भलाई से प्रतिकार

१ बुराई का प्रतिकार ऐसे बर्ताव से करो, जो बहुत अच्छा हो। हम भलीभाँति जानते हैं, जो ये बोल रहे हैं।

२ और कह : हे प्रभो ! मैं तेरा आश्रय चाहता हूँ, शैतान की कुप्रेरणाओं से बचने के लिए।

३ और हे प्रभो ! मैं तेरा आश्रय माँगता हूँ, शैतान मेरे पास न आये इसलिए।

२३.९६-९८

● २३४ हम क्षमायाचक, हम क्षमा करें

१ .... लोगों को चाहिए कि वे क्षमा करें और भूल जायँ। क्या तुम नहीं चाहते कि ईश्वर तुमको क्षमा करे ? ईश्वर क्षमावान्, करुणावान् है।

२४.२२

● २३५ शत्रु मित्र होंगे

१ सत्कर्म एवं दुष्कर्म समान नहीं हो सकते। दुष्टता को ऐसे बर्ताव से दूर कर, जो बहुत अच्छा हो। फिर एकाएक वह मनुष्य कि जिसके और तेरे बीच शत्रुता है, ऐसा होगा, मानो वह तेरा सुहृद मित्र है।

२ और यह बात उसको प्राप्त होती है, जो दृढ़निश्चय है, और यह बात उसीको मिलती है, जो बड़ा भाग्यवान् है।

४१.३४-३५

● २३६ प्रेम कैसे प्राप्त होगा ?

१ निस्सन्देह, जो श्रद्धा रखते हैं और जिन्होंने सत्कृत्य किये हैं, उनमें वह कृपालु प्रेम निर्माण करता है।

१९.९६

४९ सहयोग-वृत्ति

● २३७ पड़ोसी-धर्म

१ क्या तूने उस मनुष्य को देखा, जो न्याय के दिन को नहीं मानता ?

२ तो यही वह व्यक्ति है, जो अनाथ को धक्के देता है।

३ और वंचितों को अन्न देने के लिए लोगों को उत्साहित नहीं करता।

४ सो, उन प्रार्थना करनेवालों को धिक्कार,

५ जो अपनी प्रार्थना से असावधान हैं।

६ वे, जो प्रार्थना का दिखावा करते हैं।

७ और पड़ोसियों को दैनन्दिन बरतने की छोटी चीजें भी नहीं देते।

१०७.१-७

● २३८ संयम एवं दया का पारस्परिक बोध

१ क्या हमने उसे दो आँखें नहीं दीं ?

२ और जीभ और दो ओंठ ?

३ और दिखला दिये उसको दोनों मार्ग।

४ तो वह घाटी नहीं चढ़ा।

५ और तूने क्या जाना कि वह घाटी क्या है ?

६ बन्दी को मुक्त करना।

७ या भूख के दिन में खाना खिलाना

८ सगे-सम्बन्धी अनाथ को

९ तथा धूल में पड़े हुए अकिञ्चन को,

१० फिर उन लोगों में सम्मिलित होना, जो श्रद्धा रखते हैं और परस्पर धीरज का बोध देते हैं और परस्पर करुणा का बोध देते हैं।

९०.८-१७

● २३९ सत्य और धीरज का पारस्परिक बोध

१ शपथ है काल की।

२ निश्चय ही मनुष्य घाटे में है।

३ अतिरिक्त उन लोगों के, जो श्रद्धा रखते हैं और सत्कृत्य करते हैं और परस्पर सत्य का बोध देते हैं एवं परस्पर धृति का बोध देते हैं।

१०३.१-३

● २४० पारस्परिक सहायता

१ ..... सत्कृति एवं संयम में एक-दूसरे की सहायता करो। पाप एवं अत्याचार में एक-दूसरे की सहायता न करो।

५.३

२४१ सत्कृति में होड़ करो, चाहे उद्दिष्ट विभिन्न हों

१ प्रत्येक के लिए दिशा है, जिसकी ओर वह मुड़ता है। सो तुम भलाइयों की ओर बढ़ो, दौड़ो। जहाँ कहीं तुम होगे, ईश्वर तुम सबको इकट्ठा कर लायेगा। निस्सन्देह, ईश्वर सर्व-कर्म-समर्थ हैं।

२.१४८

५० असहयोग

२४२ दुर्जनों की न मानो

१ तो तू कहना न मान, ईश्वर को न माननेवालों का।

२ वे चाहते हैं कि यदि तू नरम पड़े, तो वे भी नरम पड़ें।

३ और तू कहा न मान बहुत-सी शपथें खानेवाले नीच का.

४ जो दोषैकदृष्टि, पिशुन है,

५ भले कार्य को रोकनेवाला, मर्यादा का अतिक्रमण करनेवाला पापी है,

६ जो क्रूर और इन सबसे अधिक यह कि पल-पल में रंग बदलनेवाला है।

७ और यह सब इस घमंड से कि वह सम्पत्तिवान्, संततिवान् है।

६८.८-१४

५१ अनिवार्य प्रतिकार

२४३ प्रतिकार के अभाव में धर्मस्थान उध्वस्त होते

१ उन लोगों को लड़ाई की अनुज्ञा दी जाती है, जिनसे लड़ाई की जा रही है और इस कारण भी कि उन पर बहुत अत्याचार ढाये गये। निस्सन्देह, ईश्वर उनकी सहायता करने में समर्थ है।

२ उनको अन्याय से उनके घरों से निकाला गया, केवल उनके इस कहने पर कि हमारा प्रभु ईश्वर है। और यदि ईश्वर लोगों को एक को दूसरे से न हटाता रहता, तो साधुओं के एकान्त स्थल, क्रिश्चियनों के पूजा-स्थल,

यहूदियों के उपासना-स्थान और मस्जिदें, जिनमें परमात्मा का नाम बहुत लिया जाता है, ढाये जाते। निस्सन्देह, परमात्मा उसकी अवश्य सहायता करेगा, जो उसकी सहायता करेगा। निस्सन्देह, परमात्मा बलशाली है, सर्वजित् है।

२२.३९-४०

२४४ धर्मरक्षणार्थ मर्यादित प्रतिकार

१ जिन लोगों ने ईश्वर के मार्ग में घर-द्वार छोड़ा, फिर मारे गये या मर गये, उनको ईश्वर अवश्य अच्छी जीविका देगा। और निश्चय ही ईश्वर सबसे श्रेष्ठतर जीविका देनेवाला हैं।

२ वह उन लोगों को अवश्य ऐसे स्थान में प्रविष्ट करेगा, जिसे वे पसंद करेंगे। निस्सन्देह, ईश्वर सर्वज्ञ है, सर्वसह है।

३ यह हुआ, और जो व्यक्ति बदला ले उतना ही, जितना कि उसे सताया गया है, उस व्यक्ति पर यदि फिर से अत्याचार हो, तो ईश्वर उसे अवश्य सहायता देगा। निस्सन्देह, ईश्वर दोषों को भूल जानेवाला तथा क्षमा करनेवाला है।

२२.५८-६०

२० अस्वाद

५२ रसना-जय

● २४५ एक अन्न से उकताना

१ जब तुमने कहा : हे मूसा, हम एक ही प्रकार के भोजन पर कदापि सन्तोष नहीं कर सकते, सो अपने प्रभु से हमारे लिए प्रार्थना कर कि हमारे लिए वह उस वस्तु का निर्माण करे, जिसे भूमि उगाती है, अर्थात् साग, सब्जी, गेहूँ, दाल और प्याज। मूसा ने कहा : क्या तुम श्रेष्ठ[१] (वस्तु) के स्थान पर कनिष्ठ[२] (श्रेणी की वस्तु) लेना चाहते हो ?

---

१ श्रेष्ठ—जो ईश्वर ने दिया। २ कनिष्ठ— जो वासनाओं ने माँगा।

तो किसी शहर में जा उतरो। जो कुछ तुम माँगते हो, वहाँ मिल जायगा। और फिर उन पर अपमान एवं परवशता थोप दी गयी और वे ईश्वर के प्रकोप के भाजन बन गये····।

२.६१

२१ ब्रह्मचर्य

५३ पावित्र्य

२४६ कहता है, मैं पवित्र हूँ

१ क्या तूने उन्हें देखा, जो अपने-आपको पवित्र कहते हैं ? जब कि ईश्वर ही पवित्र बनाता है, जिसे चाहता है। (और इन पवित्रता की डींग मारनेवालों को जो दण्ड होगा) उसमें खजूर की गुठली पर कीं रेखा के बराबर भी अन्याय न होगा।

४.४९

● २४७ पावित्र्य ईश्वर की कृपा

१ हे श्रद्धावानो ! शैतान के पद-चिह्नों का अनुसरण न करना। जो शैतान के पद-चिह्नों का अनुसरण करता है, तो निस्सन्देह, शैतान निर्लज्ज एवं अनुचित काम करने की आज्ञा करता है। और यदि तुम पर ईश्वर की दया एवं करुणा न होती, तो तुममें से एक भी पवित्र न होता। किन्तु ईश्वर जिसे चाहता है, पवित्र करता है। और ईश्वर सर्वश्रुत एवं सर्वज्ञ है।

२४.२१

२४८ सूक्ष्म दोष ईश्वरीय कृपा से टलेंगे

१ जो बड़े पापों से और वैषयिक बातों से बचते हैं, सिवा सूक्ष्म दोषों के (तो उनके लिए) निस्सन्देह, तेरा प्रभु व्यापक क्षमावान् है। और तुम्हें

उसी समय से वह भलीभाँति जानता है, जब तुम्हें उसने भूमि से निर्माण किया और जब तुम अपनी माताओं के गर्भ में थे। सो तुम अपना पावित्र्य न जतलाओ। वह भलीभाँति जानता है कि कौन संयमी एवं ईश्वर-परायण है।

५३.३२

२४९ अन्तर्बाह्य पाप टालो

१ बाहरी और भीतरी पाप छोड़ दो। जो लोग पाप कमाते हैं, उन्हें उनकी उस करतूत का फल अवश्य दिया जायगा।

६.१२०

२५० पवित्रता एवं प्रभु-स्मरण

१ निस्सन्देह, सफल हुआ वह व्यक्ति, जिसने पवित्रता धारण की।

२ अपने प्रभु का नाम लिया और प्रार्थना की।

८७.१४-१५

२५१ शुभाशुभ विवेक जाग्रत रखो

१ शपथ है जीव की और उसकी, जिसने उसको विकसित किया।

२ फिर उस जीव को शुभाशुभ विवेक की अन्तःप्रेरणा दी।

३ निश्चय ही वह मनुष्य साफल्य को पहुँचा, जिसने उसे विशुद्ध किया।

४ और असफल हुआ वह, जिसने उसका अवरोध किया।

९१.७-१०

२५२ शील-रक्षा

१ हे आदम-पुत्रो ! निस्सन्देह, हमने तुमको वस्त्र दिये हैं, जो तुम्हारी लज्जा ढाँकते हैं और जो शोभा भी हैं, पर संयम का प्रावरण श्रेष्ठतम प्रावरण है। ये ईश्वर के संकेत हैं, जिससे कि ये लोग उपदेश प्राप्त करें।

२ हे आदम-पुत्रो ! तुम्हें शैतान चरित्र-भ्रष्ट करने के लिए न बहकाये, जैसा

कि उसने तुम्हारे (सर्वप्रथम) माँ-बाप को स्वर्ग से निकलवाया, उनके कपड़े उतरवाये, जिससे कि उन्हें उनके लज्जा-स्थान दिखाई दें। शैतान और उसका परिवार तुम्हें इस तरह से देखते हैं कि तुम उन्हें नहीं देख सकते। निस्सन्देह, हमने शैतान को उन लोगों का मित्र बना दिया, जो श्रद्धा नहीं रखते।

३ और वे लोग जब कोई बुरा काम करते हैं, तो कहते हैं कि 'हमने अपने बाप-दादों को इसी पद्धति पर चलते पाया है, और ईश्वर ने ही हमें ऐसा करने की आज्ञा दी है।' निस्सन्देह, ईश्वर बुरे काम की आज्ञा नहीं दिया करता। क्या तुम ईश्वर के विषय में ऐसी बात कहते हो; जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं ?

७.२६-२८

● २५३ अनधिकृत संन्यास

१ फिर उन प्रेषितों के पश्चात् हमने क्रमशः प्रेषित और भेजे और उनके पश्चात् हमने मरियम के पुत्र यीशु को भेजा और उसे एंजिल (न्यू टेस्टामेंट) प्रदान की। और यीशु के अनुयायियों के हृदयों में मृदुता एवं करुणा उत्पन्न कर दी और उन्होंने संन्यास और एकान्त जीवन अपनी ओर से चालू किया। उसे हमने उनके लिए आवश्यक नहीं किया था। परन्तु उन्होंने ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए वह किया। फिर उसे जैसा निभाना चाहिए था, वैसा नहीं निभाया। फिर हमने उनमें से जो श्रद्धावान् थे, उन्हें उनका फल दिया। पर अधिकतर उनमें दुराचारी थे।

५७.२७

● २५४ ब्रह्मचारी जॉन (यह्या)

१ उस स्थान पर जक्‌रिया ने अपने प्रभु को पुकारा। कहा : हे प्रभो ! मुझे अपने पास से पवित्र सन्तान प्रदान कर। निस्सन्देह, तू ही प्रार्थना सुननेवाला है।

२ जब कि वह उपासना-स्थान में खड़े होकर उपासना कर रहा था, देवदूतों

ने उसे पुकारकर कहा : "ईश्वर तुझे शुभ सन्देश देता है (कि) तुझे जॉन (यह्या) (नाम का पुत्र) होगा। वह ईश्वरीय वाणी को प्रमाणित करनेवाला, उदात्त, ब्रह्मचारी, सन्देष्टा और सत्कृतिवान् होगा।"

३.३८-३९

● २५५ प्रभु का भान रखकर काम-नियमन

१ फिर जब आयेगी वह बड़ी विपत्ति,

२ उस दिन मनुष्य स्मरण करेगा, जो प्रयत्न उसने किये थे।

३ और नरक उसके सम्मुख लाया जायगा कि वह उसे देखे।

४ तो जिसने मर्यादा का उल्लंघन किया होगा

५ और ऐहिक जीवन को अधिक मान्य किया होगा

६ तो नरक उसका ठिकाना है।

७ और जो अपने प्रभु के सम्मुख खड़े होने से डरा हो और उसने अपने मन को वासनाओं से रोका हो

८ तो निस्सन्देह, उसका स्थान स्वर्ग है।

७९.३४-४१

२२ शुद्ध जीविका

५४ अस्तेय

२५६ ब्याज-निषेध

१ जो लोग ब्याज खाते हैं, वे लोग उसी व्यक्ति की भाँति खड़े हो सकेंगे, जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो। ऐसा इसलिए कि वे कहते हैं कि व्यापार भी तो ब्याज ही जैसा है, जब कि ईश्वर ने व्यापार वैध किया है और ब्याज निषिद्ध। अतः जिस व्यक्ति को उसके प्रभु की ओर से उपदेश पहुँचे और वह ब्याज से परावृत हो, तो जो कुछ पहले वसूल

हो चुका, वह उसका है और उसका मामला ईश्वर के अधीन है। और जो कोई उसके पश्चात् फिर ब्याज लेगा, तो वे ही हैं आग में झोके जानेवाले, जिसमें वे हमेशा रहेंगे।

२ ईश्वर ब्याज को विफल करता है और दान को सुफलित करता है। ईश्वर कृतघ्न दुराचारी को पसंद नहीं करता।

२.२७५-२७६

● २५७ धन ब्याज पर न दो, दान में दो

१ सो जो कुछ तुम ब्याज पर देते हो, जिससे कि लोगों के धन में पहुँचकर वह बढ़े, तो (ध्यान रखो कि) ईश्वर के यहाँ वह नहीं बढ़ता। और जो कुछ पवित्र मन से नियमित रूप से दान देते हो–ईश्वर की प्रसन्नता करने के हेतु से–तो ऐसे ही लोग ईश्वर के पास अपना दिया हुआ दुगुना करनेवाले हैं।

३०.३९

२५८ सही नाप और तौल

१ और मिदियन की ओर हमने उनके भाई शोयेब को भेजा। उसने कहा: भाइयो ईश्वर की भक्ति करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई भजनीय नहीं और नाप-तौल कम न करो। मैं तुम्हें निश्चिन्त देखता हूँ और ऐसे दिन की विपदा से डरता हूँ, जो तुम सबको आ घेरेगी।

२ और, भाइयो, न्याय से पूरा नाप तौल करो। लोगों को उनकी वस्तुओं में घाटा न दिया करो, और धरती पर कलह फैलाते न फिरो।

३ ईश्वर की दी हुई बचत तुम्हारे लिए अधिक हितावह है, यदि तुम श्रद्धावान् हो और मैं तुम पर कोई निरीक्षक नहीं हूँ।

११.८४-८६

● २५९ धोखे की कमाई शैतान की कमाई

१ नाप-तौल कम करनेवालों के लिए धिक्कार।

२ कि जब लोगों से नाप लें, तो पूरा-पूरा लेते हैं।

३ और जब उन्हें नापकर या तौलकर दें, तो घटाकर देते हैं।

८३,१-३

२६० मा गृधः

१ और लालच न करो उस चीज का कि जिसके द्वारा ईश्वर ने तुममें से एक को दूसरे पर विशिष्टता दी है........।

४.३२

५५ असंग्रह

२६१ कृपणता में हानि

१ हाँ, तुम लोग ऐसे हो कि तुम्हें ईश्वरार्थ दान करने के लिए कहा जाता है, तो तुममें कोई ऐसा है, जो कंजूसी करता है। जो कोई कंजूसी करता है, वह स्वयं अपने लिए कंजूसी करता है। ईश्वर तो निरपेक्ष है और तुम दीन हो और यदि मुँह फेरोगे, तो ईश्वर तुम्हारे स्थान पर दूसरे लोगों को लायेगा। फिर वे तुम्हारे जैसे न होंगे।

४७.३८

२६२ कृपण द्वारा कृपणता का शिक्षण

१ तुम ईश्वर की भक्ति करो और उसके साथ किसीको भागीदार न बनाओ। और माता-पिता के साथ सुजनता का बर्ताव करो। और सगे-सम्बन्धियों, अनाथों, अकिञ्चनों, परिचित पड़ोसियों, अपरिचित पड़ोसियों, सह-प्रवासियों और प्रवासियों के साथ अच्छा बर्ताव करो। और उन (दास-दासियों) के साथ भी, जो तुम्हारे अधीन हैं। निस्सन्देह, ईश्वर को इतरानेवाले आत्मश्लाधी नहीं भाते।

२ जो कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी सिखाते हैं और ईश्वर ने अपनी दया से उनको जो दिया है, उसे छिपाते हैं, ऐसे कृतघ्नों के लिए हमने अपमानजनक दण्ड तैयार रखा है।

३६-३७

२६३ कृपणों की दुर्गति

१ और वे लोग जिन्हें ईश्वर ने वैभव दिया है, तो भी कंजूसी करते हैं, यह कल्पना न करें कि यह उनके लिए अच्छा है। नहीं, अपितु यह उनके लिए बुरा है। पुनरुत्थान के दिन वह धन, जिसमें उन्होंने कंजूसी की थी, हँसली बनाकर, उनके गले में डाला जायगा। आकाश एवं भूमि को विरासत ईश्वर के लिए ही है और ईश्वर तुम्हारे सब कामों की खबर रखता हैं।

३.१८०

२६४ सुवर्णसंग्राहक

१ श्रद्धावानो ! बहुत-से विद्वान् और मठवासी लोग दूसरों का धन खोटी रीति से खा जाते हैं और उन्हें ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं। और जो लोग सोना-चाँदी संचित करके रखते हैं और उसे ईश्वर के मार्ग में व्यय नहीं करते, तो उन्हें खबर दो कि उन्हें एक बड़ा दुःखदायक दण्ड होगा।

२ जिस दिन उस धन पर नरक की आग दहकायी जायगी, फिर उसीसे उनके माथों, करवटों एवं पीठों को दागा जायगा; (और कहा जायगा) यह है, जो तुमने अपने लिए संचित कर रखा था। लो, अब अपने समेटे हुए धन का स्वाद चखो।

९.३४-३५

२६५ भूमि से चिपकनेवाले

१ हे श्रद्धावानो ! तुमको क्या हुआ है कि जब तुमसे कहा जाता है कि ईश्वर के मार्ग में जूझने चलो, तो तुम भूमि से चिपके रह जाते हो। क्या पारलौकिक को छोड़कर ऐहिक जीवन पर प्रसन्न हो गये हो ? तो ऐहिक जीवन की साधन-सामग्री पारलौकिक की तुलना में अत्यन्त क्षुद्र है।

९.३८

२६६ कारून की करुण कहानी

१ कारून मूसा की बिरादरी में से था। फिर उनके खिलाफ विद्रोह करने

लगा और हमने उसे इतने खजाने दिये थे कि उसकी तालियाँ उठाने से कई बलशाली व्यक्ति थक जाते। जब उसके लोगों ने उसे कहा : इतरा मत, निश्चय ही ईश्वर को इतरानेवाले नहीं भाते।

२ और जो तुझे ईश्वर ने दिया है, उसके द्वारा परलोक की गवेषणा कर और इहलोक से अपना भाग (वहाँ ले जाना है यह) न भूल और उपकार कर, जैसे ईश्वर ने तेरे साथ उपकार किया है और भूमि में कलह का इच्छुक न बन। ईश्वर को कलह करनेवाले नहीं भाते।

३ बोला : यह धन तो मुझे एक हुनर से मिला है, जो मेरे पास है। क्या उसे ज्ञात नहीं कि ईश्वर ने उसके पूर्व कई जातियाँ नष्ट की हैं, जो उससे बहुत अधिक बलशाली थीं एवं संख्या में भी बहुत अधिक थीं ? और पापियों से उनके पाप पूछने पड़ते।

४ फिर वह एक बार अपने लोगों के सम्मुख ठाट से निकला। उसे देखकर उन्होंने, जो ऐहिक जीवन के इच्छुक थे, कहा : अरे-अरे ! हमको भी मिलता, जैसा कि कारून को मिला है। निस्सन्देह, वह बहुत भाग्यवान् है।

५ और जिनको सूझ-बूझ मिली थी, वे बोले : तुम्हें धिक्कार ! ईश्वर का प्रतिफल हितकर है उन लोगों के लिए, जो श्रद्धा रखते हैं और सत्कृत्य करते हैं, और यह उन्हींको दिया जाता है, जो धीरजवाले हैं।

६ फिर हमने उसको और उसके घर को भूमि में धँसा दिया और ईश्वर के अतिरिक्त उसका फिर कोई ऐसा समूह नहीं हुआ, जो उसकी सहायता करता, न वह स्वयं सहायता प्राप्त कर सका।

७ और वे लोग, जो कल सायंकाल उसके जैसा होने की लालसा रखते थे, कहने लगे : अरे-अरे ! ईश्वर अपने दासों में से जिसके लिए चाहता है, रोजी बढ़ा देता है और (जिसके लिए चाहता है) सीमित कर देता है। और ईश्वर हम पर उपकार न करता, तो हमें भी भूमि में धँसा देता। अरे-अरे श्रद्धाहीन कभी सफल नहीं होते।

२८.७६-८२

● २६७ उसे अब मित्र नहीं रहा

१ वह महान् ईश्वर पर श्रद्धा नहीं रखता था

२ और वंचित को खिलाने के लिए (किसीको) प्रोत्साहित नहीं करता था।

३ सो, आज उसका यहाँ कोई मित्र नहीं।

६९.३३-३५

२६८ कहता है, ईश्वर ने सम्मान दिया और ईश्वर ने मान-हानि की

१ देखो, मनुष्य को जब उसका प्रभु जाँचता है अर्थात् उसे सम्मान देता है और सुख देता है तो कहता है : "मेरे प्रभु ने मुझे सम्मान दिया।"

२ और जब वह उसे जाँचता है, और उसकी जीविका सीमित कर देता है, तो कहता है : "मेरे प्रभु ने मेरी मान-हानि की।"

३ कदापि नहीं। अपितु तुम अनाथ की ओर ध्यान नहीं देते।

४ और वंचित को खिलाने के लिए एक-दूसरे को प्रोत्साहित नहीं करते।

५ और दूसरों की विरासत का धन समेट-समेटकर खा जाते हो।

६ और धन को प्राण से भी अधिक प्यार करते हो।

८९.१५-२०

● २६९ लोभमूलक स्पर्धा

१ विपुलता की तृष्णा ने तुम्हें भरमाया है,

२ यहाँ तक कि तुम कब्रों में जा मिलो।

३ कदापि नहीं, अविलम्ब तुम जान ही लोगे,

४ अविलम्ब ही तुम्हें ज्ञात होगा।

५ अरे-अरे, तुम्हें निश्चित ज्ञान होता

६ कि अवश्य तुम्हें नरक की अग्नि देखनी है।

७ फिर उसे अवश्य निश्चित दृष्टि से देखोगे।

८ फिर उस दिन तुमसे अवश्य पूछा जायगा ईश्वरीय देनों के विषय में। (कि तुमने उनके लिए कृतज्ञता व्यक्त की ?)

१०२.१-८

५६ दान

२७० दान-प्रकरण

१ जो लोग अपना धन ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं, उनका उदाहरण ऐसा है, जैसे एक दाना कि उसमें से सात बालें उगीं। हर बाल में सौ दाने। ईश्वर जिसके लिए चाहता है, वृद्धि करता है। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ है।

२ जो लोग अपना धन ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं और व्यय करके न उपकार जताते हैं और न कष्ट पहुँचाते हैं, उनके लिए उनका पारिश्रमिक उनके प्रभु के यहाँ है और उनको न डर है और न वे दुःखी होंगे।

३ एक भली बात एवं क्षमा करना उन दान से श्रेष्ठतर है कि जिसके पीछे पीड़न हो। ईश्वर निरपेक्ष एवं अतीव सहिष्णु है।

४ हे श्रद्धावानो ! अपने दान उपकार जतलाकर या पीड़ा पहुँचाकर नष्ट न करो। उस व्यक्ति की भाँति, जो अपना धन ईश्वर के मार्ग में केवल दिखलाने के लिए व्यय करता है और ईश्वर एवं अन्तिम दिन पर श्रद्धा नहीं रखता। सो उसका उदाहरण ऐसा है, जैसे कि एक चट्टान, उस पर कुछ मिट्टी पड़ी है, फिर उस पर जोर की वर्षा हुई, तो उसने उस पत्थर को स्वच्छ कर दिया। ऐसे लोगों को उनका कमाया हुआ कुछ भी हाथ नहीं लगता और ईश्वर श्रद्धाहीनों को मार्ग नहीं दिखाता।

५ और जो ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए और दृढ़ चित्त से अपना धन ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं, उनका उदाहरण ऐसा है, जैसे ऊँचाई पर एक बाग है, उस पर जोर की वर्षा हुई, तो वह बाग अपना फल दुगुना लाया और यदि उस पर वर्षा न हुई, तो हलकी फुहार भी

पर्याप्त है। ईश्वर तुम्हारे कामों को देखनेवाला है।

६ क्या तुममें से कोई यह पसंद करेगा कि एक खजूर या अंगूर का बाग हो, उसके नीचे नदियाँ बहती हों, उसके मालिक के लिए उस बाग में सब प्रकार के फल हों और वह बूढ़ा हो गया हो और सन्तति उसकी अत्यन्त अशक्त हो कि ऐसी स्थिति में उस बाग पर एक बवंडर आ पड़े जिसमें आग हो, जिससे वह बाग झुलस जाय? इस प्रकार ईश्वर तुमसे अपनी बातें वर्णन करता है, ताकि तुम समझो।

२.२६१-२६६

२७१ दान उत्तम वस्तु का

१ हे श्रद्धावानो ! जो तुमने कमाया है या जो कुछ तुम्हारे लिए हमने भूमि से उत्पन्न किया है, उसमें से उत्तमोत्तम वस्तु ईश्वर के मार्ग में दान करो और यह विचार न करो कि निकम्मी चीज ईश्वर के मार्ग में दान की जाय, जब कि तुम स्वयं वैसी वस्तु को लेनेवाले नहीं। सिवा इसके कि उसके लेने में तुम उपेक्षा बरतो। जान लो कि ईश्वर निरपेक्ष है तथा स्तुति-योग्य है।

२.२६७

● २७२ अख्यापित दान

१ यदि तुम दान प्रकट दो, तो यह भी अच्छा है और यदि उसे छिपाकर गरीबों को दो, तो वह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। वह तुमसे तुम्हारी कुछ बुराइयाँ दूर करेगा। ईश्वर तुम्हारे कर्मों से भली-भाँति अवगत है।

२.२७१

२७३ अयाचित दान

१ दान उन गरीबों के लिए है, जो ईश्वर के काम में इस भाँति घिर गये हैं कि पृथ्वी में दौड़-धूप नहीं कर सकते। उनके आत्मसम्मान के कारण अनजान मनुष्य उन्हें सम्पन्न समझते हैं। तुम उनके चेहरों से उन्हें पहचान सकते हो। वे लोगों के पीछे पड़कर कुछ नहीं माँगते। जो कुछ ईश्वर के मार्ग में खर्च करोगे, ईश्वर उसे जानता है।

२ जो लोग अपना धन छिपे और खुले रूप में ईश्वर के मार्ग में दान करते हैं, उनका प्रतिफल उनके प्रभु के पास है। उन्हें न कोई डर है, न वे दुःखी होंगे।

२.२७३-२७४

२७४ प्रियतम वस्तु ईश्वर को

१ तुम नेकी को कदापि प्राप्त न कर सकोगे, जब तक कि तुम अपनी प्यारी चीज को ईश्वर के मार्ग में दान न करो। जो वस्तु तुम ईश्वर के मार्ग में दान करोगे, ईश्वर उसे भली-भँति जानता है।

३.९२

● २७५ प्राक् शरीरविमोक्षणात्

१ हे श्रद्धावानो ! तुम्हारा धन एवं तुम्हारी सन्तति तुम्हें ईश्वर के विषय में असावधान न कर दे और जो ऐसा करें; तो ऐसे ही लोग घाटे में हैं।

२ और हमने जो कुछ तुमको दिया है, उसमें से ईश्वर के मार्ग में खर्च करो, इसके पूर्व कि तुममें से किसीको मृत्यु आ जाय, तो वह कहने लगे कि है प्रभो ! तूने मुझे थोड़ी-सी मुहलत क्यों न दी कि मैं दान देता और नेक लोगों मे शामिल हो जाता।

३ और ईश्वर किसी प्राणी को, जब उसकी मृत्यु आ जायगी, तो मुहलत नहीं देता। ईश्वर तुम्हारे कर्मों से अवगत है।

६३.९-११

२३ नीति-बोध

५७ शिव-शक्ति

● २७६ शुभाशुभ-विवेक

१ कह : अशुभ एवं शुभ समान नहीं होते, यद्यपि अशुभ की विपुलता तुम्हें

कितने ही आश्चर्य में डालती हो। इसलिए बुद्धिमानो, ईश्वर से चिपके रहो, जिससे कि तुम सफल हो।

५८ नीति-निर्देश

५.१०३

● २७७ नीति-सूत्र

१ निस्सन्देह, ईश्वर आदेश देता है, न्याय करने का और भलाई करने का तथा सम्बन्धियों को सहायता देने का। और निषेध करता है निर्लज्ज एवं अनुचित कर्मों का तथा अत्याचारों का। ईश्वर तुम्हें समझाता है, जिससे कि तुम सावधानी रखो।

● २७८ नीति-उपदेश

१६.९०

१ (१) प्रभु ने निर्णय कर दिया है कि उसके अतिरिक्त किसीकी भक्ति न करो और (२) माता-पिता के साथ सौजन्य का बर्ताव रखो। यदि तेरे पास इनमें से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जायँ, तो उनका तिरस्कार न कर और न उन्हें झिड़की दे। उनसे नम्रता से बात कर।

२. और उनके सामने नम्रता से और करुणा से झुककर रह और कह : हे प्रभो ! इन दोनों पर कृपा कर, जैसा कि उन्होंने मुझे बचपन में पाला।

३ तुम्हारा प्रभु भलीभाँति जानता है कि तुम्हारे मन में क्या है। यदि तुम भले हो, तो भक्ति की ओर लौट आनेवालों को वह क्षमा करनेवाला है।

४ (३) सगे-सम्बन्धी, वंचित एवं प्रवासी को उनका देय देते रहो। (४) और फिजूलखर्ची न करना।

५ निस्सन्देह, फिजूलखर्च लोग शैतान के भाई हैं और शैतान अपने प्रभु का बड़ा कृतघ्न है।

६ (५) और न तो तू अपने प्रभु की कृपा ढूँढ़ने में, जिसकी तुझे आशा है, उनसे दूर हो जाय, तो उनसे नरमी से बात कर।

७ (६) और न तो तू अपना हाथ गले से बाँध रख (अर्थात् कंजूस बन)। और न तो सर्वथैव खुला फैला दे (अर्थात् अति व्यय कर) कि तू निन्दित एवं कंगाल बनकर बैठा रह।

८ निस्सन्देह, तेरा प्रभु जिसके लिए चाहता है, जीविका बढ़ाता है और जिसके लिए चाहता है, सीमित कर देता है। निस्सन्देह, वही अपने दासों से अवगत है एवं सर्वदृक् है।

९ (७) और अपनी सन्तति को दारिद्र्य के डर से न मार डालो। हम उनको भी जीविका देते हैं और तुमको भी। वास्तव में उन्हें मार डालना महान् पाप है।

१० (८) और व्यभिचार के समीप भी न फटको। वह निश्चय ही निर्लज्जता है और बुरा मार्ग है।

११ (९) और उस जीव की हत्या न करो, जिसकी हत्या निषिद्ध की गयी है, सिवा न्याय के साथ। और जो अन्याय से मारा गया, तो उसके उत्तराधिकारी को अधिकार दिया है। वह उस विषय में मर्यादा से बाहर निकल न जाय। निस्सन्देह, उसकी सहायता की जाती है।

१२ (१०) और अनाथ के धन के निकट न जाओ। सिवा अच्छी नीयत से, यहाँ तक कि वह बालिग हो जाय। (११) और वचन को पूरा करो। निस्सन्देह, वचन के विषय में पूछा जायगा।

१३ (१२) और जब नापकर दो, तो नाप पूरा भर दो और ठीक तराजू से तौलो। यह अच्छा है और इसका अन्त भी अच्छा है।

१४ (१३) और किसी ऐसी बात के पीछे न लग, जिसका तुझे ज्ञान नहीं। निस्सन्देह, कान और आँख और मन, सबको (उस दिन) प्रश्न पूछा जायगा।

१५ (१४) और पृथ्वी पर इतराता हुआ न चल। न तू भूमि फाड़ सकता है और न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकता है।

१६ इन आज्ञाओं में से प्रत्येक का बुरा स्वरूप तेरे प्रभु के समीप तिरस्करणीय है।

१७ यह उन विवेक की बातों में से है कि जो तेरे प्रभु ने तुझको प्रज्ञानरूप में

१७ यह उन विवेक की बातों में से है कि जो तेरे प्रभु ने तुझको प्रज्ञानरूप में भेजी।

१७.२३-३९

● २७९ लुकमान का पुत्र का बोध

१ हमने लुकमान को विद्या प्रदान की कि ईश्वर की कृतज्ञता व्यक्त करे। जो कोई कृतज्ञता व्यक्त करता है, वह अपने भले के लिए करता है और जो कृतघ्नता व्यक्त करता है, तो ईश्वर निरपेक्ष है तथा वही स्तुति के योग्य है।

२ लुकमान ने अपने पुत्र को सदुपदेश किया कि बेटा, ईश्वर के साथ किसीको भागीदार न ठहराना। निस्सन्देह, वि-भक्ति बड़ा अत्याचार है।

३ और हमने मनुष्य को उसके माता-पिता के सम्बन्ध में आदेश दे दिया है–उसकी माँ ने उसे थक-थककर पेट में रखा और उसका दूध दो वर्ष में छूटता है–कि तू मेरी एवं अपने माता-पिता की कृतज्ञता प्रकट कर। मेरी ओर ही तुझे लौटकर आना है।

४ और वे दोनों यदि तुझे इस बात पर बाध्य करें कि उस चीज को मेरा भागीदार मान कि जिसका तुझे कुछ ज्ञान नहीं, तो उन दोनों का यह कहना न मान। और दुनिया में उनका भलीभाँति साथ दे। और उस व्यक्ति का मार्ग स्वीकार कर, जो मेरी ओर प्रवृत्ति हुआ। मेरी ओर ही तुझे लौटकर आना है। तब मैं तुझे वह सब कुछ बतला दूँगा, जो तू करता था।

५ बेटा ! यदि कोई वस्तु राई के दाने के समान हो, चाहे वह किसी पत्थर में हो या आकाशों में या भूमि में, तो भी ईश्वर उसे निश्चय ही प्रस्तुत कर देगा। निस्सन्देह, ईश्वर अतीव सूक्ष्मदर्शी एवं सर्वस्पर्शी है।

६ बेटा, प्रार्थना नित्य-नियमित करता रह तथा (लोगों को) भली बात का आदेश दे और बुराई से रोक और तुझ पर जो आ पड़े, उसको सहन कर। निस्संशय, यह धैर्य का कार्य है।

७ और लोगों की अवहेलना में गाल मत फुला और भूमि पर इतराकर न चल। निस्सन्देह, ईश्वर किसी श्रद्धाहीन आत्मश्लाघी को पसन्द नहीं करता।

८ और चाल में मध्यम गति अपना और अपनी ध्वनि को मृदु बना। निस्सन्देह, ध्वनि में सबसे बुरी ध्वनि गधे की ध्वनि है।

३१.१२-१९

● २८० सद्‌गृहस्थ

१ हमने मनुष्य को आदेश दिया कि अपने माता-पिता के साथ सौजन्य से बरते। उसकी माँ ने कष्ट से उसका बोझ उठाया और कष्ट से उसे जन्म दिया और उसका गर्भ-निवास और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में पूरा होता है। यहाँ तक कि जब वह युवावस्था को पहुँचता है और चालीस वर्ष का हो जाता है, तो कहने लगता है : प्रभो, मुझे बल दे कि मैं तेरी उन देनों के लिए कृतज्ञता प्रकट करूँ, जो तूने मुझे एवं मेरे माता-पिता को प्रदान की और मैं सत्कृति करूँ, जिससे तू प्रसन्न हो। मेरे लिए मेरी सन्तति में सुधार कर। निश्चय ही मैं तेरी ओर लौट आया हूँ और तेरा शरणागत हूँ।

२ ये वे लोग हैं कि हम उनके किये हुए उत्तम कार्य स्वीकृत करते हैं और उनकी बुराइयाँ क्षमा करते हैं। ये लोग स्वर्ग के अधिकारी हैं। और इन्हें जो अभिवचन दिया गया था, वह सच्चा अभिवचन था।

४६.१५-१६

२४ शिष्टाचार

५९ सदाचार

● २८१ मद्य-निषेध

१ लोग शराब और जुए के विषय में तुझसे पूछते हैं। कह : उन दोनों में महापाप है। और लोगों के लिए उनमें कुछ लाभ भी है, किन्तु उनका पाप उनके लाभों से बहुत अधिक है.........। २.२१९

२८२ अधिक मंगलप्रद बोलो

१ जब तुम्हें आदरपूर्वक प्रणाम किया जाय, तो तुम उसे उससे उत्तम रीति से उत्तर दो या वही कहो। निस्सन्देह, ईश्वर प्रत्येक वस्तु का लेखा-जोखा लेनेवाला है।

४.८६

२८३ किसीके घर में प्रवेश करते हुए

१ हे श्रद्धावानो ! अपने घरों के अतिरिक्त किसी और घर में प्रवेश न करो, जब तक कि अनुमति न ले लो और घरवालों को प्रणाम न कर लो। यह तुम्हारे लिए अच्छा है, ताकि तुम याद रखो।

२ यदि घर में किसीको न पाओ, तो उसमें प्रवेश न करो, जब तक कि तुम्हें अनुमति न मिल जाय। और यदि तुमसे कहा जाय कि लौट जाओ, तो तुम लौट जाओ। वह तुम्हारे लिए बहुत पवित्रता की बात है। ईश्वर तुम्हारे सब कामों का ज्ञान रखता है।

२४.२७-२८

२८४ सभा-व्यवस्था

१ हे श्रद्धावानो ! जब तुम्हें कहा जाता है कि सभाओं में दूसरों के लिए जगह कर दो तो जगह कर दो, ईश्वर तुम्हारे लिए बहुत गुंजाइश कर देगा। और जब तुमसे उठने के लिए कहा जाय, तो उठ जाओ। तुममें से जो श्रद्धा रखते हैं तथा ज्ञान रखते हैं, परमात्मा उनकी श्रेणियाँ उच्च कर देगा। जो कुछ तुम करते हो, ईश्वर उससे अवगत है।

५८.११

२८५ सिफारिश में जिम्मेदारी

१ जो कोई भली बात की सिफारिश करेगा, उसे उसमें से भाग मिलेगा और जो कोई बुरी बात की सिफारिश करेगा, वह उसमें भाग पायेगा। ईश्वर प्रत्येक वस्तु पर दृष्टि रखनेवाला है।

४.८५

● २८६ मंत्रणाएँ

१ हे श्रद्धावानो ! जब तुम गुप्त मंत्रणाएँ करो, तो पाप एवं अत्याचार के लिए तथा प्रेषित की अवज्ञा के लिए गुप्त मंत्रणाएँ न करो, सत्कृत्य एवं धर्मपरता के लिए मंत्रणाएँ करो और ईश्वर से डरते रहो। उसीके पास तुम सब एकत्र किये जाओगे।

२ क्या तूने देखा नहीं कि ईश्वर जानता है, जो कुछ आकाशों में है तथा जो कुछ भूमि में है। कोई गुप्त सभा तीन मनुष्यों की ऐसी नहीं, जिसमें वह (ईश्वर) चौथा न हो और न पाँच मनुष्यों की गुप्त मंत्रणा, जिसमें छठा वह न हो और न इससे न्यून, न इससे अधिक। परन्तु वह उनके साथ है, चाहे वे कहीं भी हों। फिर वह उन्हें पुनरुत्थान के दिन उनके सब कर्मों का वृत्तान्त सुनायेगा। निस्सन्देह, ईश्वर प्रत्येक वस्तु जानता है।

५८.९.१७

खण्ड ७ : मानव

२५ मानवता

६० मानव का वैशिष्ट्य

२८७ विशिष्ट वाणी

१ जब तेरे प्रभु ने देवदूतों से कहा कि मैं एक नायब बनानेवाला हूँ, तो देवदूतों ने कहा : क्या तू पृथ्वी पर किसी ऐसे को नियुक्त करेगा, जो उसमें कलह उत्पन्न करे ओर रक्त बहाये? यद्यपि हम तेरे स्तवन के साथ तेरा जप करते हैं, जयजयकार करते हैं और पवित्रता का कीर्तन करते हैं। कहा : निस्सन्देह, मैं जानता हूँ जो कुछ तुम नहीं जानते।

२ और ईश्वर ने आदम को सब वस्तुओं के नाम सिखा दिये। फिर उन वस्तुओं को देवदूतों के सम्मुख प्रस्तुत किया और कहा : उसके नाम बताओ, यदि तुम सच्चे ज्ञानी हो।

३ उन्होंने कहा : पवित्र है तू, हमको तूने जो कुछ सिखाया, उसके अतिरिक्त हम कुछ नहीं जानते। निस्सन्देह, तू ही सर्वज्ञ, सर्वविद् है।

४ कहा : हे आदम ! देवदूतों को उन वस्तुओं के नाम बता दे। तो जब आदम ने उन्हें उनके नाम बता दिये, तो ईश्वर ने कहा : क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं आकाशों एवं भूमि की गुप्त स्थितियाँ जानता हूँ। जो कुछ तुम प्रकट करते हो, उसे भी जानता हूँ और जो कुछ तुम छिपाते हो, उसे भी।

५ और जब हमने देवदूतों से कहा कि आदम को प्रणिपात करो, तो उन सबने प्रणिपात किया, केवल शैतान को छोड़कर। उसने इनकार किया

और अपनी बड़ाई के घमंड में पड़ गया और अश्रद्धालुओं में सम्मिलित हो गया।

२.३०-३४

२८८ मानव : दोनों हाथों की कृति

१ कहा : हे इब्लिस ! जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया, उसे प्रणिपात करने से तुझे क्या चीज निषेधक हुई?

३८.७५

२८९ तीन ईश्वरीय देनें : ग्रन्थ, तुला, लोहा

१ हमने अपने प्रेषितों को खुली निशानियाँ देकर भेजा है और उनके साथ हमने ग्रन्थ उतारा है तथा तराजू उतारी है, जिससे कि लोग न्याय पर स्थिर रहें और हमने लोहा उतारा, जिसमें बड़ा संकट है और लोगों के लिए कई लाभ भी है...... ।

५७.२५

२९० अमानत

१ हमने यह अमानत आकाशों एवं भूमि एवं पर्वतों के सम्मुख प्रस्तुत की। सबने उसे उठाने से इनकार किया। वे उससे डर गये और मनुष्य ने उसे उठा लिया। निश्चय ही वह बड़ा बेबाक और अज्ञानी है।

३३.७२

२९१ दो सिरे

१ वस्तुतः हमने मनुष्य को सर्वोच्च बनाया।

२ फिर हमने उसे लौटा दिया नीचों में सबसे अधिक नीच बनाकर।

९५.४-५

२९२ तीन श्रेणियाँ : हीन, मध्यम, उत्तम

१ ...... तो कुछ लोग ऐसे हैं, जो स्वयं पर अत्याचार करनेवाले हैं और कुछ उनमें से मध्यम गतिवाले हैं और कुछ उनमें ईश्वर की सत्कृतियों में सबसे आगे बढ़ जानेवाले हैं। यही महान् सौभाग्य है। ३५.३२

२९३ मनुष्य-जन्म का हेतु

१ मैंने जिन एवं मनुष्यों को इसलिए उत्पन्न किया कि वे मेरी भक्ति करें।

२ मैं उनसे कोई जीविका नहीं चाहता हूँ कि वे मुझे खिलायें।

३ निस्सन्देह, ईश्वर ही सबको जीविका देनेवाला, बलशाली, सर्वशक्तिमान है।

५१.५६-५८

६१ मानव की दुर्बलता

२९४ अस्थिर

१ यदि लाभ निकट होता और उसके लिए प्रवास सुकर होता, तो ये मनुष्य अवश्य तेरे साथ हो लेते। परन्तु उनके लिए तो यह प्रवास बहुत कठिन हो गया। .... ।

९.४२

२९५ अनुभव से पाठ नहीं लेते

१ क्या उन्होंने पृथ्वी का पर्यटन नहीं किया, जिससे कि वे देखते कि उनसे पहलेवालों का अन्त क्या हुआ? वे उनसे बल में अधिक थे और उन लोगों ने भूमि को जोता-बोया था और जितना इन्होंने उसे आबाद किया है, उससे अधिक उन्होंने उसे आबाद किया था। उनके पास ईश्वर के प्रेषित उसकी खुली निशानियाँ लेकर आये थे। ईश्वर ने उन पर अन्याय नहीं किया, अपितु वे स्वयं अपने पर अत्याचार करते थे।

३०.९

२९६ दोलायमान

१ यदि हम मनुष्य को अपनी ओर से कृपा का स्वाद चखा देते हैं, फिर उससे उसको हटा लेते हैं, तो वह निराश एवं कृतघ्न हो जाता है।

२ और यदि उस कष्ट के पश्चात् जो उसे मिले हैं, ईश्वरीय देन का स्वाद हम चखा दें, तो वह कहने लगता है : मेरे सारे दुःख-दर्द दूर हो गये!

(ईश्वर ने दूर किये, ऐसा नहीं कहता) निस्सन्देह, वह बड़ा इतरानेवाला आत्मश्लाघी है।

११.९-१०

२९७ लालची

१ मैंने उसे विपुल धन दिया

२ और साथ रहनेवाले पुत्र दिये

३ और उसके लिए सब प्रकार के साधन जुटाये,

४ फिर भी मनुष्य लोभ रखता है कि मैं उसे और अधिक दूँ।

६४.१२-१५

२९८ विषादी एवं दीर्घसूत्री

१ निस्सन्देह, मनुष्य अधीर उत्पन्न किया गया है।

२ जब उसे कष्ट पहुँचता है, तो घबरा जाता है

३ और जब उसे सम्पदा प्राप्त होती है, तो (देने में) कंजूसी करता है।

७०.१९-२१

२९९ संवेदनहीन

१ क्या ये लोग देखते नहीं कि वे प्रतिवर्ष एक बार कसौटी में डाले जाते हैं, फिर भी न तो पछतावा करते हैं और न कोई पाठ लेते हैं।

९.१२६

३०० बुराई की ओर शीघ्र बढ़नेवाला

१ ...... लोगो ! भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों उतावली करते हो.? ईश्वर से क्षमा क्यों नहीं माँगते, जिससे कि तुम पर कृपा की जाय?

२७.४६

६२ पापाभिमुखता

३०१ जीव दोषप्रवृत्त

१ मैं (हज़रत यूसूफ) अपने-आपको दोषमुक्त नहीं मानता। निस्सन्देह,

मानवी मन तो बुराई की ओर प्रवृत करता है, सिवा उस स्थिति के कि किसी पर मेरे प्रभु की कृपा हो। निस्सन्देह, मेरा प्रभु क्षमावान् है।

१२.५३

● ३०२ यदि ईश्वर दण्ड न करता

१ यदि ईश्वर लोगों को उनके कृत्यों के लिए पकड़ता, तो इस भूमि पर एक प्राणी न छोड़ता ······।

३५.४५

● ३०३ भलाई ईश्वर की, बुराई हमारी

१ तेरा जो कल्याण होता है, वह ईश्वर की ओर से होता है और जो कष्ट तुझे पहुँचता है, वह तेरी वासना की ओर से पहुँचता हैं ·········।

४.७९

६३ कृतघ्नता

३०४ हे मनुष्य ! तू कृतघ्न क्यों हुआ ?

१ हे मनुष्य ! तुझे किसी चीज ने तेरे उदार प्रभु से बहका दिया ?

२ जिसने तुझे उत्पन्न किया, फिर तुझे ठीक किया एवं तुझे समत्वयुक्त बनाया।

३ और जिस रूप में उसने चाहा, उस रूप से तेरा योग साधा।

८२.६-८

३०५ कृतघ्न मनुष्य

१ निश्चय ही मनुष्य प्रभु का बड़ा कृतघ्न है।

२ और निस्सन्देह, वह इस बात का साक्षी भी है।

३ और वह धन के प्रेम में बहुत पक्का है।

४ क्या वह नहीं जानता वह समय, जब उठाया जायगा, जो कुछ कब्रों में है।

५ और प्राप्त किया जायगा, जो कुछ वक्षों में है।

६ निस्सन्देह, उनका प्रभु उस दिन उनकी स्थिति से सम्पूर्ण अवगत है।

१००.६-११

● ३०६ दुःख में स्मरण एवं सुख में विस्मरण

१ जब मनुष्य को कष्ट पहुँचता है, तो वह लेटे, बैठे या खड़े हमें पुकारता है। फिर जब हम उससे वह कष्ट हटा देते हैं, तो वह ऐसा चल निकलता है, मानो कष्ट के पहुँचने पर उसने हमें पुकारा ही न था। इसी प्रकार मर्यादा का अतिक्रमण करनेवालों के लिए उनकी करतूतें उन्हें सुन्दर लगें, ऐसा हमने किया है। १०.१२

३०७ समुद्र एवं तट का दृष्टान्त

१ वह ईश्वर ही है, जो तुम्हें थल-जल में घुमाता है। जब तुम नौकाओं में होते हो और वह नौका लोगों को लेकर वायु से चलती है और लोग उससे खुश होते हैं कि एकाएक उन नौकाओं पर झंझावात आता है और उन पर सब ओर से लहरें उठी चली आती हैं और वे समझ लेते हैं कि वे घिर गये हैं। तो वे निष्ठा को ईश्वर ही के लिए विशुद्ध करके उससे प्रार्थना करने लगते हैं कि यदि तूने हमको इससे बचा लिया, तो हम अवश्य कृतज्ञ हो जायँगे।

२ फिर जब ईश्वर उन्हें बचा लेता है, तो वे शीघ्र ही भूमि पर अन्यायपूर्ण विद्रोह करते हैं। लोगो ! तुम्हारा यह विद्रोह तुम्हारे ही विरुद्ध है। थोड़े दिनों के ऐहिक़ जीवन का लाभ उठा लो, फिर हमारे ही पास तुम्हें लौटकर आना है। तो हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या करते थे।

१०.२२-२३

३०८ अस्माकं अयं महिमा

१ मनुष्य लाभ एवं सुभीता के लिए प्रार्थना करने में थकता नहीं और यदि उसे कष्ट पहुँचता है, तो वह बहुत हताश, निराश हो जाता है।

२ और किसी कष्ट के पश्चात् जो उसको पहुँचता है, हम उसे अपनी कृपा का स्वाद चखा दें, तो वह अवश्य कहेगा : 'यह मेरे कारण है।'……

३ और जब हम मनुष्य को सुख के साधन भेजते हैं, तो वह हमसे मुँह फेर लेता है और अलग हो जाता है। और जब उसे कष्ट पहुँचता है, तो लम्बी-चौड़ी प्रार्थना करनेवाला हो जाता है।

४१.४९,५०,५१

६४ आस्तिक-नास्तिकता

● ३०९ भलाई पर विश्वास रखनेवाला तथा न रखनेवाला

१ शपथ है रात्रि की, जब वह फैल जाय।

२ और दिन की, जब वह प्रकाशित हो जाय।

३ और उसकी, जिसने नर-नारी निर्माण किये।

४ निस्सन्देह, तुम्हारा प्रयत्न भिन्न-भिन्न है।

५ सो जिसने ईश्वर के मार्ग में दान किया एवं ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूरा किया,

६ और भलाई में विश्वास रखा,

७ तो हम उसके लिए सुख-सुविधाएँ पहुँचायेंगे।

८ और जिसने कंजूसी की और बेपरवाही बरती

९ और भलाई में विश्वास न रखा,

१० तो हम उसे कष्ट में डालेंगे !

११ और उसका धन उसके काम न आयेगा, जब वह गड़हे में गिरेगा।

१२ निस्सन्देह, मार्ग-दर्शन हमारे जिम्मे है।

१३ और निस्सन्देह, इहलोक तथा परलोक दोनों हमारे ही हैं।

१४ तो हमने तुम्हें एक भड़कती हुई आग से सावधान करा दिया।

१५ उसमें वही गिरेगा, जो अभागा है।

१६ जिसने (ईश्वर का) अस्वीकार किया और मुँह फेरा।

१७ और उस आग से वह बचाया जायगा, जो बहुत धर्म-परायण है।

१८ जो अपना धन ईश्वर के मार्ग में देता है, जिससे कि वह विशुद्ध हो जाय।

१९ और उस पर किसीका ऐसा उपकार नहीं है कि जिसे वह इस प्रकार लौटा रहा है।

२० अतिरिक्त इससे कि अपने परम-प्रभु की प्रसन्नता इष्ट है।

२१ और निश्चय ही वह प्रसन्न हो जायगा।

९२.१-२१

खण्ड ८ : प्रेषित

२६ पूर्व-प्रेषित

६५ प्रेषित—सर्वजनहिताय

३१० प्रेषित मातृभाषा में बोलते हैं

१ हमने कोई प्रेषित भी भेजा, तो उसके समाज की भाषा में (बोलनेवाला) भेजा, जिससे कि वह उन्हें भलीभाँति स्पष्ट रूप से समझा दे.... ।

१४.४

● ३११ प्रत्येक समाज के लिए प्रेषित

१ प्रत्येक समाज का एक प्रेषित है। जब उनका प्रेषित आता है, तो उनके बीच न्याय से निर्णय होता है तथा उन पर अन्याय नहीं होता।

१०.४७

६६ प्रेषित मनुष्य ही

३१२ पहले के प्रेषित मनुष्य ही थे

१ हमने तुझसे पूर्व केवल मनुष्य को ही प्रेषित बनाकर भेजा है। उन (प्रेषितों) को हमने प्रज्ञान दिया। यदि तुम्हें यह ज्ञान न हो, तो ग्रन्थवानों से पूछ लो।

२ और हमने उनके शरीर ऐसे नहीं बनाये थे कि वे भोजन न करते हों और न वे नित्य रहनेवाले थे।

२१.७-८

३१३ बाल-बच्चों में रहनेवाले

१ तुझसे पूर्व भी हम बहुत से प्रेषित भेज चुके हैं और हमने उन्हें स्त्री-पुत्र दिये थे। और किसी प्रेषित के लिए यह सम्भव नहीं कि वह ईश्वर की आज्ञा के बिना कोई प्रभु-संकेत ले आये। हरएक अवधि लिखी हुई है।

१३.३८

३१४ सब प्रेषितों को शैतान का अनुभव

१ तुझसे पूर्व किसी ऐसे प्रेषित तथा सन्देष्टा को नहीं भेजा कि जब भी उसने ग्रन्थ-पाठ किया, तो शैतान ने उसके पठन में दखल न दिया हो। तब ईश्वर शैतान की व्यंजना को मिटा देता है और अपने वचनों को प्रतिष्ठित करता है और ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वविद् हैं।

२२.५१

३१५ प्रेषित मनुष्य ही क्यों ?

१ लोगों के पास जब कभी धर्मोपदेश आया, तो उन्हें उस पर श्रद्धा रखने से किसीने नहीं रोका, सिवा उनके यह कहने के कि क्या ईश्वर ने मनुष्य को प्रेषित बनाकर भेज दिया है?

२ कह : यदि भूमि में देवदूत शान्ति से चल-फिर रहे होते, तो हम अवश्य किसी देवदूत को प्रेषित बनाकर आकाश से उतारते।

१७.९४-९५

३१६ प्रेषित मनुष्य ही हैं, पर ईश्वर के कृपापात्र हैं

१ उनके प्रेषित बोले : क्या ईश्वर के विषय में तुम्हें सन्देह है, जो आकाशों एवं भूमि का बनानेवाला है। वह तुम्हें बुला रहा है, ताकि वह तुम्हारे दोष क्षमा करे तथा तुम्हें एक निश्चित अवधि तक मुहलत दे। उन्होंने कहा : तुम तो हम जैसे ही मनुष्य हो। हमें उनकी भक्ति से रोकना चाहते हो, जिनकी भक्ति हमारे बाप-दादा करते रहे हैं। तो तुम हमारे पास कोई प्रमाण ले आओ।

२ उनके प्रेषितों ने उनसे कहा : हम तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं, परन्तु ईश्वर

अपने मनुष्यों में से जिन पर चाहता है, उपकार करता है। यह हमारे अधिकार में नहीं है कि बिना ईश्वर की आज्ञा के तुम्हारे पास कोई प्रमाण ला सकें। ईश्वर पर ही श्रद्धावानों को भरोसा करना चाहिए।

३ और हमको क्या हुआ कि ईश्वर पर भरोसा न करें, जब कि उसने हमको अपने मार्ग दिखा दिये और जो कष्ट तुम हमें पहुँचा रहे हो, उसे हम अवश्य सहन करेंगे। भरोसा करनेवालों को ईश्वर पर ही भरोसा करना चाहिए।

१४.१०-१२

६७ गुण विशिष्ट

३१७ दृढ़-निश्चय

१ कितने ही ऐसे सन्देष्टा हैं, जिनसे सहयोग कर बहुत-से ईश्वरनिष्ठ जूझे। ईश्वर के मार्ग में जो कष्ट उन पर पड़े, उनसे न वे डिगे, न निर्बल हुए और न दबे। ईश्वर दृढ़निश्चयी लोगों से प्रेम करता है।

२ वे बोले तो केवल यह बोले : हे प्रभो ! हमारे पापों को और हमारे कामों में जो ज्यादतियाँ हुईं, उन्हें माफ कर। हमारे पाँव जमा और अश्रद्धावानों के विरोध में हमें मदद दे।

३ फिर ईश्वर ने उन्हें ऐहिक फल भी दिया तथा पारलौकिक श्रेष्ठ फल भी दिया। ईश्वर सत्कृत्य करनेवालों को चाहता है।

३.१४६-१४८

३१८ सहनशील

१ तुझसे पूर्व भी बहुत-से प्रेषित अस्वीकृत किये जा चुके हैं। तो उन्होंने अस्वीकृत होने पर और कष्ट दिये जाने पर सहन किया। यहाँ तक कि उन्हें हमारी सहायता पहुँच गयी। ईश्वर की बातों को बदलनेवाला कोई नहीं। निस्सन्देह, तेरे पास प्रेषितों के वृत्तान्त आ चुके हैं।

२ और यदि उन लोगों की विमुखता तुझे दुःख देती हो, तो यदि तुझसे हो सके तो तू भूमि में कोई सुरंग ढूँढ़ या आकाश में सीढ़ी ढूँढ़। फिर उनके

पास कोई निशानी ले आ। अरे, यदि ईश्वर चाहता, तो उन सबको अवश्य मार्ग पर इकट्ठा कर देता। अतः तू अज्ञान न बन।

३.३४-३५

३१९ विपरीत परिस्थिति में बोध देनेवाले

१ जब उनमें से एक समूह ने कहा : तुम ऐसे लोगों को क्यों उपदेश करते हो, जिन्हें ईश्वर नष्ट करनेवाला है या कठोर दण्ड देनेवाला है? तब उन (भक्तों) ने उत्तर दिया : तुम्हारे प्रभु के सम्मुख हम दोष-मुक्त हों, इसलिए और इसलिए भी कि कदाचित् वे बच जायँ।

७.१६४

६८ कथा कथनहेतु

३२० प्रेषितों की कहानियाँ क्यों कहीं ?

१ ये प्रेषितों की कहानियाँ, जो हम तुझे सुनाते हैं, ये वे बातें हैं, जिनके द्वारा हम तेरे मन को दृढ़ करते हैं। और इनमें तेरे पास सत्य वस्तु आयी है तथा श्रद्धावानों के लिए उपदेश एवं चेतावनी।

११.१२०

६९ नूह

३२१ नूह का उद्धार

१ नूह ने हमें पुकारा था। सो पुकार का उत्तर देने में हम बहुत अनुकम्पाशील हैं।

२ हमने उसको और उसके घरवालों को बड़े भारी दुःख से मुक्ति दी।

३७ १७५-७६

३२२ श्रद्धाहीन है, तो वह पुत्र पुत्र नहीं

१ नूह ने अपने प्रभु को पुकारा, कहा : हे प्रभो ! मेरा बेटा मेरे परिवारवालों में से है और निस्सन्देह, तेरा अभिवचन सच्चा है और तू सब नियन्ताओं से बड़ा और श्रेष्ठतर नियन्ता है।

२ ईश्वर ने कहा : हे नूह ! वह तेरे परिवारवालों में से नहीं है। वह एक बिगड़ा हुआ काम है। अतः उस बात की माँग तू मुझसे न कर, जिसका तुझे ज्ञान नहीं। मैं तुझे सावधान करता हूँ कि तू गँवारों में से न हो।

११.४५-४६

७० इब्राहीम

३२३ इब्राहीम के लिए अग्नि ठंढी

१ (इब्राहीम ने) कहा : क्या तुम ईश्वर के अतिरिक्त ऐसे की भक्ति करते हो, जो न तुम्हारा कुछ भला कर सकता है, न कुछ बुरा कर सकता है?

२ धिक्कार है तुम पर और उन चीजों पर, जिसकी तुम ईश्वर के अतिरिक्त भक्ति करते हो। क्या तुम समझते नहीं?

३ वे लोग बोले : यदि तुम कुछ करनेवाले हो, तो इसको जला दो और अपने भजनीयों की सहायता करो।

४ हमने कहा : हे अग्नि ! इब्राहीम के लिए तू शीतल एवं शान्त हो जा।

२१.६६-६९

३२४ इब्राहीम की ईश्वरनिष्ठा

१ इब्राहीम ने कहा : भला देखते हो, जिसकी तुम भक्ति करते हो।

२ तुम तथा तुम्हारे बाप दादा।

३ वे निश्चय ही मेरे शत्रु हैं, सिवा विश्व-प्रभु के।

४ कि जिसने मुझे उत्पन्न किया और वही मेरा मार्ग-दर्शन करता है।

५ और वही है, जो खिलाता और पिलाता है।

६ और जब मैं बीमार होता हूँ, तो वही आरोग्य देता है।

७ और वही है, जो मुझे मारेगा, फिर जिलायेगा।

८ और जिससे मैं आशा करता हूँ कि पुनरुत्थान के दिन मेरे दोष क्षमा करेगा।

९ हे प्रभो ! मुझे विद्या दे एवं मुझे सत्कृतिवानों में प्रविष्ट कर।

१० आनेवाली पीढ़ियों में मेरे बारे में सच्ची जानकारी प्रदान कर।

११ मुझे आनन्दमय स्वर्ग के भागियों में प्रविष्ट कर।

१२ मेरे पिता को क्षमा कर कि वह भ्रमितों में से है।

१३ और जिस दिन लोग उठाये जायँगे, उस दिन मुझे नीचा न दिखा।

१४ जिस दिन कि सम्पत्ति तथा सन्तति काम नहीं आयेगी।

१५ केवल यही काम आयेगा कि ईश्वर के सम्मुख शुद्ध, स्वस्थ हृदय लेकर आये।

२६.७५-८९

३२५ पिता-पुत्र-संवाद

१ ...... निस्सन्देह, वह बहुत सच्चा सन्देष्टा था।

२ जब उसने अपने पिता से कहा कि हे पिता ! तू उसकी भक्ति क्यों करता है, जो न सुनता है, न देखता है और न तेरे कुछ काम आता है?

३ हे पिता ! मेरे पास वह ज्ञान आया है, जो तेरे पास नहीं आया। तो तू मेरे कहने पर चल। मैं तुझे सीधा मार्ग दिखा दूँगा।

४ हे पिता ! शैतान की भक्ति न कर। निस्सन्देह, शैतान उस कृपालु का विद्रोही है।

५ हे पिता ! मैं डरता हूँ कि उस कृपालु की ओर से तुझ पर कोई आपत्ति आ जाय, तो तू शैतान का साथी हो जाय।

६ इब्राहीम के पिता ने कहा : हे इब्राहीम ! क्या तू मेरे भजनीयों से फिरा हुआ है ? यदि तू इससे परावृत्त न हुआ, तो मैं तुझे अवश्य ही पत्थर मार-मारकर मार डालूँगा। मेरे पास से सदा के लिए दूर हो जा।

७ इब्राहीम ने कहा : सलाम हो तुझ पर (ईश्वर तुझे शान्ति तथा शरणता दे) मैं अपने प्रभु से तेरे लिए क्षमा माँगूँगा। निस्सन्देह, वह मुझ पर बहुत कृपालु है।

८ और मैं तुम लोगों से और जिनकी तुम ईश्वर के अतिरिक्त भक्ति करते हो, उनसे दूर हट जाता हूँ। मैं अपने प्रभु की भक्ति करूँगा। मुझे आशा है कि अपने प्रभु की भक्ति करके मैं अभागा नहीं रहूँगा।

१९.४१-४८

३२६ कोमल-हृदय इब्राहीम

१ इब्राहीम का अपने पिता के लिए क्षमा की प्रार्थना करना केवल इसी अभिवचन के कारण था, जो उसने उसे दिया था। फिर जब उस पर प्रकट हो गया कि वह ईश्वर का शत्रु है, तो उसने उसका त्याग किया। निस्सन्देह, इब्राहीम अतीव कोमल-हृदय तथा सहनशील था।

९.११४

३२७ इब्राहीम का सुपुत्र—इस्माईल

१ जब वह (इस्माईल) उसके (इब्राहीम के) साथ दौड़ सकने (की आयु) को पहुँचा, तो इब्राहीम ने कहा : बेटा ! मैं स्वप्न में क्या देखता हूँ कि तुझे जबूह कर रहा हूँ (बलि चढ़ा रहा हूँ)। तो देख, तेरी क्या राय है ? बोला : हे पिता ! तुझे जो आज्ञा दी जाती है, वह कर। यदि ईश्वर ने चाहा, तो तू मुझे अवश्य सहन करनेवाला पायेगा।

२ फिर जब दोनों ईश्वर-शरण हुए और इब्राहीम ने उसे माथे के बल लेटाया,

३ तो हमने पुकारा : हे इब्राहीम !

४ निस्सन्देह, तूने स्वप्न को सच कर दिखाया। निस्सन्देह, हम सत्कृत्य करनेवालों को इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं।

५ निस्सन्देह, यह बड़ी स्पष्ट कसौटी थी।

३७.१०२-१०६

७१ मूसा

३२८ मूसा की प्रार्थना स्वीकृत

१ हे प्रभो ! मेरे लिए मेरा वक्ष खोल दे

२ और मेरे लिए मेरा कार्य सरल कर।

३ और मेरी वाणी की ग्रन्थि खोल दे

४ कि लोग मेरी बात समझें

५ और मेरे लिए मेरे परिवार से एक सहयोगी नियुक्त कर।

६ मेरे भाई, हारून को।

७ उससे मेरी शक्ति मजबूत कर

८ और उसे मेरे काम का सहभागी कर,

९ जिससे कि हम तेरी पवित्रता का सतत बखान करें।

१० और तुझे हम बहुत याद करें।

११ निस्सन्देह, तू हमें देखनेवाला है।

१२ ईश्वर ने कहा : हे मूसा ! तूने जो माँगा, तुझे दिया गया।

२०.२५-३६

७२ यीशु ख्रीष्ट

३२९ यीशु की अन्योक्ति

१ (यीशु) बोला : निस्सन्देह मैं ईश्वर का दास हूँ। उसने मुझे ग्रन्थ दिया है और मुझे सन्देष्टा बनाया है।

२ और मुझे धन्य बकाया है चाहे मैं कहीं रहूँ। और मुझे प्रार्थना एवं नियत दान का आदेश किया है, जब तक मैं जीता रहूँ।

३ और मुझे अपनी माता के प्रति कर्तव्य-परायण बनाया और मुझे उद्धत एवं अभागी नहीं बनाया।

४ और धन्य है मुझे, जिस दिन मैं उत्पन्न हुआ और जिस दिन मैं मरूँगा एवं जिस दिन मैं जीवित होकर उठाया जाऊँगा....... ।

५ यह है यीशु मरियम का बेटा।

१९.३०-३४

● ३३० यीशु को सूली पर चढ़ाना—एक भास ही

१ उनके इस कहने पर कि हमने मरियम के बेटे यीशु ख्रीष्ट (ईसामसीह), ईश्वर के प्रेषित, को मार डाला (हमारा यह कहना है) कि उन्होंने न तो उसे मारा, न उसे सूली दी, किन्तु उन्हें भास ही हुआ और जो लोग इस विषय में विरोध करते हैं, वे इस विषय में अवश्य सन्देह में हैं। उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं, वे केवल कल्पना पर चल रहे हैं और निश्चय ही उन्होंने उसे मारा नहीं। अपितु ईश्वर ने उसे अपनी ओर उठा लिया। और ईश्वर सर्वजित्, सर्वविद् है।

४.१५७-१५८

३३१ यीशु का गुरु—पवित्र जॉन

१ हमने कहा : हे जॉन ! ग्रन्थ की दृढ़ता से थाम लो और हमने उसे बाल्यकाल में विद्या प्रदान की।

२ और अपने पास से हृदय का मार्दव दिया और पवित्रता दी और वह ईश्वर-परायण था।

३ और अपने माता-पिता के प्रति सुजनता का बर्ताव करनेवाला था, अहंकारी तथा विद्रोही न था।

४ और धन्य है उसे, जिस दिन वह उत्पन्न हुआ, जिस दिन वह मरेगा तथा जिस दिन वह जीवित करके उठाया जायगा।

१९.१२-१५

● ३३२ यीशु के अनुयायी

१ .... श्रद्धावानों की मैत्री में तुम उन लोगों को निकटतम पाओगे, जो कहते हैं कि हम क्रिश्चियन हैं। यह इसलिए कि कुछ इनमें विद्वान् हैं और भक्ति करनेवाले मठवासी साधु हैं। वे घमण्ड नहीं करते।

२ और जब वे उस वचन को सुनते हैं, जो प्रेषित पर उतारा गया है, तो तू देखेगा कि उनकी आँखें आसुओं से उमड़ती हैं, इस कारण से कि उन्होंने

सत्य को पहचाना है। वे कहते हैं कि हे प्रभो ! हम श्रद्धायुक्त हुए हैं, हमें साक्षियों के साथ लिख दे।

५.८५-८६

७३ अकथित प्रेषित

● ३ ३ ३ प्रेषित, जिनका निर्देश नहीं हुआ

१ हमने तुझसे पूर्व बहुत से प्रेषित भेजे, जिनमें से कुछ प्रेषितों का निर्देश हमने तुझसे किया है और कुछ वे हैं, जिनका निर्देश तुझसे नहीं किया...... ।

४०.७८

२७ मुहम्मद पैगंबर

७४ साक्षात्कार

३ ३ ४ प्रथम साक्षात्कार

१ पढ़ अपने प्रभु के नाम से, जिसने निर्माण किया।

२ निर्माण किया, मनुष्य को, जमे हुए रक्त से

३ पढ़, और तेरा प्रभु सबसे अधिक उदार है,

४ जिसने ज्ञान सिखाया लेखनी से,

५ सिखाया मनुष्य को, जो वह नहीं जानता था।

९६.१५

३ ३ ५ दिव्य-अनुभव

१ पवित्र है वह, जो ले गया एक रात अपने दास को पवित्र मसजिद से दूरस्थ मसजिद तक, जिसके परिसर को हमने मांगल्य का आशीर्वाद दिया है, जिससे कि उसे अपनी निशानियों का दर्शन कराये। निस्सन्देह, वह सुननेवाला, देखनेवाला है।

१७.१

३३६ निस्संशय साक्षात्कारी

१ और यह तुम्हारा साथी पागल नहीं

२ और वस्तुतः उसने उसे खुले आकाश के क्षितिज पर देखा

३ और वह अव्यक्त की बात बताने में कंजूस नहीं है।

८१.२२-२४

७५ ईश्वरदत्त आदेश

३३७ विशेष प्रार्थना का आदेश

१ नित्य-नियमित प्रार्थना कर, सूर्य ढलने से रात के अँधेरे तक, प्रतिदिन उषःकाल के समय कुरान पढ़। निश्चय ही उषःकाल का कुरान पढ़ना देखा जाता है।

२ और रात को कुरान के साथ विशेष प्रार्थना कर। यह तेरे लिए अतिरिक्त प्रार्थना है। आशा है कि तुझे तेरा प्रभु स्तवनीय स्थान पर पहुँचा देगा।

३ और कह : हे प्रभु! मुझे जहाँ भी ले जा, भलाई के साथ ले जा और जहाँ से भी निकाल, भलाई के साथ निकाल और अपने पास से ऐसा अधिकार दे, जो (तेरी) सहायता देनेवाला हो।

४ और कह : सत्य आ गया है और असत्य मिट गया है। निस्सन्देह, असत्य मिटनेवाला ही है।

१७.७८.८१

● ३३८ केवल सन्देशवाहक

१ चाहे कोई अभिवचन जो हमने उन्हें दिया है, हम तुझे दिखला दें, चाहे हम तुझे उठा लें सो तेरा जिम्मा केवल (सन्देश) पहुँचा देना है, हिसाब लेना हमारा काम है।

१३.४०

३३९ प्रबोधन तेरा काम नहीं

१ निस्सन्देह तू प्रेतों को सुना नहीं सकता तथा बहरों को अपनी पुकार सुना नहीं सकता, जब कि वे पीठ फेरकर चल दें।

२ और तू अन्धों को, उनके भटकने से (बचाकर) मार्गदर्शन करनेवाला भी नहीं ! तू तो केवल उन्हींको सुना सकता है, जो हमारी निशानियों पर श्रद्धा रखते हैं, फिर वे शरणागत भी हैं।

२७.८०-८१

३४० मुहम्मद और अन्धा--

"कौन जानता है कि करुणा किस पर होगी !"

१ रसूल ने त्योरी चढ़ायी और मुँह फेरा
२ कि उसके पास एक अन्धा (अचानक) आ गया
३ और तुझे क्या पता, कदाचित् वह पवित्र हो जाता।
४ या ध्यान देता तो उपदेश देना उसे लाभ पहुँचाता।
५ तो वह जो परवाह नहीं करता
६ उसका तो तू ख्याल करता है,
७ यद्यपि तुझ पर कोई दोष नहीं कि वह नहीं सुधरता।
८ और वह जो तेरे पास दौड़ता हुआ आया
९ और वह डरता है
१० तो तू उसकी ओर से ध्यान हटा लेता है।

८०.१-१०

३४१ निर्भयता से सन्देश पहुँचाओ

१ हे सन्देष्टा, तुझ पर तेरे प्रभु की ओर से जो कुछ उतारा गया है, उसे (लोगों के पास) पहुँचा दे और यदि तू न करे, तो तूने उसका सन्देश नहीं पहुँचाया। और ईश्वर तुझे (विरोधी) लोगों से बचा लेगा।

५.७०

३४२ कोई कुछ कहे, तू मरने तक भक्ति कर

१ निश्चय ही हम जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं, उससे तेरा मन दुःखी हो जाता है।

२ तो तू अपने प्रभु की स्तुति के साथ उसकी पवित्रता का वर्णन कर और प्रणिपात कर।

३ और अपने प्रभु की भक्ति करता रह, यहाँ तक कि तेरी मृत्यु आ जाय।

१५.९७-९९

● ३४३ निश्चय होने तक ही परामर्श कर

१ यह ईश्वर की कृपा है कि उन लोगों के भले के लिए तू कोमल-हृदय है। यदि तू कर्कश एवं कठोर-हृदय होता, तो वे तेरे इर्द-गिर्द से छँट जाते। तो तू उन्हें माफ कर और उनके लिए क्षमा की प्रार्थना कर, और काम में उनसे परामर्श ले। फिर जब तू निश्चय करे, तो फिर ईश्वर पर विश्वास रख। निस्सन्देह, ईश्वर भरोसा करनेवालो को चाहता है।

३.१५९

३४४ माम् अनुस्मर युद्ध्य च

१ क्या हमने तेरे लिए तेरा वक्ष विशाल नहीं किया?

२ और हमने तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया,

३ जिस बोझ ने तेरी पीठ तोड़ दी थी।

४ और हमने तेरे लिए तेरी कीर्ति बढ़ायी।

५ तो निस्सन्देह, कष्टों के साथ सुख है।

६ निस्सन्देह, कष्टों के साथ सुख है।

७ फिर जब तू कार्य-मूक्त हो जाय, तो फिर प्रयत्न कर।

८ और अपने प्रभु की ओर ध्यान लगा।

९४.१-८

● ३४५ आत्मौपम्य बोध

१ शपथ है चढ़ते दिन की

२ और रात की जब छा जाय।

३ तेरे प्रभु ने न तो मुझे छोड़ा और न तुझ पर अप्रसन्न हुआ,

४ और निश्चय ही तेरा उत्तर-जीवन तेरे पूर्व-जीवन से अधिक उत्तम है।
५ और तेरा प्रभु तुझे अवश्य देगा, फिर तू सन्तुष्ट हो जायगा।
६ क्या उसने तुझे अनाथ नहीं पाया, और आश्रय दिया?
७ और उसने तुझे भटकता हुआ पाया, तो मार्ग दिखाया।
८ और दरिद्र पाया, तो सम्पन्न बना दिया।
९ अतः जो अनाथ है, उसे न सता,
१० और जो माँगने आये, उसे मत झिड़क,
११ और अपने प्रभु की देनों का बखान कर।

९३.१-११

७६ घोषणा

३४६ पंच आदेश

१ कह : मैं तो केवल एक बात समझता हूँ कि तुम ईश्वर के लिए दो-दो एक-एक खड़े हो जाओ। फिर सोचो कि तुम्हारे इस साथी को कुछ पागलपन नहीं, वह तो केवल होशियार करनेवाला है एक बड़ी आपत्ति आने से पूर्व।

२ कह : मैंने तुमसे जो कुछ मुआवजा माँगा हो, तो वह तुम ही रखो, मेरा प्रतिफल तो केवल ईश्वर के जिम्मे है और वह सर्वद्रष्टा है।

३ कह : निस्सन्देह, मेरा प्रभु सत्य का आविष्कार करता है, वह अव्यक्त का ज्ञाता है।

४ कह सत्य आया और असत्य न निर्माण करता है, न लौटकर लाता है।

५ कह : यदि मैं भ्रान्त हो जाऊँ, तो केवल अपने ही आपके लिए भ्रमित हो जाऊँगा और यदि मैं बोध पाऊँ, तो वह इसी कारण से कि मेरे प्रभु ने मुझ पर प्रज्ञान भेजा है। निस्सन्देह, वह सुननेवाला है, निकट है।

३४.४६-५०

७७ गुण-सम्पदा

३४७ प्रार्थनामयता

१ निस्सन्देह, तेरा प्रभु जानता है कि तू और तेरे साथियों में से कुछ लोग (प्रार्थना में) खड़े रहते हैं, दो-तिहाई रात के लगभग और आधी रात और तिहाई रात.... ।

७३.२०

● ३४८ ईश्वर का सतत सान्निध्य

१ यदि तुम सन्देष्टा की सहायता न करोगे, तो निश्चय जानो, परमात्मा ने उसकी सहायता उस समय की है, जिस समय श्रद्धाहीनों ने उसे निकाल दिया था, जब कि वह दो में का दूसरा था। जब वे दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहा था : दुःख न कर, निश्चय ही परमात्मा हमारे साथ है, उस समय परमात्मा ने उसे अपनी ओर से चित्त की शान्ति दी और उसकी ऐसी सेनाओं से सहायता की कि जो तुम्हें दिखाई नहीं पड़ती थी। और श्रद्धाहीनों का बोल नीचा किया और परमात्मा का बोल ऊँचा रहा। परमात्मा सर्वजित् है, सर्वविद् है।

९.४०

३४९ ईश्वर-भक्ति का आदर्श उदाहरण

१ निस्सन्देह, तुम्हारे लिए अर्थात् उस व्यक्ति के लिए, जो ईश्वर की और अन्तिम दिन की आशा रखता हैं और ईश्वर को बहुत स्मरण करता है, ईश्वर के प्रेषित में एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

३३.२१

३५० प्रेषित और श्रद्धावान् का सम्बन्ध

१ श्रद्धावानों को अपने प्राण से अधिक सन्देष्टा से लगाव है।

३३.६

● ३५१ पूर्व-जीवन से प्रामाणिकता सिद्ध

१ कह : यदि परमात्मा चाहता, तो मैं इस वाणी को तुम्हारे सम्मुख न पढ़ता

और न वह तुम्हें इससे अवगत करता। वास्तविकता यह है कि इसके पूर्व-जीवन का एक भाग मैं तुममें व्यतीत कर चुका हूँ, फिर क्या तुम इतना नहीं समझते?

१०.१६

३५२ अनपढ़ ईश्वरनिष्ठ

१ कह : ऐ लोगो, मैं तुम सबकी ओर उस परमात्मा का भेजा हुआ हूँ, जिसका आकाशों एवं भूमि में आधिपत्य है। उसके अतिरिक्त कोई नियन्ता नहीं। वही जिलाता है, वही मारता है। सो श्रद्धा रखो परमात्मा पर और उसके भेजे हुए अनपढ़ सन्देष्टा पर। जो परमात्मा पर और उसकी वाणी पर श्रद्धा रखता है और तुम उसका अनुसरण करो, जिससे कि तुम्हें मार्ग प्राप्त हो।

७.१५८

३५३ ईश्वर ने मुहम्मद को दृढ़ किया

१ और वे लोग चाहते थे कि तुझे उस वस्तु से बिचला दें, जो हमने तेरी ओर प्रज्ञान के रूप में भेजी, जिससे कि तू उसके अतिरिक्त कुछ और हमारे नाम से गढ़ ले और तब वे तुझे अवश्य मित्र बना लेते।

२ और यदि हम तुझे सँभाले न रखते, तो तू अवश्य उनकी ओर कुछ-न-कुछ झुकने लग जाता।

१७.७३-७४

३५४ सबकी सुननेवाला

१ उनमें से कुछ ऐसे हैं, जो सन्देष्टा को दुःख देते हैं और कहते हैं कि वह तो कान है (अर्थात् सबकी सुनता है)। कह : कान है तुम्हारे भले के लिए। परमात्मा पर श्रद्धा रखता है और श्रद्धावानों का विश्वास करता है और तुममें से जो श्रद्धा रखते हैं, उनके लिए वह करुणा-रूप है...... ।

९.६१

३५५ बहुमत से अप्रभावित

१ संसार में अधिक लोग ऐसे हैं कि यदि तू उनका कहना मानने लगे, तो वे तुझे ईश्वर के मार्ग से भटका देंगे। वे केवल कल्पनाओं पर चलते हैं और केवल अटकलबाजियाँ किया करते हैं।

६.११६

७८ मिशन

३५६ करुणा का दूत

१ और हमने तुझे भेजा है, संसार की जनता के लिए करुणा-रूप बनाकर।

२१.१०७

● ३५७ पंचविध कार्य

१ हे सन्देष्टा, निस्सन्देह, हमने तुझे भेजा है, बतानेवाला, शुभ वार्ता देनेवाला, सावधान करनेवाला बनाकर

२ और परमात्मा की ओर उसकी आज्ञा से, आवाहन करनेवाला तथा प्रकाश देनेवाला दीपक बनाकर।

३३.४५-४६

७९ आशीर्वाद-पात्र

● ३५८ मुहम्मद के लिए आशीर्वाद की याचना करो

१ निस्सन्देह, परमात्मा एवं उसके देवदूत सन्देष्टा पर आशीर्वाद भेजते हैं। हे श्रद्धावानो ! तुम भी आशीर्वाद भेजो उस पर और सलाम (शान्ति) भेजो सलाम (शान्ति) कहकर।

३३.५६

खण्ड ९ : गूढ़-शोधन

२८ तत्त्वज्ञान

८० जगत्

३५९ सृष्टि का गम्भीर हेतु

१ हमने आकाश, भूमि एवं जो कुछ उसमें हैं, उसे व्यर्थ नहीं बनाया।

२ यदि हम कोई कौतुक ही करना चाहते, तो उसे अपने पास ही से कर लेते, यदि हमें यह करना होता।

२१.१६-१७

● ३६० सृष्टि-रचना निरर्थक नहीं

१ वे, जो परमात्मा को स्मरण करते हैं, उठते-बैठते तथा लेटते और आकाश और भूमि की रचना में चिन्तन करते हैं (कहते हैं) हे प्रभो ! तूने यह सब कुछ व्यर्थ और निरुद्देश्य नहीं बनाया।

३.१९१

८१ जीव

३६१ जीवननिर्मिति सोद्देश्य

१ क्या तुमने यह कल्पना कर ली है कि हमने तुम्हें व्यर्थ निर्माण किया है? और यह कि तुम हमारी ओर नहीं लौटाये जाओगे?

२३.११५

३६२ निद्रा : मृत्यु का पूर्व-प्रयोग

१ वही है, जो रात को तुमको खींच लेता है और दिन में तुम जो कुछ

करते हो, जानता है। फिर इस दुनिया में तुम्हें उठाता है कि नियत अवधि पूरी हो, फिर उसी की ओर तुम्हें लौटकर जाना है, फिर वह तुम्हें बता देगा, जो कुछ तुम करते रहे हो।

६.६०

● ३६३ निद्रा और मृत्यु

१ ईश्वर खींच लेता है जीवों को उनकी मृत्यु के समय और जिन्हें मृत्यु नहीं आयी, उन्हें निद्रा की स्थिति में खींच लेता है। फिर जिन पर मृत्यु निश्चित हो चुकी है, उन्हें रोक लेता है। और शेष को विदा कर देता है एक निश्चित अवधि के लिए। इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए, जो सोच-विचार के अभ्यासी हैं।

३९.४२

● ३६४ जीवविषयक प्रश्न

१ ये लोग तुझसे पूछते हैं जीव के विषय में। कह : जीव मेरे प्रभु की आज्ञा से है। तुम लोगों ने ज्ञान से कम ही भाग पाया है।

२ और यदि हम चाहें, तो वह वस्तु ले जायँ, जो हमने तेरी ओर प्रज्ञान के रूप में भेजी है..........।

१७.८५-८६

३६५ अव्यक्त का ज्ञान नहीं

१ कह : मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास ईश्वर के खजाने हैं और न मैं अव्यक्त का ज्ञान रखता हूँ और न तुमसे यह कहता हूँ कि मैं देवदूत हूँ। मैं केवल उस प्रज्ञान का अनुसरण करता हूँ, जो मेरी ओर भेजा गया है........।

६.५०

● ३६६ यदि अव्यक्त का ज्ञान होता !

१ कह : मैं अपने-आपके लिए लाभ और हानि का अधिकार नहीं रखता

ईश्वरेच्छा के अतिरिक्त। और यदि मैं अव्यक्त जानता होता, तो मैं भलाई से बहुत लेता और मुझे बुराई लगती नहीं········ ।

७.१८८

● ३६७ अनावश्यक प्रश्न न करो

१ हे श्रद्धावानो, ऐसी बातें न पूछा करो कि यदि (उनके उत्तर) तुम पर प्रकट कर दिये जायँ, तो तुम्हें संकटापन्न कर दें········ ।

५.१०४

८२ अन्तर्यामी

३६८ जिसे चाहता है, उसे प्रज्ञान देता है

१ उच्चप्रतिष्ठ सिंहासनाधिष्ठित वह अपने दासों में से जिसको चाहता है, अपनी आज्ञा से प्रज्ञान देता है, जिससे कि (वह) मुलाकात के दिन के विषय में सावधान करे।

५.१४०

● ३६९ जीवान्तर्यामी

१ हे श्रद्धावानो ! तुम ईश्वर एवं प्रेषित की आज्ञा का पालन करो। वह तुम्हें इसलिए बुलाता है कि तुम्हें जीवन प्रदान करे और यह जान लो कि ईश्वर मनुष्य और उसके हृदय के बीच में (विराजमान) है और यह कि उसीके पास तुम जमा किये जाओगे।

८.२४

२९ कर्मविपाक

८३ कर्मविपाकविषयक मूलभूत श्रद्धा

३७० ग्यारह सूत्र

१ कोई बोझ ढोनेवाला किसी और का बोझ ढो नहीं सकता।

२ और मनुष्य ने प्रयत्न किया है, वही उसके लिए है

३ और उसका प्रयत्न अवश्य देखा जायगा।
४ और फिर उसे पूरा-पूरा प्रतिफल मिलेगा।
५ और तेरे प्रभु तक सबको पहुँचना है।
६ और वही हँसाता है, वही रुलाता है।
७ और वही मारता है, वही जिलाता है।
८ और उसीने नर और नारी का जोड़ा लगाया है,
९ एक बूँद से, जो टपकायी जाती है।
१० और उसके जिम्मे है दो बार पैदा करना।
११ और वही समृद्ध करता है और वही परितृप्ति देता है।
१२ और वही लुब्धक तारे का प्रभु है।

५३.३८-४९

८४ कर्मविपाक अपरिहार्य

३७१ स्वात्मना कर्त्तव्यम्

१ हे श्रद्धावानो ! अपनी चिन्ता करो। दूसरे के भटकने से तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ता, जब कि तुम मार्ग पर हो। ईश्वर की ही ओर तुम सबको लौटकर जाना है, फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे हो।

५.१०८

३७२ उत्तरदायित्व तुम्हारा

१ जो मार्ग पर चलता है, वह अपने ही कल्याण के लिए चलता है और जो पथभ्रष्ट हुआ, वह अपने ही अकल्याण के लिए पथभ्रष्ट हुआ। कोई बोझ ढोनेवाला दूसरे का बोझ नहीं ढोता.......।

१७.१५

● ३७३ मनुष्य के बदलने पर ईश्वर बदला करता है

१ वास्तविकता यह है कि ईश्वर किसी समाज की स्थिति नहीं बदलता, जब तक कि उस समाज के लोग, जो उनके मन में है, उसे नहीं बदलते।

ईश्वर जब किसी समाज पर आपत्ति डालना चाहता है, तो वह टलती नहीं और ईश्वर के अतिरिक्त उनका कोई सहायक नहीं। १३.११

● ३७४ आत्मैव रिपुरात्मनः

१ तुमको जो कष्ट पहुँचाता है, वह तुम्हारे हाथों ने जो कमाया, उसके कारण है। बहुत से पाप तो वह क्षमा ही करता है।

४२.३०

● ३७५ पुण्य का फल दसगुना

१ जो पुण्य लेकर आये, उसके लिए उसका दसगुना है और जो बुराई लेकर आये, तो उसे उसीके समान प्रतिफल दिया जायगा और उन पर अन्याय न होगा।

६.१६०

३७६ कर भला तो हो भला

१ भलाई का बदला भलाई ही है।

५५.६०

३७७ विपुला च पृथ्वी

१ कह : मेरे श्रद्धावान् दासो ! ईश्वर-परायणता धारण करो। जो लोग इस जगत् में भलाई करते हैं, उनके लिए अच्छा प्रतिफल है और ईश्वर की भूमि विशाल है। तितिक्षा करनेवालों को ही उनका प्रतिफल अगणित मिलता है।

३९.१०

३७८ सद्वचन और सत्कृति की प्रतिष्ठा

१ जो प्रतिष्ठा चाहता है, तो (वह समझ ले) कि सारी प्रतिष्ठा ईश्वर के ही लिए है। सद्वचन उसी तक पहुँचते हैं और सत्कृत्यों को वह उच्चता प्रदान करता है। और जो लोग बुरी चाल चलते हैं, उनके लिए कठोर दण्ड है और उनका कपट नष्ट होगा।

३५.१०

८५ मृत्यु के बाद भी कर्म नहीं टलता

● ३७९ यहाँ अन्धा, सो वहाँ अन्धा

१ जो कोई इहलोक में (ईश्वर के विषय में) अन्धा रहा, वह अन्तिम दिन भी (उसी प्रकार) अन्धा रहेगा और मार्ग से बहुत भटका होगा।

१७.७२

● ३८० ईश्वर की तुला

१ पुनरुत्थान के दिन हम न्याय की तराजू रखेंगे। किसी प्राणी पर कोई अन्याय नहीं किया जायगा और यदि कोई राई के दाने के बराबर भी कर्म होगा, तो हम उसे भी लाकर उपस्थित करेंगे और हम लेखाजोखा करनेवाले पर्याप्त हैं।

२१.४७

● ३८१ धरती काँपती है

१ जब धरती (अन्तिम) भूकम्प से हिलायी जायगी

२ और भूमि अपने बोझे बाहर निकाल फेंकेगी

३ और मनुष्य कहेगा कि इसको क्या हुआ ?

४ उस दिन वह अपनी बातें बतायेगी

५ इसलिए कि तेरे प्रभु ने उसे यही आज्ञा भेजी।

६ उस दिन लोग निकलेंगे बिखरे हुए

७ ताकि वे अपने कृत्यों को देखें। सो जो कणभर भलाई करेगा, वह उसे देखेगा।

८ और जो कणभर बुराई करेगा, वह उसे देखेगा।

९९.१-८

३८२ हलका पल्ला भारी पल्ला

१ वह खड़खड़ा डालनेवाली,

२ क्या है वह खड़खड़ा डालनेवाली,

३ और तूने क्या समझा कि क्या है वह खड़खड़ा डालनेवाली ? (वह है अन्ति दिन की स्थिति)।

४ जिस दिन होंगे लोग जैसे बिखरे हुए पतंगे।

५ और पहाड़ धुनी हुई रंगीन ऊन की भाँति हो जायँगे,

६ तो जिसका पल्ला भारी होगा,

७ तो वह वहाँ सुखी जीवन जियेगा।

८ और जिसका पल्ला हलका होगा,

९ तो उसका स्थान गर्त है।

१० और तूने क्या सोचा कि वह (गर्त) क्या है ?

११ (वह है) आग दहकती हुई।

१०१.१-११

३० साम्पराय (मरणोत्तर जीवन)

८६ पुनरुत्थान अटल

३८३ पत्थर हो जाओ या लोहा

१ कहते हैं कि क्या जब हम हड्डियाँ और चूरा-चूरा हो जायँगे, तो क्या फिर हम उठाये जायँगे ?

२ कह : तुम पत्थर या लोहा हो जाओ या और कोई चीज, जो तुम्हारे मन में बड़ी लगे।

३ फिर वे कहेंगे : फिर हमें कौन लौटाकर लायेगा ? कह : वही, जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया............।

१७.४९-५१

३८४ सालनेवाले मन का साक्ष्य

१ मैं शपथ खाता हूँ पुनरुत्थान के दिन की,

२ और शपथ खाता हूँ उस मन की, जो बुराई की निन्दा करे।

३ क्या मनुष्य यह विचार करता है कि हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठी नहीं करेंगे?

४ क्यों नहीं? हम समर्थ हैं कि उसकी उँगलियों की पोर-पोर दुरुस्त करें।

७५.१-४

८७ पुनरुत्थान का दिन

३८५ पुनरुत्थान एक वास्तविकता है

१ शपथ है उन (हवाओं) की, जो उड़ाकर बिखेरनेवाली हैं,

२ फिर शपथ है उनकी, जो बोझ उठानेवाली हैं,

३ फिर सहजता से चलनेवाली हैं,

४ फिर आज्ञा से बाँटनेवाली हैं,

५ निस्सन्देह तुम्हें जिस चीज का अभिवचन दिया गया है, वह अवश्य सत्य है।

६ और निस्सन्देह, न्याय अवश्य होनेवाला है।

५१.१-६

३८६ छूट चले सब संगी-साथी

१ फिर जब आयेगी कान (को) फोड़ देनेवाली (आवाज),

२ उस दिन मनुष्य भागेगा अपने भाई से।

३ और अपनी माँ और अपने बाप से।

४ और अपनी जीवन-संगिनी से और अपनी सन्तति से।

५ उस दिन उनमें से प्रत्येक मनुष्य की ऐसी हालत होगी, जो उसके लिए ही पर्याप्त होगी।

८०.३३-३७

● ३८७ कोई सिफारिश न चलेगी

१ और डरो उस दिन से, जब कोई किसी के काम नहीं आयेगा। और न

किसी की ओर से कोई मुआवजा स्वीकार किया जायगा। और न किसीकी ओर से कोई सिफारिश मंजूर की जायगी। और न उन्हें कोई सहायता मिल सकेगी।

२.१२३

३८८ बारह निशानियाँ

१ जिस दिन सूर्य उलट दिया जायगा।

२ और तारे झड़ जायँगे।

३ और पहाड़ चलाये जायँगे।

४ और जब आसन्नप्रसवा (दस मास की गाभिन) ऊँटनियाँ छुटी फिरेंगी।

५ और जब वन्य पशु इकट्ठे किये जायँगे।

६ और समुद्र भड़काये जायँगे।

७ और जब प्राण मिलाये जायँगे।

८ और जीवित गाड़ी हुई (लड़की) से पूछा जायगा

९ कि किस दोष से वह मारी गयी।

१० और जब कर्म-पत्र खोले जायँगे।

११ और जब आकाश की खाल उतारी जायगी।

१२ और जब नारकीय अग्नि दहकायी जायगी।

१३ और जब स्वर्ग समीप लाया जायगा।

१४ और प्रत्येक जीव जान लेगा कि उसने क्या किया है।

८१.१-१४

८८ स्वर्ग, नरक आदि की व्यवस्था

● ३८९ बेड़ियाँ, तौक और दहकती आग

१ हमने श्रद्धाहीनों के लिए जंजीरें, तौक और दहकती आग तैयार रखी है।

७६.४

● ३९० कान, आँख और खाल भी गवाही देगी

१ जिस दिन ईश्वर के शत्रु आग की ओर इकट्ठे किये जायँगे, तो उनकी टोलियाँ बनायी जायँगी।

२ यहाँ तक कि जब उस आग के पास आ जायँगे, तो उनके कान, उनकी आँखें एवं उनकी खालें उनके विरुद्ध उनकी करतूतों की गवाही देंगी।

३ वे अपनी खालों से कहेंगे कि तुमने हमारे विरुद्ध क्यों गवाही दी? वे उत्तर देंगे : हमें उसी ईश्वर ने कहलवाया, जिसने हर चीज को वाणी दी। उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसीकी ओर तुम लौटाये जा रहे हो।

४ और तुम (पाप करते समय) छिपाते थे (तो) इस विचार से नहीं कि (कल) तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे विरुद्ध गवाही देंगी, अपितु तुम्हारी यह कल्पना थी कि तुम्हारी बहुत सी करतूतों को ईश्वर नहीं जानता।

४१.१९-२२

३९१ पुण्यवानों का स्थान

१ परलोक का वह घर हम उन लोगों के लिए नियत करते हैं, जो धरती पर न बड़ा बनने का विचार करते हैं, न कलह करने का। और ईश्वर-परायणों के लिए सद्‌गति है।

२८.८३

३९२ क्षीरं मधुरं मधूकदम्

१ ईश्वर-परायणों से जिस स्वर्ग का अभिवचन दिया गया है, उसकी स्थिति यह है कि उसमें पानी की नदियाँ हैं, जो (पानी) बिगड़नेवाला नहीं और दूध की नदियाँ हैं, जिस (दूध) का स्वाद बदला हुआ नहीं होगा और ऐसे शर्बत की नदियाँ हैं, जो (शर्बत) पीनेवालों को स्वाद देनेवाली होंगी और मधु की नदियाँ हैं, जो (मधु) स्वच्छ किया हुआ

होगा। और उन ईश्वर-परायणों के लिए वहाँ भाँति-भाँति के फल हैं और उनके प्रभु की ओर से क्षमा है......।

४७.१५

३९३ ऊँचा स्थान

१ और उन दोनों (स्वर्ग और नरक) के बीच एक सीमा-रेखा होगी और ऊँचे स्थान के ऊपर कुछ लोग होंगे कि प्रत्येक को उसके चिह्न से पहचान लेंगे और स्वर्गवालों से पुकारकर कहेंगे कि तुमको सलाम हो, वे अभी स्वर्ग में प्रविष्ट नहीं हुए, किन्तु उसके प्रत्याशी हैं।

२ और जब उनकी दृष्टि नरकवालों की ओर फिरेगी, तो वे कहेंगे : हे प्रभो! हमें उन पापियों में सम्मिलित न कर।

७.४६-४७

३९४ इच्छा + श्रद्धा + प्रयत्न = साफल्य

१ जो परलोक की इच्छा रखता है, और उसके लिए प्रयत्न करता है, जैसा कि उसके लिए प्रयत्न करना चाहिए और वह श्रद्धावान् हो, तो ऐसे प्रत्येक व्यक्ति का प्रयत्न सफल होगा।

१७.१९

३९५ दाहिनेवाले, बायेंवाले एवं समीपवाले

१ तुम हो जाओगे तीन प्रकार के :

२ दाहिनेवाले, कैसे अच्छे हैं दाहिनेवाले।

३ और बायेंवाले, कैसे बुरे हैं बायेंवाले।

४ और आगे निकल जानेवाले सबसे आगे हैं।

५ वे लोग समीपस्थ हैं।

५६.७-११

३९६ अन्त में मधुर या आदि में मधुर

१ **हे मनुष्य, तुझे परिश्रम करना चाहिए अपने प्रभु के समीप पहूँचने के**

लिए। खूब परिश्रम कर, फिर तू उससे मिलनेवाला है।

२ तो जब उसका कर्म-क्षेत्र उसके दाहिने हाथ में दिया गया

३ तो उससे हिसाब लिया जायगा, सरल हिसाब।

४ और वह अपने लोगों की ओर आनन्दित होकर लौटेगा।

५ और जिसको अपना कर्म-पत्र पीठ के पीछे से दिया गया,

६ वह पुकारेगा : मृत्यु ! मृत्यु !

७ और वह नारकीय अग्नि में प्रविष्ट होगा।

८ निस्सन्देह, वह अपने बाल-बच्चों में खुश था।

९ निश्चय ही उसने कल्पना की थी कि वह कदापि नहीं लौटेगा।

८४.६-१४

● ३९७ यावत् ईश्वरेच्छा

१ जो अभागे होंगे वे आग में होंगे, वहाँ वे चीखेंगे और धाड़े मारकर रोयेंगे।

२ वे उसमें सदा रहेंगे, जब तक कि आकाश और भूमि रहेंगे, सिवा इसके कि तेरा प्रभु चाहे। तेरा प्रभु जो चाहता है, उसे कर डालता है।

३ और वे लोग, जो भाग्यवान् होंगे वे स्वर्ग में होंगे। वहाँ वे सदा रहेंगे, जब तक आकाश और भूमि रहें, सिवा इसके कि तेरा प्रभु चाहे। यह अखण्ड उपहार है।

११.१०६-१०८

८९ शान्ति-मंत्र

● ३९८ शान्त जीव

१ हे शान्त जीव !

२ लौट च्चल अपने प्रभु की ओर ! तू उससे प्रसन्न और वह तुझसे प्रसन्न।

३ सो मेरे (अल्लाह के) दासों में सम्मिलित हो जा।

४ और मेरे स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा।

८९.२७-३०

९० ईश्वर प्रसाद

● ३९९ ईश्वर की प्रसन्नता सबसे श्रेष्ठ

१ ईश्वर ने श्रद्धावानों और श्रद्धावतियों को ऐसे स्वर्गोद्यानों का अभिवचन दिया है, जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं, वे उनमें नित्य रहेंगे। और इन सदाबहार उद्यानों में पवित्र गृहों का भी अभिवचन है और सबसे बढ़कर ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त होगी। यही बड़ी सफलता है।

९.७२

● ४०० स्वर्ग से मेरे पास अधिक

१ ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य पूर्ण करनेवालों के लिए स्वर्ग समीप लाया जायगा, दूर न होगा।

२ (कहा जाया) यह है जिसका अभिवचन प्रत्येक पश्चात्ताप करनेवाले एवं सावधानी से आज्ञा-पालन करनेवाले के लिए तुमसे किया गया,

३ जो डरता है कृपालु से बिना देखे और ईश्वर-प्रवृत्त मन के साथ आता है।

४ उसमें शान्ति से समर्पित होकर प्रविष्ट हो जाओ। यह अमरता का दिन है।

५ वह जो कुछ चाहेंगे, वहाँ उनके लिए उपलब्ध है और हमारे पास और भी अधिक है।

५०.३१-३५

●

कुछ शब्दों के अर्थ

'कुरआन-सार' में प्रयुक्त कुछ शब्दों के मूल अरबी शब्द देकर कुरआन-कोशों के अनुसार यहाँ उनके अर्थ प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इससे मूल अर्थग्रहण में सुविधा होगी।

१. अन्तिम दिन, अन्तिम न्याय का दिन-**आख़िरत**-परलोक, शाश्वत जीवन, पुनर्जीवन, दूसरी जिन्दगी।

२. इब्लीस-**इब्लीस**-शैतान, ईश्वर की कृपा के विषय में हताश।

३. शैतान-**शैतान**-आज्ञा न पालनेवाला, नेकी से दूर, जलनेवाला, निस्सार।

४ कृपावान्-**रहमान**-बहुत मेहरबान, ऐसा कृपावान्, जो माँगने पर देता ही है।

५. करुणावान्-**रहीम**-अतीव करुणाशील, ऐसा कि उससे न माँगा जाय तो नाराज हो जाय।

६. ग्रंथवान् हज़रत मुहम्मद के पूर्ववर्ती प्रेषितों को ईश्वर से प्राप्त हुए ग्रन्थों के अनुयायी।

७. जप, जयजयकार-**तस्बीह**-ईश्वर की पवित्रता का वर्णन करना। ईश्वर-भक्ति में तन्मय होना।

८ जीविका, रोजी-**रिज़्क**-इहलोक एवं परलोक की देनें, आन्तरिक एवं बाह्य प्रभु-प्रसाद।

९. दान-इनूफाक- ईश्वर के कार्यों में धन का व्यय।

नियमित-नियत-दान-**ज़कात**-ज़कात का धात्वर्थ है शुद्धता, स्वच्छता। चित्त-शुद्धि के लिए सत्कार्य में धन का नियमित तथा नियत व्यय।

१०.निर्लज्जता-लज्जाहीनता। लज्जा-**हया**। उसका स्वरूप इस प्रकार कहा गया है : सिर और सिर में जो चिन्तन एवं विचार हैं; उनकी देखभाल करना, पेट की

और उसमें जो कुछ भरा है, उन सब पर नजर रखना और मृत्यु के पश्चात् जो जीवन होगा, उसका स्मरण रखना।

११. पश्चात्ताप–**तोबा**–बुराई से परावृत्त होकर भलाई की ओर मुड़ना। (१) बुरे कामों को बुरा समझकर छोड़ देना। (२) हाथ से कोई बुरा कार्य होने पर परिताप करना। (३) पुनः गलती न करने का इरादा करना। (४) जिस काम की आदत डालने से दुष्कृत्यों का प्रतिबन्ध होता है, ऐसे कामों की आदत डालना। ये चारों बातें करने से पश्चात्ताप की शर्तें पूरी होती हैं।

१२. प्रज्ञान–**वह्य**–इशारे से बताना, इशारे से बात करना, वह ईश्वरीय शब्द, जो प्रेषितों को स्फुरित होता है।

१३. प्रणिपात–**सज्दा**–भूमि पर माथा रखना, नमाज पढ़ना, ईश्वर के सम्मुख नम्र होना।

१४. विभक्त–**शिर्क**–साझी बनाना, अनन्यनिष्ठ न होना। ईश्वर ने जो चीजें अपने लिए खास की है, अपने दासों के जिम्मे दास्यत्व के निशान ठहराये हैं, वह ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य देहधारी व्यक्ति, जीव या वस्तु के लिए करना।

१५. विभक्त–**मुश्रिक**–विभक्ति का शिकार।

१६. शरणता–**इस्लाम**–आज्ञा पालना, ईश्वर के सिपुर्द होना, अपने तईं ईश्वर को सौंपना, ईश्वरीय प्रसाद प्राप्त करना।

१७. शांतजीव–**नफ़्से मुत्मअ़िन्ना**–समाधान, वह विश्राम, जो कष्ट एवं प्रयासों के पश्चात् प्राप्त हो। अन्तःसमाधान, जिसके कारण कोई विकार या सन्देह नहीं उठता। इस अवस्था को सूफी लोग 'ऐनुल् यकीन'–प्रत्यक्ष साक्षात्कार कहते हैं, ऐसा कहा जाय तो गलत न होगा।

१८. टोकनेवाला मन–**नफ़्से लव्वामा**–टोकनेवाला, अपने दोषों का सूचन करनेवाला मन। मनुष्य को उसकी बुराई पर टोकनेवाला मन कि क्यों उसने बुराई की और भलाई करने पर पूछनेवाला कि उसने उससे अधिक भलाई क्यों नहीं की?

१९. दोषप्रवृत्त मन–**नफ़्से अम्मारा**–बुरी आज्ञा करनेवाला मन।

२०. विकार–**वस्वसा**–बुरा विचार, धन को भगा ले जानेवाला, शैतान, कुत्ते और शिकारी की हल्की आवाज। वृक्ष की छोटी सरसराहट।

२१. सुजनता, सत्कृति–**इहसान**–भला काम इस प्रकार करना; मानो तुम, ईश्वर को देख रहे हो। यदि ऐसा न हो सके, तो फिर यह समझते रहना कि वह तुम्हें देख रहा है।

२२. श्रद्धा–**ईमान**–निश्चय, आस्तिकता, निष्ठा।

२३. श्रद्धावान् भक्त–**मोमिन**।

२४. श्रद्धाहीन, अभक्त, नास्तिक–**काफिर, मुलूहिद**।

२५. सन्देष्टा–**नबी**–ईश्वर के सन्देश का स्पष्टतया विवरण करनेवाला।

२६. प्रेषित, पैगंबर–रसूल–ईश्वर का सन्देश पहुँचनेवाला, ईश्वर का भेजा हुआ, क़ासिद, ईश्वर के सन्देश को लोगों के हृदय में प्रविष्ट करनेवाला।

२७. संयम, डर, ईश्वरपरायणता, धर्मपरायणता, कल्याण–**तक़्वा**–ईश्वर का भय, ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करना, अपने अन्तर को उस प्रत्येक वस्तु से सुरक्षित रखना, जो हमें ईश्वर के अतिरिक्त अन्य विषयों में व्यस्त रखे।

× × ×

१. ख्रीष्ट, मसीह–**मसीह,** ईसा का गुणगौरव-परक अभिधान। मंगल। वह मनुष्य, जिसकी असत्य की आँख मिटी हुई है। पदयात्रा में जीवन बितानेवाला। सच्ची बात बतानेवाला।

(ईसा और उसके पूर्व के प्रेषितों के नाम के साथ उन्हें ईश्वर शान्ति दे, ऐसा वाक्यांश कहने की रीति है।)

२. मुहम्मद–**मुहम्मद**–ईश्वर के प्रेषित का नाम। वह व्यक्ति, जिसमें विपुल सद्गुण, सद्वृत्ति एवं सदाचार मौजूद हों।

[मुहम्मद (पैगंबर) शब्द के साथ, उन पर ईश्वर का आशीर्वाद हो और ईश्वर की ओर से उन्हें शान्ति प्राप्त हो, ऐसा वाक्यांश कहने की रीति है।]

३. १. प्रावरणावगुंठित
२. चादर ओढ़नेवाला
प्रेषित मुहम्मद। यहाँ एक घटना की ओर इशारा है। जब हजरत मुहम्मद की वह़्य [प्रज्ञान] आयी, तब प्रारम्भ में वे डर-से गये, दूसरी और तीसरी बार वह़्य आयी, तब भी उनकी वैसी ही स्थिति रही। उन्हें उस समय सर्दी महसूस हूई, और उन्होंने कपड़ा ओढ़ लिया। इस प्रकार कुरूआन में दो बार 'कपड़ा ओढ़नेवाले'' ऐसा

उल्लेख आया है। उसके बाद मुहम्मद को संबोधित करते समय, प्रत्येक बार, प्रेषित [रसूल] या सन्देष्टा [नबी] शब्द ही प्रयुक्त हुआ है।

४. **यह्या**—एक मुहम्मद-पूर्व प्रेषित का नाम। 'कुर्‌आन-शरीफ' में उनके ब्रह्मचारी होने का आदरपूर्वक जिक्र किया गया है। इस शब्द का धात्वर्थ है, जीवित रहो, चिरंजीव रहो।
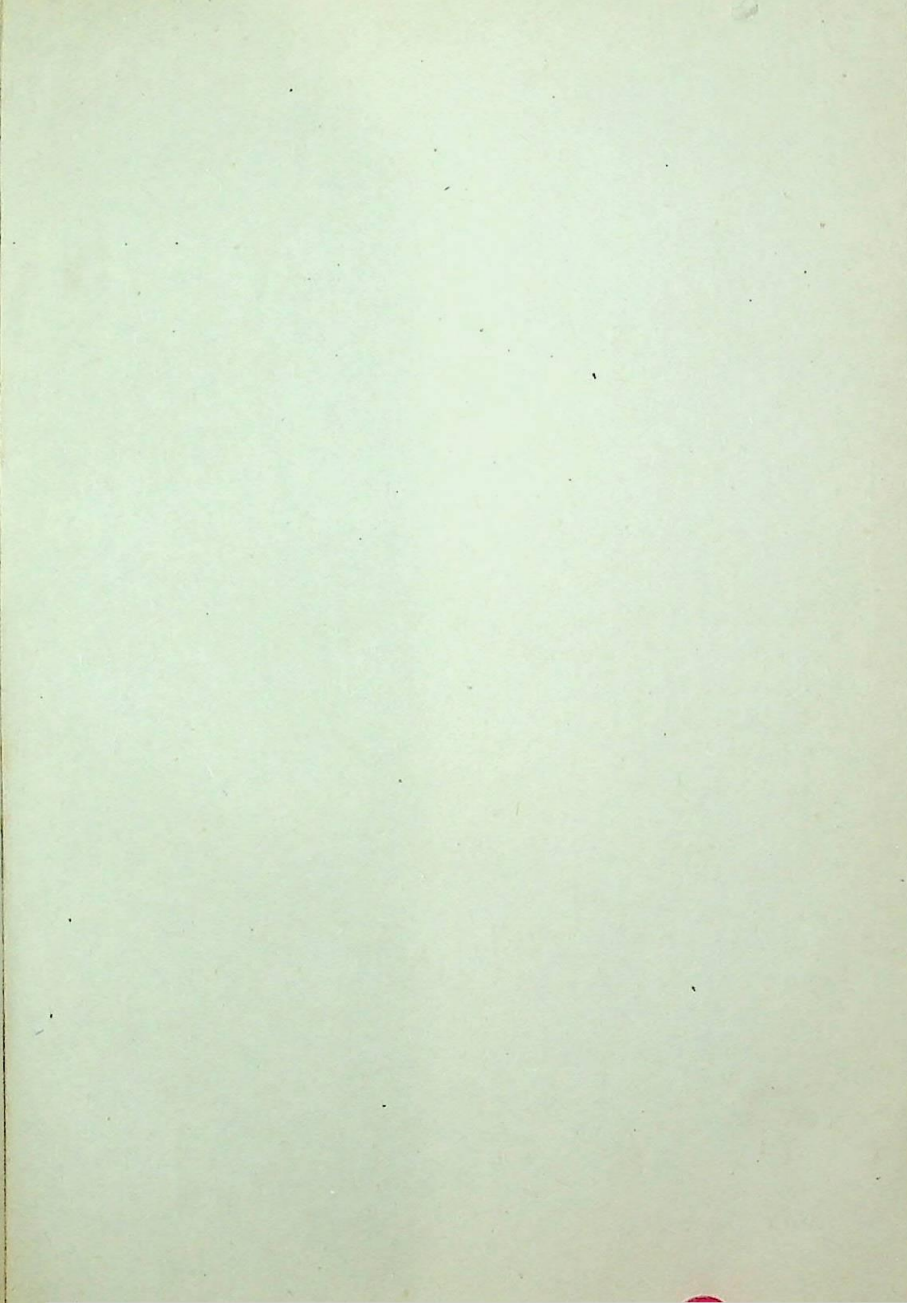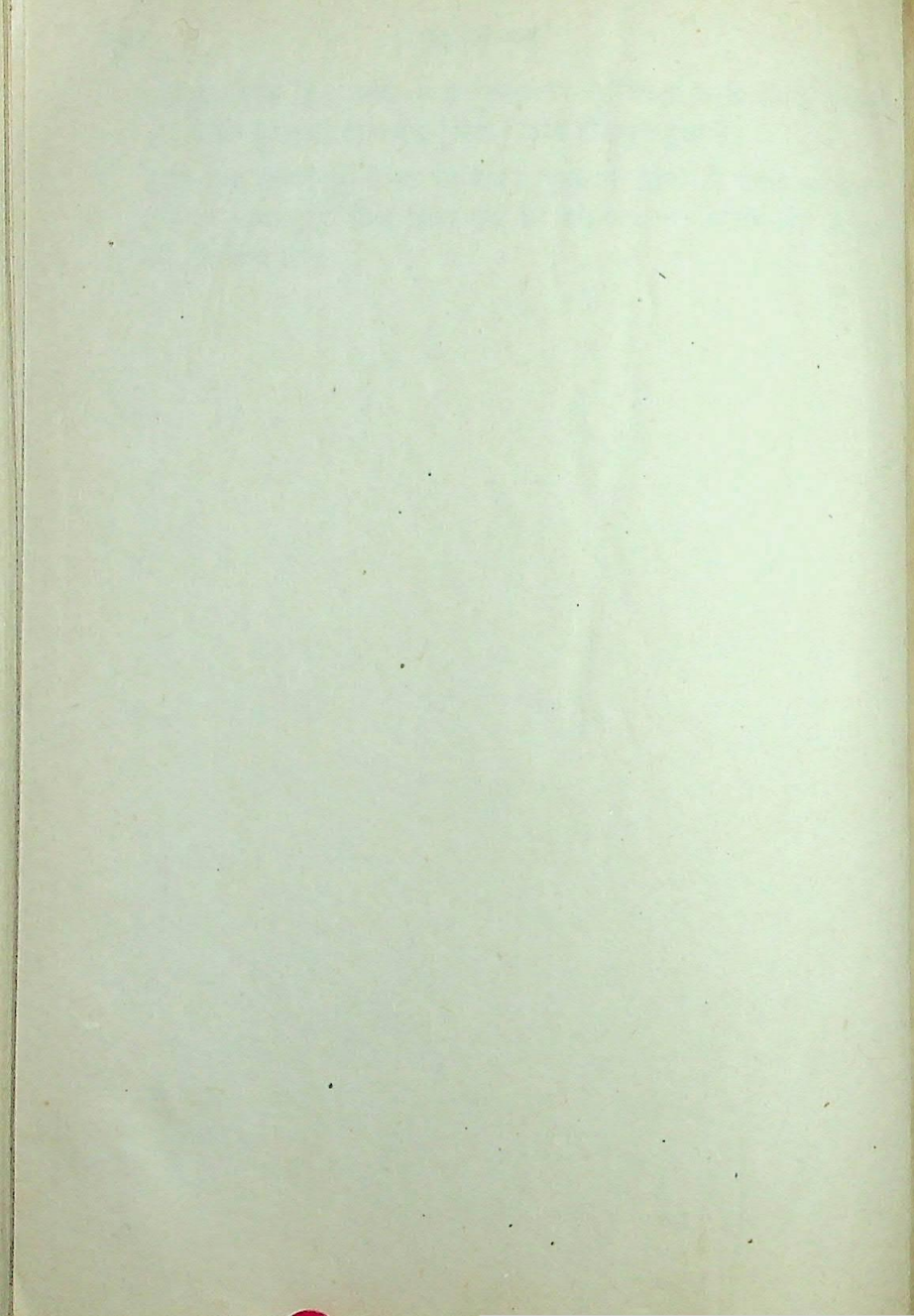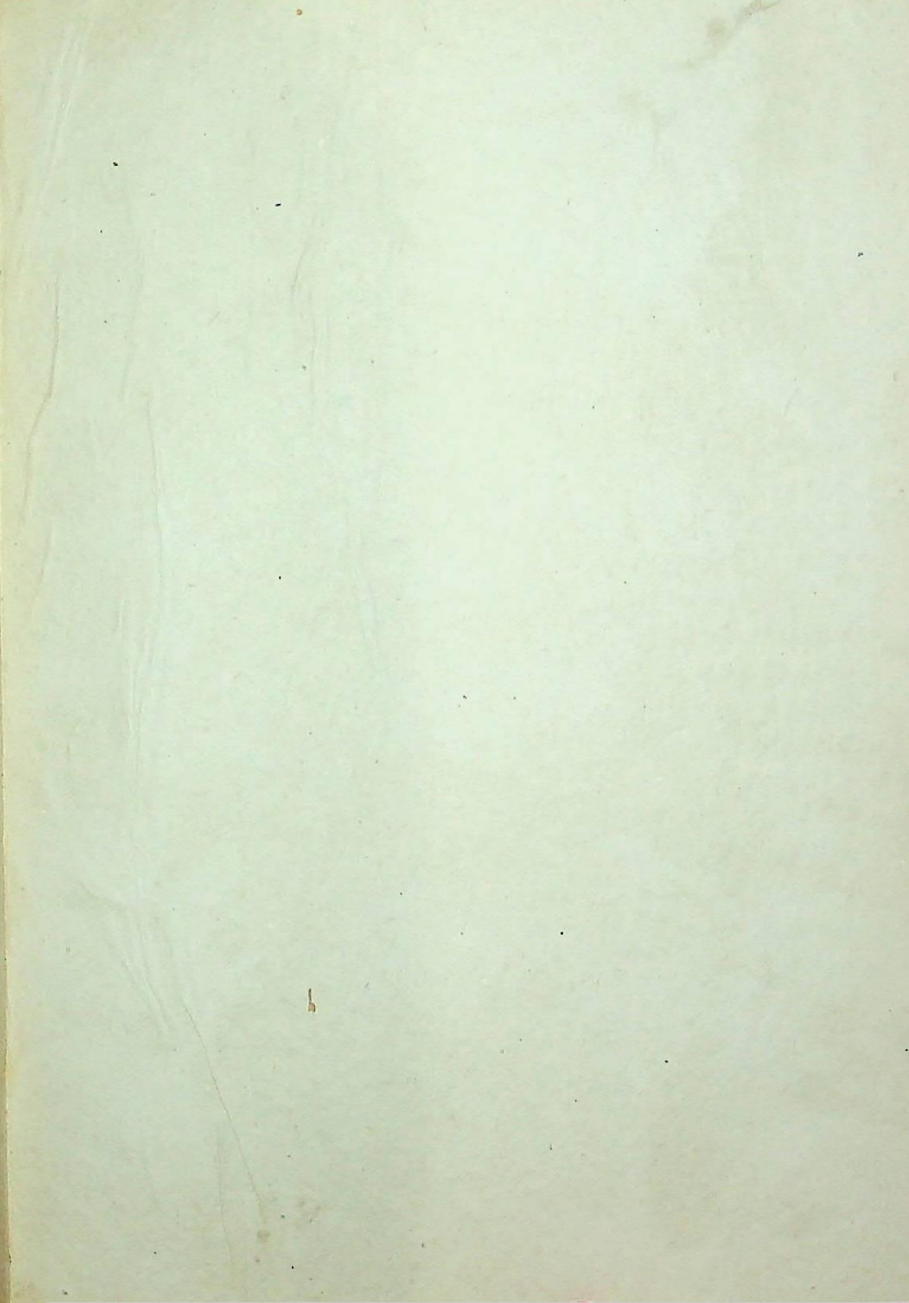
पू० विनोबाजी की अन्य कृतियाँ
• गीता प्रवचन
• जपुजी
• ख्रिस्तधर्म-सार
• धम्मपदं
• भागवत धर्म-सार (मीमांसासहित)
• अष्टादशी (उपनिषद् अनुवाद)
• महागुहा में प्रवेश
• गीताई चिन्तनिका
• स्थितप्रज्ञ दर्शन
• विज्ञान युग में धर्म
• साम्यसूत्र
• मनुशासनम्
• विनयांजलि
• राम नाम : एक चिन्तन
• शुचिता से आत्मदर्शन
• आत्मज्ञान और विज्ञान
• मधुकर
• सप्त शक्तियाँ
• समणसुत्तं (हिन्दी-अंग्रेजी)